केंद्रीय विद्यालय संगठन

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

अध्ययन सामग्री

विषय हिन्दी

कक्षा VIII

मार्गदर्शन

श्रीमती पिया ठाकुर

निदेशक

के वि सं आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान चंडीगढ़

विषय कलेवर संवर्धन पर प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक हिंदी हेतु कार्यशाला

Subject content enrichment workshop for TGT Hindi

09.07.2018 - 13.07.2018

आयोजन स्थल : के वि सं आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, सै. 33 सी चंडीगढ़

Venue : KVS Zonal Institute of Education & Training, Sec. 33 C , Chandigarh

आभारोक्ति / Acknowledgement

	श्री संतोष कुमार मल्ल (भा.प्र.से.) आयुक्त के वि सं नई दिल्ली SANTOSH KUMAR MALL (IAS) COMMISSIONER KVS NEW DELHI
	श्री यू एन खवारे अपर आयुक्त (शैक्षिक) केविसं नई दिल्ली SH. U N KHAWARE ADDITIONAL COMMISSIONER(ACAD.) KVS NEW DELHI
	डॉ० शचीकांत संयुक्त आयुक्त (कार्मिक) केविसं नई दिल्ली DR. E. PRABHAKAR JOINT COMMISSIONER (Personnel) KVS NEW DELHI
	डॉ.वी.विजयलक्ष्मी संयुक्त आयुक्त (प्रशासनिक) केविसं नई दिल्ली DR. V VIJAY LAXAMI JOINT COMMISSIONER (ADMINISTRATION) KVS NEW DELHI
	डॉ0 ई. प्रभाकर संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण) केविसं नई दिल्ली DR. E. PRABHAKAR JOINT COMMISSIONER (Training) KVS NEW DELHI
	श्री एस विजय कुमार संयुक्त आयुक्त (शैक्षिक) केविसं नई दिल्ली SHRI S. VIJAYA KUMAR JOINT COMMISSIONER (Academic) KVS NEW DELHI

निदेशक की कलम से

प्रिय शिक्षक वृन्द !

शिक्षण की प्रक्रिया को प्रभावशाली, रोचक और प्रासंगिक बनाने के लिए शिक्षण से पूर्व की गई तैयारी का सर्वाधिक महत्व होता है। केंद्रीय विद्यालय संगठन, आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चंडीगढ़ में इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु दिनांक 09.07.2018 से 13.07.2018 तक प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक हिंदी के लिए विषय वस्तु संवर्धन कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कक्षा छठी से लेकर कक्षा दसवीं के लिए हिंदी विषय सम्बंधी सहायक अध्ययन सामग्री तैयार की गई। इस सामग्री को हिंदी विषय की परीक्षा और भाषाई कौशलों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है। इसे इस प्रकार तैयार किया गया है कि विद्यार्थी और शिक्षक दोनों ही लाभान्वित हो सकें। भाषाई रूप से सक्षम विद्यार्थी जीवन में सफलता के सोपान तय करने में सक्षम होता है।

आशा करती हूँ कि यह सामग्री आपके लिए लाभकारी होगी। आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ!

पिया ठाकुर
निदेशक

विषय सूची

- आवरण
- आभारोक्ति
- निदेशक की कलम से
- प्रतिभागी सूची
- पाठ्यक्रम
- अपठित बोध
- पाठ्यपुस्तक
- पूरक पुस्तक
- व्याकरण एवं रचना
- प्रतिदर्श प्रश्नपत्र

कें वि सं , आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, सै. 33 सी, चंडीगढ़

विषय कलेवर संवर्धन पर

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक हिंदी हेतु पाँच दिवसीय कार्यशाला

09.07.2018 - 13.07.2018

क्र. सं	नाम	पदनाम	के वि	संभाग	संपर्क सूत्र	आवंटित कार्य / कक्षा
श्रीमती सुनीता गुसांई संयोजिका एवं संसाधिका		सह प्रशिक्षक हिंदी	के वि सं आं.शि.एवं प्र.सं	चंडीगढ़	9815731829	संयोजन, संपादन, प्रारुपण,
श्री पी डी गोयल संसाधक		प्र.स्नातक शिक्षक	क्र.1 चंडीमंदिर	गुरुग्राम	9501391205	विषय वस्तु संकलन एवं संपादन
1	श्रीमती संगीता भारद्वाज	प्र.स्नातक शिक्षक	सैक्टर-12 द्वारका	दिल्ली	9891401390	कक्षा VI
2	श्री अरुणाभ सौरभ	प्र.स्नातक शिक्षक	गोल मार्किट	दिल्ली	9871969360	
3	श्री करण धीरवान	प्र.स्नातक शिक्षक	खिचड़ीपुर	दिल्ली	9911042902 8130690277	
4	श्री जोगेन्द्र सिंह	प्र.स्नातक शिक्षक	पश्चिम विहार	दिल्ली	9717227415	
5	श्री श्याम गुप्ता	प्र.स्नातक शिक्षक	क्र. 2 दिल्ली छावनी	दिल्ली	9999367927	
6	श्री रवीन्द्र कुमार	प्र.स्नातक शिक्षक	सैक्टर-3 रोहिणी	दिल्ली	8901626547	
7	सुश्री सोनिया	प्र.स्नातक शिक्षक	शालीमार बाग (द्वितीय पाली)	दिल्ली	7290869635	
8	श्रीमती अनीता वासुदेव	प्र.स्नातक शिक्षक	क्र. 1आदमपुर	चंडीगढ़	9988776626	कक्षा VII
9	श्रीमती सुनीता देवी	प्र.स्नातक शिक्षक	क्र.3 अमृतसर	चंडीगढ़	9814535994	
10	श्रीमती नीरजा शर्मा	प्र.स्नातक शिक्षक	मोहाली	चंडीगढ़	9417490562	
11	श्रीमती अनीता पठानिया	प्र.स्नातक शिक्षक	क्र.1 पठानकोट	चंडीगढ़	9876543006	
12	श्रीमती सुरुचि शर्मा	प्र.स्नातक शिक्षक	क्र.1हलवारा	चंडीगढ़	9988713301	
13	श्रीमती मधु बाला	प्र.स्नातक शिक्षक	क्र.2 फिरोज़पुर	चंडीगढ़	8146707786	
14	श्री राकेश कुमार यादव	प्र.स्नातक शिक्षक	क्र1गुरुग्राम,पहली पाली	गुरुग्राम	18112277592	कक्षा X
15	सुश्री विपुल धीमान	प्र.स्नातक शिक्षक	भानु	गुरुग्राम	8529722315	
16	श्री विजय कुमार	प्र.स्नातक शिक्षक	क्र.4 अम्बाला	गुरुग्राम	9729741664	
17	श्री राजेश कुमार	प्र.स्नातक शिक्षक	क्र. 2 अंबाला छावनी	गुरुग्राम	9467117789	

कें वि सं , आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, सै. 33 सी, चंडीगढ़

विषय कलेवर संवर्धन पर प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक हिंदी हेतु पाँच दिवसीय कार्यशाला

09.07.2018 - 13.07.2018

प्रतिभागी सूची

क्र. सं	नाम	पदनाम	के वि	संभाग	संपर्क सूत्र	आवंटित कार्य / कक्षा
18	श्रीमती सपना यादव	प्र.स्नातक शिक्षक	हिसार सैन्य स्थल	गुरुग्राम	7891585313	कक्षा X
19	श्री अखिलेश कुमार वर्मा	प्र.स्नातक शिक्षक	सुबाथु	गुरुग्राम	9454945031	
20	श्री हनीफ़ खान	प्र.स्नातक शिक्षक	क्र.1अखनूर	जम्मू	9419222785 9797424725	कक्षा VIII
21	श्री अशोक कुमार मीणा	प्र.स्नातक शिक्षक	ज्योतिपुरम	जम्मू	8493947021	
22	श्री राजेश भट्ट	प्र.स्नातक शिक्षक	लेह	जम्मू	7579051551	
23	श्रीमती मीना कुमारी	प्र.स्नातक शिक्षक	सांबा	जम्मू	9419280020	
24	श्रीमती राजू मगोत्रा	प्र.स्नातक शिक्षक	सुंजुआं	जम्मू	9419206707	
26	श्रीमती पूजा	प्र.स्नातक शिक्षक	क्र.1 उधमपुर	जम्मू	9991360070	
27	श्री राम समुझ राम	प्र.स्नातक शिक्षक	न्यूटिहरी टाउन	देहरादून	8052092875	कक्षा IX
28	श्रीमती लीना रावत	प्र.स्नातक शिक्षक	बीरपुर	देहरादून	9410106355	
29	श्री शैलेष कुमार गुप्ता	प्र.स्नातक शिक्षक	ऋषिकेश	देहरादून	9451423472	
30	श्रीमती माधवी तिवारी	प्र.स्नातक शिक्षक	गोपेश्वर	देहरादून	7895414275	
31	सुश्री शिवा मिश्रा	प्र.स्नातक शिक्षक	मसूरी	देहरादून	8299377194	
32	श्रीमती रश्मि भटनागर	प्र.स्नातक शिक्षक	क्र.1 हाथी बड़कला	देहरादून	9761199986	
33	श्रीमती वीरबाला	प्र.स्नातक शिक्षक	एफ आर आई दे.दून	देहरादून	8630675019	

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
(For Summer Station Kendriya Vidyalayas)
SPLIT-UP SYLLABUS
SESSION 2018-19

कक्षा: आठवी एन.सी.ई.आर.टी पुस्तक : वसंत भाग - 3विषय: हिंदी
CLASS: VIII NCERT TEXT BOOK: VASANT –3SUBJECT:HINDI

क्रम.संख्या S.NO.	Name of the Examination	वसंत भाग-3 पाठ का नाम CHAPTER	TENTAIVRE NO.OF PERIODS REQUIRED	माह MONTH	Tentative Total no. of working days available
1 2 3 4 5 6	PART – I Periodic Test 1	ध्वनि लाख की चूड़िया अहमदनगर का किला तलाश पत्र लेखन अनुच्छेद लेखन	5 6 2 2 2 3	अप्रैल	23
7 8		बस की यात्रा अपठित बोध	6 3	मई /जून	10
9 10 11 12		दीवानों की हस्ती चिट्ठियों की अनूठी दुनिया भगवान के डाकिए सिन्धु घाटी की सभ्यता	4 6 5 4	जुलाई	25

13 14 15	PART – II Half Yearly Examination (Cumulative)	क्या निराश हुआ जाए युगों का दौर निबंध लेखन	6 6 3	अगस्त	24
16 17		यह सबसे कठिन समय नहीं कबीर की साखियाँ	4 6	सितम्बर	23

18 19	PART – III Periodic Test 2	कामचोर नयी समस्याएँ	5 5	अक्टूबर	**18**
20 21 22 23		जब सिनेमा ने बोलना सीखा सुदामा चरित जहाँ पहिया है अंतिम दौर –एक	5 5 5 4	नवम्बर	**22**
24 25 26 26		अकबरी लोटा सूर के पद अंतिम दौर- दो तनाव	5 5 4 2	दिसंबर	**18**

28 29	PART – IV Session Ending Examination (Cumulative)	पानी की कहानी बाज और साँप	6 6	जनवरी 2019	**22**
30 31		टोपी दो पृष्टभूमियाँ पुनरावृत्ति कार्य	8 5 9	फरवरी	**23**
32		वार्षिक परीक्षा		मार्च	**वार्षिक परीक्षा**

अपठित बोध

अपठित गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

निरक्षरता राष्ट्र, समाज, जाति एवं व्यक्ति के लिए कलंक है। निरक्षर व्यक्ति के पास न तो स्वतंत्र चेतना शक्ति होती है न ही परिमार्जित संस्कार। न उसमें उद्बोधन शक्ति उत्पन्न होती है और न ही जाग्रति। न वह देश और राष्ट्र के कल्याण के लिए सोच सकता है, न ही सामाजिक एवं जाति विकास के सम्बंध में सोच सकता है और न ही अपने सामाजिक, जातीय एवं व्यक्तिगत विकास हेतु कार्य कर सकता है। निरक्षर व्यक्ति अपने देश के प्राचीन साहित्य एवं इतिहास से ज्ञानार्जन, शिक्षा तथा प्रेरणा ग्रहण नहीं कर सकता। शिक्षा के अभाव में व्यक्ति अपनी संस्कृति के उच्च जीवन मूल्यों का अनुकरण करने में असफल रहता है। वह सदा अंधविश्वासों, जादू-टोनों, कुरीतियों, कुसंस्कारों के जाल में फसा रह कर देश और समाज पर बोझ बन जाता है। वह न शिष्ट मित्र बन सकता है, न ही अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकता है। निरक्षरता के कारण देश को अच्छे नागरिक नहीं मिल पाते।

(क) गद्यांश में किसे कलंक माना गया है ?

(ख) निरक्षर व्यक्ति को बोझ क्यों माना गया है ?

(ग) निरक्षर व्यक्ति कौनसे कार्य नहीं कर सकता ?

(घ) देश को अच्छे नागरिक कैसे मिल सकते हैं?

(ङ) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए ।

उत्तरमाला---

1 निरक्षरता को
2 क्योंकि निरक्षर व्यक्ति के पास न तो स्वतंत्र चेतना शक्ति होती है न ही परिमार्जित संस्कार न वो देश और राष्ट्र के लिए कुछ सोच सकता है
3 निरक्षर व्यक्ति अपने देश के प्राचीन साहित्य एवं इतिहास से ज्ञानार्जन, शिक्षा तथा प्रेरणा ग्रहण नहीं कर सकता न ही अपनी संस्कृति का अनुकरण कर सकता है
4 शिक्षा के प्रचार प्रसार से
5 शिक्षा का महत्त्व

1. डॉ. कलाम दृढ़ इच्छाशक्ति वाले वैज्ञानिक थे। वे भारत को विकसित देश बनाने का सपना संजोए हुए थे। उनका मानना था कि भारतवासियों को व्यापक दृष्टि से सोचना चाहिए। हमें सपने देखने चाहिए। सपनों को विचारों में बदलना चाहिए। विचारों को कार्यवाही के माध्यम से हकीकत में बदलना चाहिए। डॉ. कलाम तीसरे ऐसे वैज्ञानिक हैं, जिन्हें भारत का सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' दिया गया। उन्हें 'पद्मभूषम' तथा 'पद्मविभूष्ण' से भी सम्मानित किया गया। भारत को उन पर गर्व है। इतनी उपलब्धियाँ प्राप्त करने के बावजूद अहंकार कलाम जी को छू तक नहीं पाया। वे सहज स्वभाव के एक भावुक व्यक्ति थे। उन्हें कविताएँ लिखना, वीणा

बजाना तथा बच्चों के साथ रहना पसंद था। वे सादा जीवन उच्च विचार में विश्वास रखते थे। कलाम साहब का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणादायक है। कलाम जी तपस्या और कर्म ठता की प्रतिमूर्ति हैं। राष्ट्रपति पड़ की शपथ लेते समय दिए गए भाषण में उन्होंने कबीरदास जी के इस दोहे का उल्लेख किया था – 'काल करे सो आज कर, आज करे सो अब'।

I. डॉ.कलाम ने भारत को क्या बनाने का सपना देखा है?
II. डॉ. कलाम किस प्रवृत्ति के व्यक्ति थे?
III. डॉ. कलाम को क्या – क्या बेहद पसंद था?
IV. डॉ. कलाम को किन-किन सम्मानों से सम्मानित किया गया?
V. डॉ. कलाम की तरह आप भारत को आगे बढ़ाने के लिए क्या प्रयास करेंगे।

2. दिन में मैं चादर लपेटे सोया था। दादी माँ आईं, शायद नहाकर आई थीं, उसी झागवाले जल में। पतले-दुबले स्नेह-सने शरीर पर सफ़ेद किनारीहीन धोती, सन-से सफ़ेद बालों के सिरों पर सद्यः टपके हुए जल की शीतलता। आते ही उन्होंने सर, पेट छुए। आँचल की गाँठ खोल किसी अदृश्य शक्तिधारी के चबूतरे की मिट्टी मुँह में डाली, माथे पर लगाई। दिन-रात चारपाई के पास बैठी रहतीं, कभी पंखा झलतीं, कभी जलते हुए हाथ-पैर कपड़े से सहलातीं, सर पर दालचीनी का लेप करतीं और बीसों बार छू-छूकर ज्वर का अनुमान करतीं। हाँडी में पानी आया कि नहीं? उसे पीपल की छाल से छौंका कि नहीं? खिचड़ी में मूंग की दाल एकदम मिल तो गई है? कोई बीमार के घर में सीधे बाहर से आकर तो नहीं चला गया, आदि लाखों प्रश्न पूछ-पूछकर घरवालों को परेशान कर देतीं।

- 1. दादी माँ कहाँ से आई थी ?
- 2. दादी के बालों का रंग कैसा था ?
- 3. दादी ने सर, पेट क्यों छुए ?
- 4. दादी बुखार (ज्वर) को उतारने के लिए क्या – क्या उपाए करती थी ?
- 5. दादी घरवाले को कैसे प्रश्न पूछकर परेशान कर देती थी ?

3. अवतरण को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

हड्डियों के बीच के भाग मज्जा में ऐसे बहुत से कारखाने होते हैं जो रक्त कणों के निर्माण-कार्य में लगे रहते हैं। इनके लिए इन कारखानों को प्रोटीन, लौहतत्त्व और विटामिन रूपी कच्चे माल की जरूरत होती है। यह पौष्टिक आहार लेते हो? हरी सब्जी, फल, दूध, अंडा और गोश्त में ये तत्त्व उपयुक्त मात्र में होते हैं। यदि कोई व्यक्ति उचित आहार ग्रहण नहीं करता तो इन कारखानों को आवश्यकतानुसार कच्चा माल नहीं मिल पाता। प्रायः यह समझा जाता है कि रक्तदान करने से कमजोरी हो जाएगी, कितु यह विचार बिलकुल निराधार है। हमारा शरीर इतना रक्त तो कुछ ही दिनों में बना लेता है। वैसे भी शरीर में लगभग पाँच लीटर खून होता है। इसमें से यदि कुछ रक्त किसी जरूरतमंद व्यक्ति के लिए जीवन-दान बन जाए तो इससे बड़ी बात क्या होगी!य् दीदी समझाते हुए बोलीं।

I. रक्त कणों की रचना कहाँ होती है ?

II. लेखक और पाठ का नाम बताइये ?

III. रक्त निर्माण के लिए किस कच्चे माल की आवश्यकता होती है ?

IV. रक्त के लिए कच्चा माल न मिलने पर क्या होता है ?

V. रक्तदान करने के बाद रक्त की कमी किस प्रकार पूरी हो जाती है ?

4. अवतरण को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

संतुलित आहार लेने मात्र से हम एनीमिया से बचे रह सकते हैं, यह कहना काफ़ी हद तक सही है। यों तो एनीमिया बहुत से कारणों से हो सकता है, किन्तु हमारे देश इसका सबसे बड़ा कारण पौष्टिक आहार की कमी है। इसके अलावा इस रोग का एक और बड़ा कारण है पेट में कीड़ों का हो जाना। ये कीड़े प्रायः दूषित जल और खाद्य पदार्थों द्वारा हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं। अतः इससे बचने के लिए यह आवश्यक है कि हम पूरी सफाई से बनाए गए खाद्य पदार्थ को ग्रहण करें। भोजन करने से पूर्व अच्छी तरह से हाथ धो लें और साफ़ पानी ही पिएँ। और हाँ, एक किस्म के कीड़े भी हैं, जिनके अंडे ज़मीन की ऊपरी सतह में पाए जाते हैं। इन अण्डों से उत्पन्न हुए लार्वे त्वचा के रास्ते शरीर में प्रवेश कर आँतों में अपना घर बना लेते हैं। इनसे बचने का सहज उपाय है कि शौच के लिए हम शौचालय का ही प्रयोग करें और इधर-उधर नंगे पैर न घूमें।

- 1. भारतवर्ष में एनीमिया का मुख्य कारण क्या है ?
- 2. पेट में कीड़ों के होने के कारण क्या कारण हैं ?
- 3. नंगे पैर घूमने से क्या होता है ?
- 4. एनीमिया से बचने के चार उपाए लिखिए।

5. निम्नलिखित गद्यांश को पढकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

समय का आदर करना ही उसका सदुपयोग करना है। जो व्यक्ति समय की सही कीमत जान लेता है, वही जीवन में सफलता प्राप्त कर पाता है। यह धन से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। धन खोने पर वापस पाया जा सकता है परंतु बिता हुआ समय नहीं लौटाया जा सकता। छात्रों के जीवन में इसका अधिक महत्त्व है। जो छात्र इस उम्र में समय की कद्र करना सीख जाते हैं, वह भविष्य में तरक्की की ऊंचाईयों को छू लेते हैं। चाणक्य, गाँधी जी, अशोक आदि ने समय का सदुपयोग क्र अपने पैरों के निशान छोड़ दिए। जीवन का प्रत्येक क्षण भविष्य का निर्माता है। जो लोग इसके महत्त्व को नहीं समझ पाते, वे केवल हाथ मलते रह जाते हैं। हम चाहे विश्राम कर लें परंतु समय कभी विश्राम नहीं करता। समय के प्रति सजगता मानव जीवन के लिए उपयोगी है। अतः छात्रों को समय की कीमत पहचानकर इसका सार्थक उपयोग करना चाहिए।

(क) 'समय का सदुपयोग' का क्या अर्थ है?

(ख) छात्रों के लिए समय का सदुपयोग अधिक आवश्यक क्यों है? (मूल्यपरक प्रश्न)

(ग) समय धन से अधिक महत्त्वपूर्ण क्यों है?

(घ) गद्यांश में से मुहावरा ढूँढ़कर लिखिए।

(ङ) इस अनुच्छेद का कोई उपयुक्त शीर्षक दीजिए

6. निम्नलिखित गद्यांश को पढकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

दुनिया की हर एक चीज हमे शिक्षा देती है। एक दिन में धुप में घूम रहा था। चारो तरफ बड़े-बड़े हरे वृक्ष दिखाई देते थे। मैं सोचने लगा की ऊपर से इतनी कड़ी धुप पड़ रही है फिर भी ये वृक्ष हरे कैसे हैं? वे वृक्ष मेरे गुरु बन गए। मेरी समझ में आ गया की जो वृक्ष ऊपर से इतने हरे भरे दिखते हैं, उनकी जड़े जमीन में गहरी पहुंची है और वहाँ से उन्हें पानी मिल रहा है। इस प्रकार अंदर से पानी और ऊपर से धुप, दोनों की कृपा से यह सुंदर हरा रंग उन्हें मिला है। इसी तरह हमे भी अंदर से इच्छा शक्ति का पानी और बाहर से परिश्रम और बाधाओं की कड़ी धुप मिलती है तभी हम सफल हो सकते हैं।

(क) वृक्ष गुरु कैसे बन गए?

(ख) वृक्षों के हरे होने का लेखक को क्या कारण समझ आया?

(ग) जीवन में सफलता के लिए हमे अंदर से किसके रूप में पानी मिलता है?

(घ) आप अपने जीवन को हरा- भरा अर्थात सफल बनाने के लिए क्या करेंगे? (मूल्यपरक प्रश्न)

7. निम्नलिखित गद्यांश को पढकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

परिश्रम ऐसी साधना है जिसके द्वारा मनुष्य महान कार्य कर सकता है। परिश्रमी मनुष्य संसार में क्या नहीं कर सकता? वह पर्वत की चोटियों पर चढ़ सकता है, दुरूह- से दुरूह रेगिस्तानों को पार कर सकता है, कठिनाइयों को झेल सकता है और कठिन से कठिन परिस्थितियों में संघर्ष करके उन्हें अपने जीवन के अनुरूप बना सकता है। जिस व्यक्ति में परिश्रम का गुण है, जिसमें पुरुषार्थ की प्रवित्ति है, वह अपने जीवन में कदापि दुःख और निराशा आँधियों से भयभीत नहीं होता। व्यक्ति के जीवन के साथ पारिवारिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन में भी परिश्रम का महत्व है। परिश्रम के बिना व्यक्ति समाज तथा राष्ट्र का जीवन खोखला ही रह जाता है। परिश्रम से जीवन में गतिशीलता आती है। यह गतिशीलता ही जीवन का वास्तविक चिन्ह होती है। निश्चेष्ट जीवन व्यतीत करने वालों की असफलता और अपयश के अलावा कुछ भी प्राप्त नहीं होता। गति के अभाव में जीवन की स्तिथि घाट के पत्थर जैसी होती है। जबकि मनुष्य के जीवन में पग-पग पर बाधाएं अपना जाल बिछा बैठी होती है। उसी समय यदि मनुष्य परिश्रम न करे तो वह कभी भी आगे नहीं बढ़ सकेगा।

1. उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

प्रश्न (क) परिश्रम के बिना क्या खोखला रह जाता है?

प्रश्न (ख) निश्चेष्ट जीवन व्यतीत करने वालों को क्या प्राप्त नहीं होता?

प्रश्न (ग) जीवन का वास्तविक चिन्ह क्या है?

प्रश्न (घ) जीवन में सफलता के लिए हमे अंदर से किसके रूप में पानी मिलता है?

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो।

(क) लेखक ने परिश्रम को क्या माना है?

(ख) 'मृत्यु'तथा 'यश' शब्दों के विलोम शब्द गद्यांश से छांटकर लिखिए।

(ग) यदि मनुष्य परिश्रम न करे तो क्या होगा?

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो।

(क) एक छात्र के जीवन में परिश्रम का बहुत महत्व होता है? बताइए कैसे? (मूल्यपरक प्रश्न)

(ख) पुरुषार्थ की प्रवृत्ति वाला मनुष्य क्या कर सकता है?

8. निम्नलिखित गद्यांश को पढ कर पश्नों के उत्तर दें।

भारत पर्वो का देश है। यहाँ वर्ष भर में अनेक धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पर्व मनाए जाते हैं। इन पर्वो में रक्षा बंधन एक पवित्र और प्रसिद्ध पर्व है। यह त्योहार श्रवण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है, इसलिए इसे श्रावणी या सलूनो भी कहा जाता है। इस दिन बहनें अपने भाइयों को रक्षासूत्र में बाँधती हैं, भाई भी उनके स्नेह का प्रतीक राखी को स्वीकार करके आजीवन उनके सम्मान की रक्षा करने का वचन देता है, इसलिए यह त्योहार रक्षा बंधन के नाम से प्रसिद्ध है।

रक्षा बंधन केवल भाई-बहन के प्रेम का ही प्रतीक पर्व नहीं है अपितु ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी यह पर्व महत्त्वपूर्ण है। वास्तव में भाई को राखी बाँधने की यह प्रथा राजस्थान से शुरू हुई थी। यदि किसी औरत पर कोई मुसीबत आती थी तो वह किसी वीर पुरुष को अपना भाई कहकर राखी भेज दिया करती थी। राखी का अर्थ था बहन की रक्षा का भार उठाना।

इतिहास में भी कई ऐसे उदाहरण हैं जब संकट में घिरी स्त्री ने किसी वीर को राखी भेज कर अपना भाई बनाया और रक्षा की प्रार्थना की। कहते है एक बार रानी कर्णवती ने बादशाह हुमायूँ को इसी उद्देश्य से राखी भेजी थी। वह मुसलमान था फिर भी अपनी मुँह बहन का न्योता पाकर बहन की रक्षा के लिए चल पड़ा था। राखी एक पावन-पर्व है। इस दिन घरों में मीठे भोजन और पकवान बनाए जाते हैं इससे हमें स्नेह, बंधुत्व व एकता की प्रेरणा मिलती है। यह त्योहार बहन भाइयों के रिश्ते को मजबूत करता है। यह एक-दूसरे के प्रति प्यार, विश्वास,

आशा, बलिदान को जागृत करता है। ऐसी भावनाओं को जागृत करता है कि बहन अपने भाइ के लिए सदा मंगल कामना करती है व भाई बहन के लिए रक्षा के वायदे करता है। भाई-बहन का पवित्र प्रेम रक्षा बंधन का आधार है। अतः हमें बिना किसी स्वार्थ के स्नेह भावना के साथ रक्षा बंधन का पर्व मनाना चाहिए।

(1) राखी या रक्षा बंधन का दूसरा नाम क्या है?

(2) हिंदी कैलेंडर के हिसाब से राखी का पर्व किस मास में मनाया जाता है?

(3) भाई को राखी बाँधने की यह प्रथा कहाँ से शुरू हुई थी?

(4) राखी के पावन पर्व पर घरों में क्या बनाया जाता है?

(5) राखी के पावन पर्व से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

(6) आधुनिक अर्थ प्रधान तथा स्वार्थपूर्ण युग में रक्षा बंधन जैसा पावन पर्व अपनी सांस्कृतिक भावना खोता जा रहा है – इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

अपठित पद्यांश

पद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

सागर के उर पर नाच नाच करती हैं लहरें मधुर गान
जगती के मन को खींच-खींच
निज छवि के रस सींच-सींच
जल कन्याएँ भोली अजान,
सागर के उर पर नाच-नाच करती हैं लहरें मधुरगान
प्रातः समीर से हो अधीर,
छूकर पल-पल उल्लसित तीर,
कुसुमावली-सी पुलकित महान,
सागर के उर पर नाच नाच, करती है लहरें मधुर गान
संध्या से पाकर रूचिर रंग
करती-सी शत सुर चाप भंग
हिलती नव तरु–दल के समान,
सागर के उर पर नाच नाच करती है लहरें मधुर गान,

क. लहरें कैसी लग रही है?
ख लहरें किस प्रकार लोगों का मन अपनी ओर खींच रही हैं?
ग लहरें अधीर होकर क्या काम करती हैं ?
घ 'कुसुमावलि' शब्द का संधि विच्छेद करें ।

ड़. लहरें किसके समान हिल रही हैं ?

उत्तरमाला

1 जल कन्याओं जैसी

2 नाच और गा कर

3 कुसुमावली सी पुलकित हो जाती हैं

4 कुसुम+अवली

5 तरु दल के समान

अभ्यास

1. काव्य पंक्तियों को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।
हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरी
कनक-कटोरी की मैदा से।
स्वर्ण- शृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।
ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने।
होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।
नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

I. कवि का नाम लिखिए।

II. कविता का नाम लिखिए।

III. पिजरबद्ध का क्या अर्थ है ?

IV. पक्षी को अपने जीवन के लिए किस प्रकार का जल पीना अच्छा लगता है ?

V. 'स्वर्ण श्रंखला' के बंधन में पक्षी क्या भूल जाता है ?

VI. पक्षी सपनों में क्या देख रहा है ?

VII. पक्षी के क्या अरमान थे ?

VIII. पक्षी अपनी चोंच से क्या चुगना चाहता है ?

IX. पक्षी उड़ते-उड़ते क्या छू लेना चाहता है ?

X. पक्षी ने क्या इच्छा प्रकट की है ?

2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: –

चारों ओर गंदगी फैली,
कूड़े-करकट का लगा अंबार।
यह तो है बाहरी गंदगी,
कर लो तुम इसका उपचार।
मंत्र स्वच्छता का अपनाओ,
स्वस्थ, सबल जीवन का दान।
दूर करो गंदगी, बच्चों,
करो देश-भर का कल्याण।।
दूर गंदगी होने से,
खुशियों का संसार बसेगा।
बस्ती अपनी सुंदर होगी,
वायु, देह, मन शुद्ध होगा।।
आओ करें मिलकर ये प्रण,
बनाएँ धरा को स्वर्ग से भी सुंदर।
सभी पशु पक्षी और प्राणी रहें सुरक्षित,
ऐसा प्रयास करें, हम मिलजुलकर।।

I. बाहरी गंदगी किसे कहा गया है?

II. कवि ने कौन सा मंत्र अपनाने को कहा है?

III. कवि के अनुसार हमें क्या प्रण लेना चाहिए और उससे क्या लाभ होंगे?

IV. गंदगी दूर होने से क्या लाभ होंगे? हमें अपने शहर और देश को साफ सुथरा रखने के लिए क्या कदम

a. उठाने चाहिए?

V. 'स्वच्छता' विषय पर अपनी राय लिखिए।

3. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: –

धरती के आँचल में सजी
सँवरी हैं स्वर्ण रश्मियाँ,
खेतों में आज बिखरा है सोना
जिसे देख कर महका
कृषक मन का कोना-कोना।
किया धरती का सोलह-सिंगार
चमचमाते नयन बार-बार,
धानी चुनर में मोती सजे हैं
ढोल, ताशे और बाजे बजे हैं
दिल की वीणा के झंकृत हैं तार
झूमें-गाएँ सबके मन बार-बार।
हुए आँखों में सब सपने साकार
फिर से जागी हैं उम्मीदें हजार।

I. खेतों में क्या बिखरा हुआ है?

II. किसान के नयन क्यों चमचमाते हैं?

III. सबके मन क्यों झूम और गा रहे हैं?

IV. इस बार बेमौसम की बरसात ने फसलों का बहुत नुकसान किया है, आप इस बारे में क्या सोचते हैं? क्या हम इसके लिए कुछ कर सकते हैं?

1 ध्वनि कविता

कवि- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

कवि का मानना है कि उसके जीवन रूपी उपवन में अभी- अभी वसंत का आगमन हुआ है । अभी उसके जीवन का अंत नहीं हो सकता । उसके जीवन में आने वाला वसंत सुकुमार है। जिस प्रकार वसंत के आगमन से प्रकृति हरी-भरी हो उठती, कलियाँ खिलकर पुष्प बन जाती हैं, प्रकृति में मृदुलता एवं कोमलता छा जाती है , उसी तरह उसके जीवन में भी खुशियाँ भर गई हैं। कवि प्रभात काल में अलसाई कलियों पर अपना कोमल कर फेरकर उन्हें प्रात :काल का संदेश देना चाहता है। स्वयं कवि अच्छे काम करते हुए देश के युवाओं को रचनात्मक कार्यों की ओर उन्मुख करना चाहता है।

काव्य पंक्तियों को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

अभी न होगा मेरा अंत
अभी. अभी ही तो आया है
मेरे वन में मृदुल वसंत.
अभी न होगा मेरा अंत ।
हरे- हरे ये पात
डालियाँ कलियाँ कोमल गात ।
मैं ही अपना स्वप्न मृदल-कर
फेरुँगा निद्रित कलियों पर
जगा एक प्रत्युष मनोहर ।

1 कवि और कविता का नाम लिखिए।

उत्तर- कवि का नाम सूर्यकांत त्रिपाठी निराला , कविता का नाम 'ध्वनि'

2 'अभी न होगा मेरा अंत' कवि ने ऐसा क्यों कहा है ?

उत्तर- कवि ने ऐसा इसलिए कहा होगा, क्योंकि उसके जीवन में अभी-अभी वसंत का आगमन हुआ है जिससे उसका जीवन खुशियों से भर गया है। वह उत्साह से भरा हुआ है।

3 वसंत के आने पर पेड़ों में क्या परिवर्तन हो जाता है ?

उत्तर- वसंत के आने पर पेड़ों पर हरे-हरे पत्ते आ जाते हैं। नई-नई डालियाँ निकल आती हैं जिन पर कोमल कलियाँ आ जाती हैं। नये पत्ते और कलियों से पेड़ में कोमलता आ जाती है ।

4 कवि कलियों को किसका संदेश देना चाहता है ?

उत्तर- कवि कलियों को मनोहर प्रभात का संदेश देना चाहता है ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

1 कवि को ऐसा विश्वास क्यों है कि उसका अंत अभी नहीं होगा ?

उत्तर- क्योंकि कवि जीवन के प्रति निराश नहीं है । कवि उत्साह और ऊर्जा से भरा हुआ है । उसके उपवन में अभी. अभी संत का आगमन हुआ है । उसे युवकों को उत्साहित करने जैसे अनेक कार्य करने है और स्वयं की रचनाओं व कार्यों की खुशबू चारों ओर फैलानी है ।

2 फूलों को अनंत तक विकसित करने के लिए कवि क्या प्रयास करता है ?

उत्तर- फूलों का आलस्य छीन लेना चहाता है । उन को अनंत समय तक खिले रहने के लिए प्रेरित करता है तथा उनकी आँखों की बोझीलता दूर करना चाहता है ।

3 वसंत को ऋतुराज क्यों कहा जाता है ?

उत्तर- वसंत ऋतु में न तो ज्यादा गर्मी होती है और न ही ज्यादा सर्दी । वसंत ऋतु में सर्दी और गर्मी समान होने पर भी मौसम बहुत सुहावना होता है। चारों तरफ हरियाली होने से मदमाती कोयल का गानएतन मन को महकती हवा तथा पूरे योवन का जोश प्रकृति की महका देता है। यह ऋतु मनुष्य , पशु व जीवों के लिए वरदान होती है और सबको प्रसन्न करती है इसलिए इसे ऋतुराज कहा जाता है।

अतिरिक्त प्रश्न

1.पुनरुक्त शब्द छाँटकर लिखिए

उत्तर- अभी-अभी, हरे-हरे, पुष्प-पुष्प आदि ।

2.वन किसका प्रतीक है ?

उत्तर- कवि के जीवन, उपवन का ।

3.निद्रित कलियाँ किसका प्रतीक हैं ?

उत्तर- आलस में डूबे हुए नवयुवकों का ।

4.इस कविता का क्या संदेश है ?

उत्तर- वसंत ऋतु की भांति रचनात्मक कार्यों को करने का ।

5. ध्वनि का क्या अर्थ है ?

उत्तर- आवाज़ , यहाँ कवि के अन्तर्मन की आवाज़ ।

2. फूलों को अनंत तक विकसित करने के लिए कवि कौन-कौन-सा प्रयास करता है?

उत्तर:- फूलों को अनंत तक विकसित करने के लिए कवि उन्हें कलियों की स्थिति से निकालकर खिले फूल बनाना चाहता है। कवि का मानना है कि उसके जीवन में वसंत आया हुआ है। इसलिए वह कलियों को हाथों के वासंती स्पर्श से खिला देगा। वह फूलों की आँखों से आलस्य हटाकर उन्हें चुस्त व जागरूक करना चाहता है।

3. कवि पुष्पों की तंद्रा और आलस्य दूर हटाने के लिए क्या करना चाहता है?

उत्तर:- कवि पुष्पों की तंद्रा और आलस्य दूर हटाने के लिए उन पर अपना हाथ फेरकर उन्हें जगाना चाहता है। वह उनको चुस्त, प्राणवान, आभावान व पुष्पित करना चाहता है।

अतः कवि नींद में पड़े युवकों को प्रेरित करके उनमें नए उत्कर्ष के स्वप्न जगह देगा , उनका आलस्य दूर भगा देगा तथा उनमें नये उत्साह का संचार करना चाहता है।

4. वसंत को ऋतुराज क्यों कहा जाता है? आपस में चर्चा कीजिए।

उत्तर:- वसंत को ऋतुराज कहा जाता है क्योंकि यह सभी ऋतुओं का राजा है। इस ऋतु में प्रकृति पूरे यौवन होती है। इस ऋतु के आने पर सर्दी कम हो जाती है। मौसम सुहावना हो जाता है। इस समय पंचतत्व अपना प्रकोप छोड़कर सुहावने रूप में प्रकट होते हैं। पंचतत्व जल , वायु, धरती, आकाश और अग्नि सभी अपना मोहक रूप दिखाते हैं। पेड़ों में नए पत्ते आने लगते हैं। आम बौरों से लद जाते हैं और खेत सरसों के फूलों से भरे पीले दिखाई देते हैं। सरसों के पीले फूल ऋतुराज के आगमन की घोषणा करते हैं। खेतों में फूली हुई सरसों ,पवन के झोंकों से हिलती, ऐसी दिखाई देती है, मानो, सामने सोने का सागर लहरा रहा हो। कोयल पंचम स्वर में गाती है और सभी को कुहू- कुहू की आवाज़ से मंत्रमुग्ध करती है। इस ऋतु में उसकी छठा देखते ही बनती है। इस ऋतु में कई प्रमुख त्यौहार मनाए जाते हैं, जैसे - वसंत पंचमी, महा शिवरात्रि, होली आदि।

5. वसंत ऋतु में आनेवाले त्योहारों के विषय में जानकारी एकत्र कीजिए और किसी एक त्योहार पर निबंध लिखिए।

उत्तर:- वसंत ऋतु में कई त्यौहार मनाए जाते है, जैसे - वसंत-पंचमी, महा शिवरात्रि, होली आदि।

होली

हमारा देश भारत विश्व का अकेला एवं ऐसा अनूठा देश है , जहँ पूरे साल कोई न कोई त्योहार मनाया जाता है। रंगों का त्योहार होली हिंदुओं का प्रसिद्ध त्योहार है , जो फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।

यह त्योहार रंग एवं उमंग का अनुपम त्योहार है जब वसंत अपने पूरे यौवन पर होता है। सर्दी को विदा देने और ग्रीष्म का स्वागत करने के लिए इसे मनाया जाता है। संस्कृत साहित्य में इस त्योहार को 'मदनोत्सव' के नाम से भी पुकारा जाता है।

होली के संबंध में एक पौराणिक कथा प्रचलित है कि भगवान विष्णु के परम भक्त प्रहलाद को अग्नि में जलाने के प्रयास में उसकी बुआ 'होलिका' अग्नि में जलकर स्वाहा हो गई थी। इसी घटना को याद कर प्रतिवर्ष होलिका दहन किया जाता है। दूसरे दिन फाग खेला जाता है। इस दिन छोटे- बड़े, अमीर-गरीब आदि का भेदभाव मिट जाता है। सब एक दूसरे पर रंग फेंकते हैं , गुलाल लगाते हैं और गले मिलते हैं। चारों ओर आनंद , मस्ती और उल्लास का समाँ बँध जाता है। ढोल पर थिरकते , मजीरों की ताल पर झूमते , नाचते-गाते लोग आपसी भेदभाव भुलाकर अपने शत्रु को भी गले लगा लेते हैं। परन्तु कुछ लोग अशोभनीय व्यवहार कर इस त्योहार की पवित्रता को नष्ट कर देते हैं।

हमारा कर्तव्य है कि हम होली का त्योहार उसके आदर्शों के अनुरू प मनाएँ तथा आपसी वैमनस्य , वैर-भाव, घृणा आदि को जलाकर एक-दूसरे पर गुलाल लगाकर आपस में प्रेम,एकता और सद्भाव बढ़ाने का प्रयास करें।

"होली के अवसर पर आओ एक दूजे पर गुलाल लगाएँ
अपने सब भेदभाव भुलाकर, प्रेम और सद्भाव बढाएँ"

• भाषा की बात

6. 'हरे-हरे', 'पुष्प-पुष्प' में एक शब्द की एक ही अर्थ में पुनरावृत्ति हुई है।

- कविता के 'हरे-हरे ये पात ' वाक्यांश में 'हरे-हरे' शब्द युग्म पत्तों के लिए विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। यहाँ 'पात' शब्द बहुवचन में प्रयुक्त है।
- ऐसा प्रयोग भी होता है जब कर्ता या विशेष्य एक वचन में हो और कर्म, या क्रिया या विशेषण बहुवचन में; जैसे - वह लंबी-चौड़ी बातें करने लगा।
- कविता में एक ही शब्द का एक से अधिक अर्थों में भी प्रयोग होता है - "तीन बेर खाती ते वे तीन बेर खाती है।" जो तीन बार खाती थी वह तीन बेर खाने लगी है।
- एक शब्द 'बेर' का दो अर्थों में प्रयोग करने से वाक्य में चमत्कार आ गया। इसे यमक अलंकार कहा जाता है।
- कभी-कभी उच्चारण की समानता से शब्दों की पुनरावृत्ति का आभास होता है जबकि दोनों दो प्रकार के शब्द होते हैं; जैसे - मन का/मनका।
- ऐसे वाक्यों को एकत्र कीजिए जिनमें एक ही शब्द की पुनरावृत्ति हो।
- ऐसे प्रयोगों को ध्यान से देखिए और निम्नलिखित पुनरावृत शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए -
- बातों-बातों में, रह-रहकर, लाल-लाल, सुबह-सुबह, रातों-
- रात, घड़ी-घड़ी।
- उत्तर:- बातों-बातों - बातों-बातों में कब घर आ गया पता ही नहीं चला।
- रह-रहकर - कल रात से रह-रहकर बारिश हो रही है।
- लाल-लाल - लाल-लाल आँखों से पिताजी अमर को घूर रहें थे।

- सुबह-सुबह - दादीजी सुबह-सुबह ही पूजा करने मंदिर निकल जाती हैं।
- रातों-रात - ईश्वर की कृपा से रामन रातों-रात अमीर हो गया।
- घड़ी-घड़ी - घड़ी-घड़ी शिक्षक उसे पढ़ाई में ध्यान लगाने के लिए टोकते रहते थे।

पाठ 2

लाख की चूड़ियाँ

- कामतानाथ

मशीनों के प्रयोग से हमें लाभ है , किन्तु अप्रत्यक्ष रूप में इससे हानि भी होती है। मशीनों का प्रयोग विकास का सूचक समझा जाता है किन्तु हस्तकला एवं कुटीर उद्योगों पर इसका कितना बुरा एवं दूरगामी असर होता है , इसका वर्णन किया गया है। मशीनों के प्रयोग से बदलू जैसे कारीगरों के हाथ कट गए, उनका काम छिन गया। वे या तो बेरोजगार हो चुके हैं या फिर कोई और व्यवसाय अपनाने को विवश हैं।

गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

गद्यांश 1

बदलू मनिहार था। चूड़ियाँ बनाना उसका पैतृक पेशा था और वास्तव में वह बहुत ही सुंदर चूड़ियाँ बनाता था । उसकी बनाई हुई चूड़ियों की खपत भी बहुत थी। उस गाँव में तो सभी स्त्रियाँ उसकी बनाई हुई चूड़ियाँ पहनती ही थीं आस .पास के गाँव के लोग उससे चूड़ियाँ ले जाते थे परन्तु वह कभी भी चूड़ियों को पैसों से बेचता न था उसका अभी तक वस्तु विनिमय का तरीका था और लोग अनाज के बदले उससे चूड़ियाँ ले जाते थे बदलू स्वभाव से सीधा था । मैंने कभी भी उसे किसी से झगड़ते नहीं देखा।

1. बदलू कौन था?

उत्तर- बदलू एक मनिहार था।

2. उसका पैतृक पेशा क्या था ?

उत्तर- चूड़ियाँ बनाना उसका पैतृक पेशा था।

3. बदलू की बनाई चूड़ियों की खपत अधिक क्यों थी?

उत्तर- क्योंकि उसके हाथों से बनी चूड़ियाँ सुन्दर व सजीली होती थी तथा वे चूड़ियाँ आस पास के गावों में भी मशहूर थी।

3. वस्तु विनिमय से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर- वस्तु विनिमय का अर्थ है वस्तु के बदले वस्तु का लेन देन करना न कि अपनी किसी वस्तु को पैसों में बेचना

4. उसकी बनाई चूड़ियों की दो विशेषताएँ लिखिए ।

उत्तर- -

1 उसकी चूडियाँ बहुत सुन्दर थी।

2 चूड़ियाँ रंग बिरंगे लाख से बनाई जाती थी ।

गद्यांश 2

गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

रज्जो ने चार पाँच आम अंजुली में लेकर मेरी ओर बढ़ा दिए। आम लेने के लिए मैंने हाथ बढ़ाया तो मेरी निगाह एक क्षण के लिए उसके हाथों पर ठिठक गई। गोरी- गोरी कलाइयों पर लाख की चूड़ियाँ

बहुत ही फब रही थी। बदलू ने मेरी दृष्टि देख ली ओर बोल पड़ा , यही आखिरी जोड़ा बनाया था जमींदार साहब की बेटी के विवाह पर। दस आने मुझको दे रहे थे। मैंने जोड़ा नहीं दिया। कहा शहर से ले आओ ।

1. रज्जो कौन थी ? वह लेखक को क्या देना चाहती थी ?

उत्तर- रज्जो बदलू मनिहार की बेटी थी । वह लेखक को आम देना चाहती थी ।

2. लेखक को क्या देखकर विस्मय हुआ ?

उत्तर- रज्जो की कलाइयों पर सुन्दर लाख की चूड़ियाँ देखकर लेखक को विस्मय हुआ ।

3. बदलू ने जमींदार को चूड़ियों का जोड़ा क्यों न दिया ?

उत्तर- क्योंकि जमींदार चूडियों के पैसे कम दे रहा था ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से क्यों जाता था और बदलू को बदलू मामा न कह कर बदलू काका क्यों कहता था ?

उत्तर- क्योंकि बदलू मनिहार उसे लाख की रंग बिरंगी गोलियां बना कर देता था ।

वह बदलू को बदलू मामा न कहकर बदलू काका इसलिए कहता था क्योंकि गाँव के सभी बच्चे बदलू को काका कहकर बुलाते थे।

प्रश्न 2 मशीनी युग बदलू के जीवन में क्या बदलाव आया ?

उत्तर- जिस प्रकार मशीनों का प्रभाव हर किसी के जीवन में दिखाई दे रहा था बदलू भी उससे अछूता नहीं रहा था उसका जीवन पूरी तरह से बदल गया वह मानसिक व शारीरिकरूप से बीमार हो गया।

प्रश्न 3 लाख की चूड़ियाँ किससे व किस प्रकार बनती हैं ?

उत्तर- लाख की चूड़ियाँ लाख नामक पदार्थ से बनती हैं पहले लाख को गरम करके पिघलाया जाता है। फिर लकड़ी की चौखट पर उसे सलाख के सामान पतला करके चूड़ी का आकार दिया जाता है। फिर गोल बेलन जैसे गुटके पर दल कर उन्हें सही आकर देकर रंगा जाता है ।

प्रश्न 4 बदलू को किस बात से चिढ़ थी ?

उत्तर- बदलू को काँच की चूड़ियाँ पहनने से अत्यधिक चिढ़ थी यदि किसी स्त्री को काँच की चूड़ियाँ पहने देख लेता तो अन्दर ही अन्दर जल जाता और कभी कभी दो चार बातें भी सुना देता था ।

अतिरिक्त प्रश्न

1. लाख शब्द का अर्थ बताओ ।

उत्तर- पेड़ की छाल से प्राप्त तरल पदार्थ जो अत्यंत ज्वलनशील होता है ।

2. लेखक बदलू को क्या कहकर पुकारता था ?

उत्तर- बदलू काका ।

3. बदलू का पैतृक पेशा क्या था ?

उत्तर- लाख की चूड़ियाँ बनाना ।

4. उसका चूड़ियाँ बेचने का क्या तरीका था ?

उत्तर- वस्तु विनिमय ।

5.लेखक गर्मियों की छुट्टियों में कहाँ जाता था ?

उत्तर- अपने मामा के घर।

अन्य प्रश्न

1. बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से क्यों जाता था और बदलू को 'बदलू मामा' न कहकर 'बदलू काका' क्यों कहता था?

उत्तर:- बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से इसलिए जाता था क्योंकि लेखक के मामा के गाँव में लाख की चूड़ियाँ बनाने वाला कारीगर बदलू रहता था। लेखक को बदलू काका से अत्यधिक लगाव था। वह लेखक को ढेर सारी लाख की रंग- बिरंगी गोलियाँ देता था इसलिए लेखक अपने मामा के गाँव चाव से जाता था। गाँव के सभी लोग बदलू को 'बदलू काका' कहकर बुलाते थे इस कारण लेखक भी 'बदलू मामा' न कहकर 'बदलू काका' कहता था।

2. वस्तु-विनिमय क्या है? विनिमय की प्रचलित पद्धति क्या है?

उत्तर:- 'वस्तु विनिमय' में एक वस्तु को दूसरी वस्तु देकर लिया जाता था। वस्तु के लिए पैसे नहीं लिए जाते थे। वस्तु के बदले वस्तु ली-दी जाती थी। किन्तु अब मुद्रा के चलन के कारण वर्तमान परिवेश में वस्तु का लेन-देन मुद्रा के द्वारा होता है। विनिमय की प्रचलित पद्धति पैसा है।

3. 'मशीनी युग' ने कितने हाथ काट दिए हैं। ' - इस पंक्ति में लेखक ने किस व्यथा की ओर संकेत किया है?

उत्तर:- इस पंक्ति में लेखक ने कारीगरों की व्यथा की ओर संकेत किया है कि मशीनों के आगमन के साथ कारीगरों के हाथ से काम- धंधा छिन गया। मानो उनके हाथ ही कट गए हों। उन कारीगरों का रोजगार इन पैतृक काम धन्धों से ही चलता था। उसके अलावा उन्होंने कभी कु छ नहीं सीखा था। वे पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी इस कला को बढ़ाते चले आ रहे हैं और साथ में रोज़ी रोटी भी चला रहें हैं। परन्तु मशीनी युग ने जहाँ उनकी रोज़ी रोटी पर वार किया है। मशीनों ने लोगों को बेरोजगार बना दिया।

4. बदलू के मन में ऐसी कौन-सी व्यथा थी, जो लेखक से छिपी न रह सकी?

उत्तर:- बदलू लाख की चूड़ियाँ बेचा करता था परन्तु जैसे- जैसे काँच की चूडियों का प्रचलन बढ़ता गया उसका व्यवसाय ठप पड़ने लगा। अपने व्यवसाय की यह दुर्दशा बदलू को मन ही मन कचौटती थी। बदलू के मन में इस बात कि व्यथा थी कि मशीनी युग के प्रभावस्वरुप उस जैसे अ नेक कारीगरों को बेरोजगारी और उपेक्षा का शिकार होना पड़ा है। अब लोग कारीगरी की कद्र न करके दिखावटी चमक पर अधिक ध्यान देते हैं। यह व्यथा लेखक से छिपी न रह सकी।

5. मशीनी युग से बदलू के जीवन में क्या बदलाव आया?

उत्तर:- मशीनी युग से बदलू के जीवन में यह बदलाव आया की बदलू का व्यवसाय बंद हो गया। वह बेरोजगार हो गया। काम न करने से उसका शरीर भी ढल गया , उसके हाथों-माथे पर नसें उभर आईं। अब वह बीमार रहने लगा।

6. लाख की वस्तुओं का निर्माण भारत के किन- किन राज्यों में होता है? लाख से चूड़ियों के अतिरिक्त क्या-क्या चीज़ें बनती है? ज्ञात कीजिए।

उत्तर:- लाख की वस्तुओं का निर्माण सर्वाधिक उत्तरप्रदेश में होता है। लाख से चूड़ियाँ , मूर्तियाँ, गोलियाँ तथा सजावट की वस्तुओं का निर्माण होता है।

• भाषा की बात

7. 'बदलू को किसी बात से चिढ़ थी तो काँच की चूडियों से ' और बदलू स्वयं कहता है - "जो सुंदरता काँच की चूडियों में होती है लाख में कहाँ संभव है?" ये पंक्तियाँ बदलू की दो प्रकार की मनोदशाओं को सामने लाती हैं। दूसरी पंक्ति में उसके मन की पीड़ा है। उसमें व्यंग्य भी है। हारे हुए मन से , या दुखी मन से अथवा व्यंग्य में बोले गए वाक्यों के अर्थ सामान्य नहीं होते। कुछ व्यंग्य वाक्यों को ध्यानपूर्वक समझकर एकत्र कीजिए और उनके भीतरी अर्थ की व्याख्या करके लिखिए।

उत्तर:- व्यंग्य वाक्य - 'अब पहले जैसी औलाद कहाँ?'

व्याख्या - आजकल किसी भी बुजुर्ग के मुख से आमतौर पर यह सुनने मिलता है जिसमें उनके हृदय में छिपा दुःख और व्यंग्य देखने मिलता है। उनका मानना है कि आजकल की संतान बुजुर्गों को अधिक सम्मान नहीं देती।

8. 'बदलू' कहानी की दृष्टि से पात्र है और भाषा की बात (व्याकरण) की दृष्टि से संज्ञा है। किसी भी व्यक्ति, स्थान, वस्तु, विचार अथवा भाव को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा को तीन भेदों में बाँटा गया है -

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा, जैसे - लला, रज्जो, आम, काँच, गाय इत्यादि

(ख) जातिवाचक संज्ञा, जैसे - चरित्र, स्वभाव, वजन, आकार आदि द्वारा जानी जाने वाली संज्ञा।

(ग) भाववाचक संज्ञा, जैसे - सुंदरता, नाजुक, प्रसन्नता इत्यादि जिस में कोई व्यक्ति नहीं है और न आकार या वजन। परंतु उसका अनुभव होता है। पाठ से तीनों प्रकार की संज्ञाएँ चुनकर लिखिए।

उत्तर:- (क) व्यक्तिवाचक संज्ञा - बदलू, बेलन, मचिया।

(ख) जातिवाचक संज्ञा - आदमी, मकान, शहर।

(ग) भाववाचक संज्ञा - स्वभाव, रूचि, व्यथा।

9. गाँव की बोली में कई शब्दों के उच्चारण बदल जाते हैं। कहानी में बदलू वक्त (समय) को बखत, उम्र(वय/आयु) को उमर कहता है। इस तरह के अन्य शब्दों को खोजिए जिनके रूप में परिवर्तन हुआ हो, अर्थ में नहीं।

उत्तर:-

इंसान - मनुष्य

रंज - दुख

गम - मायूसी

ज़िंदगी - जीवन

औलाद - संतान

पाठ 3

बस की यात्रा

हरिशंकर परसाई

यह यात्रा वृतांत 'व्यंग्यात्मक शैली' में लिखा गया है । इसमें बताया गया है कि प्राइवेट बस कंपनियों के मालिक कैसी-कैसी खटारा बसे चलाते हैं । वे अधिकाधिक मुनाफ़ा कमाने के चक्कर में यात्रियों जान के साथ खिलवाड़ करने में भी संकोच नहीं करते हैं ।

गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

गद्यांश 1

हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें ।पन्ना से इसी कम्पनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है जो जबलपुर के लिए रेल मिला देती है। सुबह घर पहुँच जाएँगे। हम में से दो को काम पर हाजिर होना था। इसीलिए वापसी का यही रास्ता अपनाना जरुरी था।लोगों ने सलाह दी कि समझदार लोग इस शाम वाली बस से सफर नहीं करते ।

1. बस की यात्रा पाठ के लेखक कौन है ?

उत्तर- हरिशंकर परसाई ।

2. लेखक और उसके मित्र कितने बजे की बस पकड़ना चाहते थे ?

उत्तर- लेखक और उसके मित्र शाम चार बजे की बस पकड़ना चाहते थे ।

3. लेखक सतना से कहाँ जाने वाली रेल पकड़ना चाहते थे ?

उत्तर- लेखक सतना से जबलपुर जाने वाली ट्रेन पकड़ना चाहते थे ।

4. कितने लोगों को सुबह काम पर हाजिर होना था ?

उत्तर- दो लोगों को सुबह कम पर हाजिर होना था।

5 लोगों ने क्या सलाह दी ?

उत्तर- लोगों ने सलाह दी कि इस शाम वाली बस में सफ़र नहीं करना चाहिए ।

गद्यांश 2

इंजन सचमुच स्टार्ट हो गया। ऐसा , जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं । कांच बहुत कम बचे थे , जो बचे थे उनसे ह में बचना था। हम फौरन खिड़की से दूर सरक गए । इंजन चल रहा था। हमें लग रहा था कि हमारी सीट के नीचे इंजन है।

1 इंजन स्टार्ट होने के लिए सचमुच शब्द का प्रयोग क्यों किया गया है?

उत्तर- बस की हालत बहुत ख़राब थी उसे देखकर लग नहीं रहा था की बस स्टार्ट हो पाएगी इसलिए इस विस्म्यादि बोधक शब्द सचमुच का प्रयोग किया गया है।

2 सारी बस इंजन लग रही थी इसका क्या कारण था ?

उत्तर- बस के स्टार्ट होने पर बस भी इंजन की तरह हिलने लग गयी इसलिए सारी बस इंजन की तरह लग रही थी।

3 बचे काँच से बचने के लिए लेखक ने क्या किया ?

उत्तर- बचे काँच से बचने के लिए लेखक खिड़कियों से दूर हो गया ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न1 लेखक के मन में हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा क्यों जग गयी ?

उत्तर- बस का टायर पंक्चर हो गया जिससे बस जोर से हिलकर रुक गयी। अगर यह बस तेज गति से चल रही होती तो अ वश्य ही उछल कर नाले में गिर जाती ऐसे में लेखक ने कम्पनी के हिस्सेदार की ओर श्रद्धा से देखा ये श्रद्धा इसलिए जगी क्योंकि हिस्सेदार केवल अपने स्वार्थ हेतु लाचार था।

प्रश्न 2. लेखक पेड़ों को दुश्मन क्यों समझ रहा था?

उत्तर- लेखक को हर पेड़ से डर लग रहा था और ह र पेड़ उसे अपना दुश्मन दिखाई दे रहा था कारन यह था कि बस को जबरदस्ती चलाया जा रहा था कभी भी उसका ब्रेक फेल हो सकता था और कभी भी उसकी पेड़ से टक्कर हो सकती थी ।

प्रश्न 3. बस की यात्रा पाठ का मूलभाव क्या है ?

उत्तर- यह एक व्यंग्यात्मक रचना है इसके माध्यम से ले खक यह बताना चाहता है कि समयानुसार वस्तुओं में नवीनीकरण की आवश्यकता होती है।

प्रश्न 4. बस की यात्रा आज के समाज में भी कैसे सार्थक है ?

उत्तर- क्योंकि आज भी हम कई बार देखते हैं की सड़क पर पुराने वाहन धडाधड चल रहे हैं मालिकों को लोगों की जान की परवाह नहीं होती और वे अपने स्वार्थ हेतु मनमानी करते रहते हैं ।

अतिरिक्त प्रश्न

1.यह पाठ किस शैली में लिखा गया है ?

उत्तर- हास्य व्यंग्य शैली में

2. असहयोग और सविनय अवज्ञा क्या हैं ?

उत्तर- स्वाधीनता आंदोलनए यहाँ बस के अंगों का मिलकर कार्य न कर पाने की स्थिति ।

3. आगा पीछा में कौन सा समास है ?

उत्तर- आगा और पीछा- द्वंद्व समास

4. फर्स्ट क्लास शब्द किस भाषा का है ?

उत्तर- अंग्रेजी का

5.समझदार आदमी में समझदार शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है ?

उत्तर- गुणवाचक विशेषण

कारण बताएँ

1. "मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ़ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा।"

लेखक के मन में हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा क्यों जग गई?

उत्तर:- लेखक के मन में बस कंपनी के हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा इसलिए जाग गई कि वह टायर की स्थिति से परिचित होने के बावजूद भी बस को चलाने का साहस जुटा रहा था। कंपनी का हिस्सेदार अपनी पुरानी बस की खूब तारीफ़ कर रहा था। अर्थ मोह की वजह से आत्म बलिदान की ऐसी भावना दुर्लभ थी जिसे देखकर लेखक हतप्रभ हो गया और उसके प्रति उनके मन में श्रद्धा भाव उमड़ता है।

2. "लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफ़र नहीं करते।"

लोगों ने यह सलाह क्यों दी?

उत्तर:- लोगों ने लेखक को यह सलाह इसलिए दी क्योंकि वे जानते थे की बस की हालत बहुत खराब है। बस का कोई भरोसा नहीं है कि यह कब और कहाँ रूक जाए , शाम बीतते ही रात हो जाती है और रात रास्ते में कहाँ बितानी पड़ जाए, कुछ पता नहीं रहता। उनके अनुसार यह बस डाकिन की तरह है।

3. "ऐसा जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं। " लेखक को ऐसा क्यों लगा?

उत्तर:- जब बस चालक ने इंजन स्टार्ट किया तब सारी बस झनझनाने लगी। लेखक को ऐसा प्रतीत हुआ कि पूरी बस ही इंजन है। मानो वह बस के भी तर न बैठकर इंजन के भीतर बैठा हुआ हो। अर्थात् इंजन के स्टार्ट होने पर इंजन के पुर्जो की भांति बस के यात्री हिल रहे थे।

4. "गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।" लेखक को यह सुनकर हैरानी क्यों हुई?

उत्तर:- बस की वर्तमान स्थिति देखते हुए इस प्रकार का आश्चर्य व्यक्त करना स्वाभाविक था। देखने से लग नहीं रहा था कि बस चलती भी होगी परन्तु जब लेखक ने बस के हिस्सेदार से पूछा तो उसने कहा चलेगी ही नहीं, अपने आप चलेगी।

5. "मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था।" लेखक पेड़ों को अपना दुश्मन क्यों समझ रहा था?

उत्तर:- बस की जर्जर अवस्था से लेखक को ऐसा महसूस हो रहा था कि बस की स्टीयरिंग कहीं भी टूट सकती है तथा ब्रेक फेल हो सकता है। ऐसे में लेखक को डर लग रहा था कि कहीं उसकी बस किसी पेड़ से टकरा न जाए। एक पेड़ निकल जाने पर वह दूसरे पेड़ का इंतज़ार करता था कि बस कहीं इस पेड़ से न टकरा जाए। यही वजह है कि लेखक को हर पेड़ अपना दुश्मन लग रहा था।

6. 'सविनय अवज्ञा आंदोलन ' किसके नेतृत्व में , किस उद्देश्य से तथा कब हुआ था ? इतिहास की उपलब्ध पुस्तकों के आधार पर लिखिए।

उत्तर:- 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' महात्मा गांधी के नेतृत्व में 1930 में अंग्रेज़ी सरकार से असहयोग करने तथा पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए किया गया था।

7. सविनय अवज्ञा का उपयोग व्यंग्यकार ने किस रूप में किया है? लिखिए।

उत्तर:- 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' 1930 में सरकारी आदेशों का पालन न करने के लिए किया था।इसमें अंग्रेज़ी सरकार के साथ सहयोग न करने की भावना थी।

लेखक ने 'सविनय अवज्ञा' का उपयोग बस के सन्दर्भ में किया है। वह इस प्रतीकात्मक भाषा के माध्यम से यह बताना चाह रहा है कि बस विनय पूर्वक अपने मालिक व यात्रियों से उसे स्वतंत्र करने का अनुरोध कर रही है।

• भाषा की बात

8. बस, वश, बस तीन शब्द हैं - इनमें बस सवारी के अर्थ में , वश अधीनता के अर्थ में , और बस पर्याप्त (काफी) के अर्थ में प्रयुक्त होता है,

जैसे - बस से चलना होगा।

मेरे वश में नहीं है।

अब बस करो।

उपर्युक्त वाक्यों के समान वश और बस शब्द से दो-दो वाक्य बनाइए।

उत्तर:- वश - आज-कल के बच्चों को समझाना सबके वश की बात नहीं।

वश - भगवान की करनी मनुष्य के वश में नहीं।

बस - बस करो, कितना खाओगे?

बस - बस करो, इतना काफी है।

9. "हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें। पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है।"

ऊपर दिए गए वाक्यों में ने , की, से आदि वाक्य के दो शब्दों के बीच संबंध स्थापित कर रहे हैं। ऐसे शब्दों को कारक कहते हैं। इसी तरह दो वाक्यों को एक साथ जोड़ने के लिए 'कि' का प्रयोग होता है। कहानी में से दोनों प्रकार के चार वाक्यों को चुनिए।

उत्तर:- कारक शब्द से निर्मित वाक्य -

1 यह समझ में नहीं आता कि सीट पर हम बैठे हैं या सीट हम पर बैठी है।

2 नई नवेली बसों से ज़्यादा विश्वसनीय है।

3 यह बस पूजा के योग्य थी।

4 बस कंपनी के एक हिस्सेदार भी उसी बस में जा रहे थे।

10. "हम फ़ौरन खिड़की से दूर सरक गए। चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी।"

दिए गए वाक्यों में आई 'सरकना' और 'रेंगना' जैसी क्रियाएँ दो प्रकार की गतियाँ दर्शाती हैं। ऐसी कुछ और क्रियाएँ एकत्र कीजिए जो गति के लिए प्रयुक्त होती हैं , जैसे - घूमना इत्यादि। उन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर:- टहलना - दादाजी को टहलना अच्छा लगता है।

चलना - चलना सेहत के लिए बहुत लाभदायक है।

11. "काँच बहुत कम बचे थे। जो बचे थे, उनसे हमें बचना था।"

इस वाक्य में 'बच' शब्द को दो तरह से प्रयोग किया गया है। एक 'शेष' के अर्थ में और दूसरा 'सुरक्षा' के अर्थ में।

नीचे दिए गए शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करके देखिए। ध्यान रहे, एक ही शब्द वाक्य में दो बार आना चाहिए और शब्दों के अर्थ में कुछ बदलाव होना चाहिए।

(क) जल (ख) हार

उत्तर:- (क) जल - मीना गरम जल से बुरी तरह जल गई।

(ख) हार - यह प्रतियोगिता के इस पड़ाव में जिसकी जीत होगी उसे मोतियों का हार मिलेगा और जिसकी हार होगी वह प्रतियोगिता के बाहर हो जाएगा।

12. बोलचाल में प्रचलित अंग्रेजी शब्द 'फर्स्ट क्लास' में दो शब्द हैं - फर्स्ट और क्लास। यहाँ क्लास का विशेषण है फर्स्ट। चूँकि फर्स्ट संख्या है , फर्स्ट क्लास संख्यावाचक विशेषण का उदाहरण है। 'महान आदमी' में किसी आदमी की विशेषता है महान। यह गुणवाचक विशेषण है। संख्यावाचक विशेषण और गुणवाचक विशेषण के दो-दो उदाहरण खोजकर लिखिए।

उत्तर:- संख्यावाचक विशेषण - चार, आठ, दस

गुणवाचक विशेषण - चाँदनी रात, समझदार आदमी

पाठ 4

हम दीवानों की क्या हस्तीए

भगवतीचरण वर्मा

इस कविता में दीवाने अर्थात मस्त जीने वाले उन वीरों की मनोदशा का वर्णन हैं, जो मातृभूमि को स्वतंत्र कराने के लिए अपनी जान हथेली पर लिए फिरते हैं । यह कविता देश को आजादी मिलने से पहले लिखी गई है । देश को आजाद कराने वाले मनमौजी स्वभाव के हैं। ये वे वीर हैं , जो देश को आजाद कराने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने की भावना रखते हैं। वे लोगों की मुसीबतें तथा दुःख लेने और अपनी खुशियाँ देने का प्रयास करते हैं। वे दुखों तथा अभाव ग्रस्त लोगों के बीच अपना प्यार लुटाकर आगे बढ़ जाते हैं । वे स्थायी रूप से कहीं नहीं रहते ।

काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

हम दीवानों की क्या हस्ती
हैं आज यहाँएकल वहाँ चले
मस्ती का आलम साथ चलाए
हम धूल उड़ाते जहाँ चले ।
आए बनकर उल्लास अभी
आँसू बनकर बह चले अभी
सब कहते ही रह गए अरे
तुम कैसे आए कहाँ चले ?

प्रश्न 1 कवि एवं कविता का नाम लिखिए ।

उत्तर- भगवतीचरण वर्मा व दीवानों की हस्ती

प्रश्न 2 कवि के अनुसार किसकी हस्ती नही है ?

उत्तर- दीवानों की

प्रश्न 3 कवि ने दीवानों के आने और जाने की तुलना किससे की है ?

उत्तर- कवि के अनुसार दीवाने प्रसन्नता और उल्लास के रूप आते है और आँसू के रूप में बह जाते हैं।

प्रश्न 4 कवि ने दीवानों शब्द का प्रयोग किस के लिए किया है ?

उत्तर- फक्कड़ लोगों के लिए

प्रश्न 5. तुम कैसे आए पंक्ति में तुम शब्द किसके लिए आया है ?

उत्तर- कवि के लिए

प्रश्न.2. निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए

हम भिखमंगों की दुनिया में स्वछंद लुटाकर प्यार चले
हम एक निशानी-सी उर पर ले असफलता का भर चले।
अब अपना और पराया क्या ?
आबाद रहें रुकनेवाले!
हम स्वयं बंधे थे और स्वयं
हम अपने बंधन तोड़ चले।

1. कविता तथा कवि का नाम लिखिए ।

उत्तर- दीवानों की हस्ती, भगवती चरण वर्मा

2. कवि दुनिया में प्यार किस प्रकार लुटाकर जा रहा है ?

उत्तर- स्वछंदरूप से

3. हृदय का समानार्थी शब्द छाँटकर लिखिए।

उत्तर- उर

4. कवि ने लोगों के लिए क्या कामना की है ?

उत्तर- 4 कवि ने लोगो के लिए आबादएवं खुश रहने की कामना की है।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कवि ने अपने आने को "उल्लास" और जाने को "आँसूं" बनकर बह जाना क्यों कहा है ?

उत्तर- कवि ने अपने आने को "उल्लास" इसलिए कहा है। क्योंकि उसके आने से लोगों के मन और चित्त दोनों खुश हो जाते है। लोगों के दिलों में प्र सन्नता की कलियाँ खिल उठती है। दूसरी तरफ उसके जाने से लोगों के मन में दुःख उत्पन्न होता है। लोग उसकी कमी को अनुभव करते है। इसलिए कवि ने स्वयं को आँसू बनकर बह जाना कहा है ?

प्रश्न 2. कवि लोगों से क्या पूछने के लिए मना करता है ?

उत्तर- कवि लोगों से उसके आने और जाने के बारे में पूछने को मना करता है। वह चाहता है कि वह जहाँ भी जा रहा है । उसके बारे कुछ न पूछे। उसे तो केवल चलना है । इसलिए वह लगातार चले जा रहा है ।

प्रश्न 3 जीवन में मस्ती होनी चाहिएए लेकिन कब मस्ती हानिकारक हो सकती है ? सहपाठियों के बीच चर्चा कीजिए ।

उत्तर- यह सही बात है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में मस्ती होनी चाहिए। प्रत्येक आयु में मस्ती अलग.अलग प्रकार की हो सकती है। छोटे बचों के लिए खेलना . कूदनाएकाम न करना आदि क्रियाए ही मस्ती है। युवा वर्ग अपनी क्रियाओं व मस्ती भरे व्यवहार से समा ज को नवीन शिक्षा भी प्रदान करता है। लेकिन अनियंत्रित मस्ती हानिकारक हो सकती है। यह मानव को अपने पथ से भटका देती है। मैं उस प्रकार की मस्ती का लेना चाहता हूँ जो समाज एवं देश को नया पथ व नया ज्ञान प्रदान करने का काम करती है ।

अतिरिक्त प्रश्न

1. दीवानें एक स्थान पर क्यों नहीं टिकते ?

उत्तर- देश की आजादी के लिए अंग्रेजों के खिलाफ योजनाएँ बनाने के लिए दीवाने घूमते रहते थे।

2. दीवानों की दो विशेषताएँ बताओ ।

उत्तर-

क.देश की सेवा करना ।

ख.लोगों को खुशियों देना ।

3 .एक निशानी-सी उर पर में कौन सा अलंकार है ?

उत्तर- उपमा अलंकार

4. असफलता शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय बताओ ।

उत्तर- अ- उपसर्ग, सफल-मूल शब्द, प्रत्यय- ता

5.आबाद रहें रहने वाले का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- दीवानें स्वयं तो एक जगह रुककर नहीं रहते किन्तु देशवासियों के लिए वे हँसी- खुशी जीवन बिताने की कामना करते हैं ।

अनुमान से :-

1. कवि ने अपने आने को 'उल्लास' और जाने को 'आँसू बनकर बह जाना' क्यों कहा है?

उत्तर:- कवि ने अपने आने को उल्लास इसलिए कहता है क्योंकि जहाँ भी वह जाता है मस्ती का आलम लेकर जाता है। वहाँ लोगों के मन प्रसन्न हो जाते हैं।

पर जब वह उस स्थान को छोड़ कर आगे जाता है तब उसे तथा वहाँ के लोगों को दुःख होता है। विदाई के क्षणों में उसकी आखों से आँसू बह निकलते हैं।

2. भिखमंगों की दुनिया में बेरोक प्यार लुटानेवाला कवि ऐसा क्यों कहता है कि वह अपने हृदय पर असफलता का एक निशान भार की तरह लेकर जा रहा है? क्या वह निराश है या प्रसन्न है?

उत्तर:- यहाँ भिखमंगों की दुनिया से कवि का आशय है कि यह दुनिया केवल लेना जानती है देना नहीं। कवि ने भी इस दुनिया को प्यार दिया पर इसके बदले में उसे वह प्यार नहीं मिला जिसकी वह आशा करता है। कवि निराश है , वह समझता है कि प्यार और खुशियाँ लोगों के जीवन में भरने में असफल रहा। दुनिया अभी भी सांसारिक विषयों में उलझी हुई है।

3. कविता में ऐसी कौन-सी बात है जो आपको सबसे अच्छी लगी?

उत्तर:- कविता में कवि का जीवन के प्रति दृष्टिकोण अच्छा लगा। कवि कहते है कि हम सबके सुख-दुःख एक है तथा हमें एक साथ ही इन सुखों और दुखों को भोगना पड़ता है। हमें दोनों परिस्थितियों का सामना समान भाव से करना चाहिए। ऐसी दृष्टिकोण रखनेवाला व्यक्ति ही सुखी रह सकता है।

• भाषा की बात

4. संतुष्टि के लिए कवि ने 'छककर' 'जी भरकर' और 'खुलकर' जैसे शब्दों का प्रयोग किया है। इसी भाव को व्यक्त करनेवाले कुछ और शब्द सोचकर लिखिए, जैसे - हँसकर, गाकर।

उत्तर:- 1. खींचकर

2. पीकर

3. मुस्कराकर

4. देकर

5. मस्त होकर

6. सराबोर होकर

पाठ 5

चिठ्ठियों की अनोखी दुनिया

अरविन्द कुमार सिंह

प्रस्तुत पाठ में चिट्ठियों की अनूठी दुनिया से हमारा परिचय कराया गया है। इसके अलावा पत्रों का महत्त्व, सभ्यता के विकास में उनका योगदान, इस वैज्ञानिक युग में भी उनकी महत्ता, ग्रामीण जीवन में पत्रों की अतिशयमहत्ता का रोचक वर्णन किया गया है।

गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए

गद्यांश 1

पत्रों की दुनिया भी अजीबो गरीब है, और उसकी उपयोगिता हमें शा से बनी रही है । पत्र जो काम कर सकते हैं , वह संचार का आधुनिकतम साधन नहीं कर सकता । पत्र जैसा संतोष फोन या एस.एम.एस.का संदेश कहाँ दे सकता है। पत्र एक नया सिलसिला शुरू करते हैं और राजनीति साहित्य तथा कला के क्षेत्रों में तमाम विवाद और नई घटनाओं की जड़ भी पत्र ही होते है

प्रश्न 1 एस.एम.एस.क्या है ?

उत्तर- एस.एम.एस.पत्र का आधुनिकतम रूप है जो मोबाइल द्वारा प्रेषित किया जाता हैअर्थात सरल मोबाइल संदेश।

प्रश्न 2 उपयोगिता शब्द से प्रत्यय अलग कीजिए ।

उत्तर- उपयोग +इ +ता

प्रश्न 3 आपके विचार से पत्र एक नया सिलसिला कैसे शुरू करते हैं ?

उत्तर- पत्रों के माध्यम से हम अपने ज्ञान और भावों को बाँटते हैं जिससे जीवन में मिठास आती है और एक नया सिलसिला शुरु होता है ।

प्रश्न 4 पत्र का संदेश बेहतर हैं या एस.एम.एस.का और क्यों ?

उत्तर- पत्र का संदेश बेहतर क्योंकि इसे हम लम्बे समय तक सहेजकर रख सकते हैं ।

गद्यांश 2

अगर आज जैसे संचार साधन होते तो पंडित नेहरु अपनी पुत्री इंदिरा गांधी को फोन करते , पर तब पिता के पत्र पुत्री के नाम नहीं लिखे जाते जो देश के करोड़ो लोगो को प्रेरणा देते हैं। पत्रों को तो आप सहेज कर रख लेते हैं, पर एस.एम.एस.संदेशो को आप जल्दी ही भूल जाते हैं। कितने संदेशों को आप सहेज कर रख सकते है? तमाम महान हस्तियों की तो सबसे बड़ी यादगार या धरोहर उनके द्वारा लिखे गए पत्र ही हैं। भारत में इस श्रेणी में राष्ट्र पिता महात्मा गांधी को सबसे आगे रखा जा सकता है। दुनिया के तमाम संग्रहालय जानी मानी हस्तियों के पत्रों का अनूठा संकलन भी हैं ।

प्रश्न 1 पंडित नेहरु ने किसे और किस नाम से पत्र लिखा ?

उत्तर- पंडित नेहरु ने अपनी पुत्री इंदिरा को 'पिता के पुत्र पुत्री के नाम' से पत्र लिखा ।

प्रश्न 2 पत्र और एस.एम.एस.संदेशों में क्या अंतर हैं ?

उत्तर- पत्रों को सहेजकर रखा जा सकता है जबकि,एस,एम,एस को सहेजकर नहीं रखा जा सकता ।

प्रश्न 3 महान हस्तियों के पत्र धरोहर के समान क्यों है ?

उत्तर- आज भी लोग हस्तियों के पत्रों को पढकर प्रेरणा लेते हैं इसलिए हस्तियों के पत्र धरोहर के सामान हैं ।

प्रश्न 4 महान हस्तियों के पत्रों का संकलन कहाँ रखा गया है और क्यों ?

उत्तर- हस्तियों के पत्रों को संग्रहालयों में रखा गया है ताकि लोग उन्हें पढ़ें और उनसे सीख ले सकें ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 पत्र जैसा संतोष फोन या,एस.एम.एस.का संदेश क्यों नहीं दे सकता ?

उत्तर- फोन या,एस.एम.एस. के संदेशो को लोग शीघ्र ही भूल जाते हैं। फ़ोन पर की गई बातोँ और एस.एम.एस.को लम्बे समय तक बचाकर रख पाना भीएककठिन कार्य है । इसके अतिरिक्त आज भी देश के बहुत से जिले या गाँव ऐसे है। जहाँ दूरभाष सेवा उपलब्ध नहीं है। जबकि प्रत्येक गाँव और कस्बे में स्थापित है। इसलिए पत्र जैसा संतोष फ़ोन या,सएमएस का संदेश नहीं दे सकते।

प्रश्न 2 पत्र धरोहर हो सकते हैं लेकिन, एस.एम.एस. क्यों नहीं ?

उत्तर- आज पत्र अनेक संकलनो के रूप में देखे जा सकते हैं। पंत के दो सौ पत्र बच्चन के नाम और निराला के पत्र हमें धरोहर के रूप में देखने को मिलते हैं। एस .एम.एस.को संभाल कर रखना कठिन है। दूसरा इनके द्वारा अपने विचारों को विस्तृत रूप से प्रस्तुत करना संभव नहीं है।

इसलिए पत्र धरोहर हो सकते है लेकिन एस.एम.एस.नहीं ।

प्रश्न 3 पत्र लेखन की कला के विकास के लिए क्या-क्या प्रयास हुए? लिखिए।

उत्तर- पत्र संस्कृति विकसित करने के लिए स्कूली पाठ्यक्रमों में पत्र लेखन का विषय शामिल किया गया। विश्व डाक संघ की ओर से 16 वर्ष से कम आयु वर्ग के बच्चों के लिए पत्र लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का सिलसिला सन 1972 से शुरू किया गया। महानगरों में संचार साधनों के अत्यधिक विकास के कारण पत्रों की आवाजाही प्रभावित हुई है। किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी पत्रों का खूब प्रचलन है।

प्रश्न 4 लेखक ने डाकिए को देवदूत क्यों कहा है ?

उत्तर- भारत में आज भी अनेक ऐसे स्थानों पर जहाँ टेलीफोन, ई मेल जैसी सुविधाओं का अभाव है । डाकिया पत्र पहुँचाने का काम करता है। उसी के माध्यम से लोग दूरस्थ स्थानों पर रहने वाले अपने सगें- संबंधियों के दुःख.सुख का समाचार प्राप्त करते है। वे लो ग डाकिए को किसी देवदूत से कम नही मानते इसलिए लेखक ने भी डाकिए को देवदूत कहा है।

अतिरिक्त प्रश्न

प्रश्न 1 एस.एम.एस. क्या है ?

उत्तर- सरल मोबाइल संदेश, लघु संदेश स्कीम लिखित रूप में मोबाइल पर भेजा या पाया गया संदेश ।

प्रश्न 2 पत्रों की दुनिया अजीबों गरीब क्यों है ?

उत्तर- आज के युग में भी ये अपनी उपयोगिता बनाए हुए है। यह लिखित होने से स्थायी व अधिक विश्वसनीय है।

प्रश्न 3 पत्र किन किन क्षेत्रों को प्रभावित करते हैं ?

उत्तर- राजनीति, कलाए, साहित्य आदि ।

प्रश्न 4 सैनिकों को पत्रों की उत्सुकता औरों से अधिक क्यों होती है ?

उत्तर- सैनिकों को पत्रों की उत्सुकता औरों से अधिक इसलिए होती है क्योंकि सैनिक देश के दूर- दराज क्षेत्र में रहते हैं जहाँ संदेश के अन्य साधन सुगमता से उपलब्ध नहीं होते। वहाँ भी पत्र उन्हें घर के सुख दुःख की ख़बरें देते रहते हैं ।

प्रश्न 5 चिट्ठी पत्री में कौन सा समास है ?

उत्तर- चिट्ठी और पत्री में द्वंद्व समास है।

1. पत्र जैसा संतोष फोन या एसएमएस का संदेश क्यों नहीं दे सकता?

उत्तर:- पत्र जैसा संतोष फोन या एसएमएस का संदेश नहीं दे सकता क्योंकि फोन , एसएमएस द्वारा केवल कामकाजी बातों को संक्षिप्त रूप से व्यक्त कर सकते हैं। पत्रों द्वारा हम अपने मनोभावों को खुलकर व्यक्त कर सकते हैं। पत्रों से आत्मीयता झलकती है। इन्हें अनुसंधान का विषय भी बनाया जा सकता है। ये कई किताबों का आधार हैं। पत्र राजनीति ,साहित्य तथा कला क्षेत्र में प्रगतिशील आंदोलन के कारण बन सकते हैं। यह क्षमता फोन या एसएमएस द्वारा दिए गए संदेश में नहीं।

2. पत्र को खत, कागद, उत्तरम्, जाबू, लेख, कडिद, पाती, चिट्ठी इत्यादि कहा जाता है। इन शब्दों से संबंधित भाषाओं के नाम बताइए।

उत्तर:-

1. खत - उर्दू
2. कागद - कन्नड़
3. उत्तरम् - तेलूगु
4. जाबू - तेलूगु
5. लेख - तेलूगु
6. कडिद - तमिल
7. पाती - हिन्दी
8. चिट्ठी - हिन्दी
9. पत्र - संस्कृत

3. पत्र लेखन की कला के विकास के लिए क्या-क्या प्रयास हुए? लिखिए।

उत्तर:- पत्र लेखन की कला को विकसित करने के लिए दुनिया के सभी देशों द्वारा पाठयक्रमों में पत्र लेखन का विषय शामिल किया गया। विश्व डाक संघ की ओर से 16 वर्ष से कम आयुवर्ग के बच्चों के लिए पत्र लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का कार्यक्रम सन् 1972 से शुरू किया गया।

4. पत्र धरोहर हो सकते हैं लेकिन एसएमएस क्यों नहीं? तर्क सहित अपना विचार लिखिए।

उत्तर:- पत्र व्यक्ति की स्वयं की हस्तलिपि में होते हैं, जो कि प्रियजन को अधिक संवेदित करते हैं। हम जितने चाहे उतने पत्रों को धरोहर के रूप में समेट कर रख सकते हैं जबकि एसएमएस को मोबाइल में सहेज कर रखने की क्षमता ज़्यादा समय तक नहीं होती है। एसएमएस को जल्द ही भुला दिया जाता है। पत्र देश, काल, समाज को जानने का साधन रहा है। दुनिया के तमाम संग्रहालयों में जानी- मानी हस्तियों के पत्रों का अनूठा संकलन भी है।

5. क्या चिट्ठियों की जगह कभी फैक्स, ई-मेल, टेलीफोन तथा मोबाइल ले सकते हैं?

उत्तर:- पत्रों का चलन न कभी कम हु आ था, न कभी कम होगा। चिट्ठियों की जगह कोई नहीं ले सकता है। पत्र लेखन एक साहित्यिक कला है परन्तु फेक्स , ई-मेल, टेलीफोन तथा मोबाइल जैसे तकनीकी माध्यम केवल काम-काज के क्षेत्र में महत्वपूर्ण हैं। आज ये आवश्यकताओं में आते हैं फिर भी ये पत्र का स्थान नहीं ले सकते हैं।

6. किसी के लिए बिना टिकट सादे लिफ़ाफ़े पर सही पता लिखकर पत्र बैरंग भेजने पर कौन- सी कठिनाई आ सकती है? पता कीजिए।

उत्तर:- बिना टिकट सादे लिफ़ाफ़े पर सही पता लिखकर पत्र बैरंग भेजने पर पत्र को पाने वाले व्यक्ति को टिकट की धनराशि जुर्माने के रूप में देनी होगी।

7. पिन कोड भी संख्याओं में लिखा गया एक पता है, कैसे?

उत्तर:- पिन कोड किसी खास क्षेत्र को संबोधित करता है कि यह पत्र किस राज्य के किस क्षेत्र का है। इसके साथ व्यक्ति का नाम और नंबर आदि भी लिखना पड़ता है।

पिन कोड का पूरा रूप है पोस्टल इंडेक्स नंबर। यह 6 अंको का होता है। हर एक का खास स्थानीय अर्थ होता है, जैसे - 1 अंक राज्य, 2 और 3 अंक उपक्षेत्र, अन्य अंक क्रमशः डाकघर आदि के होते है। इस प्रकार पिन कोड भी संख्याओं में लिखा गया एक पता है।

8. ऐसा क्यों होता था कि महात्मा गांधी को दुनिया भर से पत्र 'महात्मा गांधी-इंडिया' पता लिखकर आते थे?

उत्तर:- महात्मा गांधी को दुनिया भर से पत्र 'महात्मा गांधी- इंडिया' पता लिखकर आते थे क्योंकि महात्मा गांधी अपने समय के सर्वाधिक लोकप्रिय व प्रसिद्ध व्यक्ति थे। वे भारत गौरव थे। गांधी जी देश के किस भाग में रह रहे हैं यह देशवासियो को पता रहता था। अत: उनको पत्र अवश्य मिल जाता था।

• भाषा की बात

9. किसी प्रयोजन विशेष से संबंधित शब्दों के साथ पत्र शब्द जोड़ने से कुछ नए शब्द बनते हैं , जैसे - प्रशस्ति पत्र, समाचार पत्र। आप भी पत्र के योग से बननेवाले दस शब्द लिखिए।

उत्तर:-

1. प्रार्थना पत्र
2. मासिक पत्र
3. छः मासिक पत्र
4. वार्षिक पत्र
5. दैनिक पत्र
6. साप्ताहिक पत्र
7. पाक्षिक पत्र
8. सरकारी पत्र
9. साहित्यिक पत्र
10. निमंत्रण पत्र

10. 'व्यापारिक' शब्द व्यापार के साथ 'इक' प्रत्यय के योग से बना है। इक प्रत्यय के योग से बनने वाले शब्दों को अपनी पाठ्यपुस्तक से खोजकर लिखिए।

उत्तर:- इक प्रत्यय के योग से बनने वाले शब्द -

1. स्वाभाविक
2. साहित्यिक
3. व्यवसायिक
4. दैनिक
5. प्राकृतिक

6. जैविक
7. प्रारंभिक
8. पौराणिक
9. ऐतिहासिक
10.सांस्कृतिक

11. दो स्वरों के मेल से होने वाले परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं;जैसे - रवीन्द्र = रवि + इन्द्र। इस संधि में इ + इ = ई हुई है। इसे दीर्घ संधि कहते हैं। दीर्घ स्वर संधि के और उदाहरण खोजकर लिखिए। मुख्य रूप से स्वर संधियाँ चार प्रकार की मानी गई हैं - दीर्घ, गुण, वृद्धि और यण।
ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, आ आए तो ये आपस में मिलकर क्रमशः दीर्घ आ, ई, ऊ हो जाते हैं, इसी कारण इस संधि को दीर्घ संधि कहते हैं;जैसे - संग्रह + आलय = संग्रहालय, महा + आत्मा = महात्मा। इस प्रकार के कम-से-कम दस उदाहरण खोजकर लिखिए और अपने शिक्षक को दिखाइए।

उत्तर:-

1. गुरूपदेश = गुरू + उपदेश (उ + उ)
2. संग्रहालय = संग्रह + आलय (अ + आ)
3. हिमालय = हिम + आलय (अ + आ)
4. भोजनालय = भोजन + आलय (अ + आ)
5. स्वेच्छा= सु + इच्छा(उ + इ)
6. अनुमति = अनु + मति (उ + अ)
7. रवीन्द्र = रवि + इंद्र (इ + इ)
8. विद्यालय = विद्या + आलय (आ + आ)
9. सूर्य + उदय = सूर्योदय (अ + उ)
10. सदा + एव = सदैव (आ + ए)

पाठ 6

भगवान के डाकिए

रामधारी सिंह दिनकर

कवि पक्षी और बादल का सम्बन्ध मनुष्य से जोड़ते हुए कहता है कि ये दोनों भगवान के डाकिए हैं जिस प्रकार सरकारी डाकिए हमारे लिए हमारे प्रियजनों का सं देश लाते हैं , उसी प्रकार ये प्राकृतिक डाकिए भगवान का संदेश हमारे लिए लाते हैं। ये डाकिए किसी स्थान विशेष के लोगों के लिए संदेश लाते हैं। पक्षी आकाश में यहाँ -वहाँ भ्रमण करते रहते हैं तथा बादल उमड़- घुमड़ कर पृथ्वी का चक्कर लगाते हैं। इनका विचरण देखकर ऐसा लगता है कि ये भगवान के डाकिए हैं जो भगवान का संदेश लेकर सभी देशों अर्थात पूरी पृथ्वी के आस -पास घूम रहे हैं। वे यह संदेश मनुष्य में बाँटते हैं पर अपनी अज्ञानता के कारण मनुष्य उनका संदेश नहीं समझ पाता है। इन प्राकृतिक डाकियों की लाई चिट्ठियों को पर्वत , पेड़-पौधे और नदियाँ पढ़ती हैं। पेड़ -पौधे अपनी वायु , धरती अपनी सुगंध तथा नदियाँ अपना जल किसी सीमा विशेष में रहने वालों के लिए नहीं रखते हैं।

कव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

काव्यांश 1

पक्षी और बादल
ये भगवान के डाकिए हैं
जो एक महादेश से
दूसरे महादेश को जाते हैं।
हम तो समझ नहीं पाते हैं
मगर उनकी लाई चिट्ठियाँ
पेड़ पौधे पानी और पहाड़ बाँचते हैं।

प्रश्न 1 कवि और कविता और कविता का नाम लिखिए

उत्तर- कवि रामधारी सिंह दिनकर और कविता भगवान के डाकिए।

प्रश्न 2 कवि ने डाकिए किसे कहा है?

उत्तर- पक्षी और बादल को।

प्रश्न 3 पक्षी और बादल क्यों डाकिए कहलाते हैं?

उत्तर- क्योंकि पक्षी और बादल ईश्वर का संदेशएकस्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाते हैं ।

प्रश्न 4 इनके संदेश पढ़ने में कौन सक्षम होते हैं ?

उत्तर- पेड़ और पहाड़

प्रश्न 5 महादेश से क्या तात्पर्य है।

उत्तर- एकदेश से दूसरे देश।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. प्रकृति भगवान का संदेश जन जाती है इसके माध्यम से कवि का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर- प्रकृति अर्थात पेड़ पौंधे , नदियाँ पहाड़ आदि भगवान का संदेश अर्थात एक दूसरे के प्रति प्रेम भाव रखना चाहिए इसके माध्यम से कवि का तात्पर्य है कि हमें देश की सीमाओं में बाँध कर नही रहना चाहिए ।

प्रश्न 2 पक्षी और बादल की चिठ्ठियों में पेड़ पौंधे पानी और पहाड़ क्या पढ़ पाते हैं ?

उत्तर- पक्षी और बादल की लाई हुई चिठ्ठियों से पेड़ पौंधे पानी और पहाड़ ईश्वर का दिया विश्वबं धुत्व का संदेश पढ़ लेते हैं वे ये एहसास करते हैं कि हवा व पक्षियों के पंखों से उड़ - उड़ कर आने वाली सुगंध और एकदेश के जल की भाप से बना बादल दूसरे देश में बरस कर विश्वबंधुत्व की भावना का प्रसार करते हैं जबकि मानव सीमाओं के बंधनों में बंधे होने के कारण यह कार्य नहीं कर सकता परन्तु वे बंधन मुक्त होने के कारन यह कार्य स्वतंत्र रूप से कर सकते हैं ।

अतिरिक्त प्रश्न

1. भगवान के डाकिए किसे कहा गया है ?

उत्तर- पक्षी और बादल को

2. एक देश की धरती दूसरे देश की धरती को क्या संदेश भेजती है ?

उत्तर- सुगंध

3. हवा के पर्यायवाची बताइए।

उत्तर- वायु, अनिल, समीर, पवन आदि ।

4. महादेश शब्द में कौन-सा समास है ?

उत्तर- कर्मधारय समास

5.सुगंध शब्द का विलोम कैसे बनाया जा सकता है ?

उत्तर- सु को हटाकर उसकी जगह दुर् उपसर्ग लगाकर ।

1. कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए क्यों बताया हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए इसलिए कहा है क्योंकि जिस प्रकार डाकिए संदेश लाने का काम करते हैं, उसी प्रकार पक्षी और बादल भगवान का संदेश हम तक पहुँचाते हैं। उनके लाए संदेश को हम भले ही न समझ पाए , पर पेड़, पौधे, पानी और पहाड़ उसे भली प्रकार पढ़- समझ लेतें हैं। जिस तरह बादल और पक्षी दूसरे देश में जाकर भी भेदभाव नहीं करते उसी तरह हमें भी आचरण करना चाहिए।

2. पक्षी और बादल द्वारा लाई गई चिट्ठियों को कौन-कौन पढ़ पाते हैं? सोच कर लिखिए।

उत्तर:- पक्षी और बादल द्वारा लायी गई चिट्ठियों को पेड़-पौधे, पानी और पहाड़ पढ़ पाते हैं।

3. किन पंक्तियों का भाव है :

(क) पक्षी और बादल प्रेम, सद्भाव और एकता का संदेश एक देश से दूसरे देश को भेजते हैं।

(ख) प्रकृति देश-देश में भेद भाव नहीं करती। एक देश से उठा बादल दूसरे देश में बरस जाता है।

उत्तर:-

(क) पक्षी और बादल,
ये भगवान के डाकिए हैं,
जो एक महादेश से
दूसरे महादेश को जाते हैं।
हम तो समझ नहीं पाते हैं
मगर उनकी लाई चिट्ठियाँ
पेड़, पौधें, पानी और पहाड़
बाँचते हैं।

(ख)
और एक देश का भाप
दूसरे देश में पानी
बनकर गिरता है।

4. पक्षी और बादल की चिट्ठियों में पेड़-पौधे, पानी और पहाड़ क्या पढ़ पाते हैं?

उत्तर:- कवि का कहना है कि पक्षी और बादल भगवान के डाकिए हैं। जिस प्रकार डाकिए संदेश लाने का काम करते हैं, उसी प्रकार पक्षी और बादल भगवान का संदेश लाने का काम करते हैं। पक्षी और बादल की चिट्ठियों में पेड़-पौधे, पानी और पहाड़ भगवान के भेजे एकता और सद्भावना के संदेश को पढ़ पाते हैं। इसपर अमल करते नदियाँ समान भाव से सभी लोगों में अपने पानी को बाँटती है। पहाड़ भी समान रूप से सबके साथ खड़ा होता है। पेड़- पौधें समान भाव से अपने फल, फूल व सुगंध को बाँटते हैं, कभी भेदभाव नहीं करते।

5. "एक देश की धरती दूसरे देश को सुगंध भेजती है" - कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- एक देश की धरती अपने सुगंध व प्यार को पक्षियों के माध्यम से दूसरे देश को भेजकर सद्भावना का संदेश भेजती है। धरती अपनी भूमि में उगने वाले फूलों की सुगंध को हवा से ,पानी को बादलों के रूप में भेजती है। हवा में उड़ते हुए पक्षियों के पंखों पर प्रेम-प्यार की सुगंध तैरकर दूसरे देश तक पहुँच जाती है। इस प्रकार एक देश की धरती दूसरे देश को सुगंध भेजती है।

6. पक्षियों और बादल की चिट्ठियों के आदान-प्रदान को आप किस दृष्टि से देख सकते हैं?
उत्तर:- पक्षी और बादल की चिट्ठियों के आदान- प्रदान को हम प्रेम , सौहार्द और आपसी सद्भाव की दृष्टि से देख सकते हैं। यह हमें यहीं संदेश देते हैं।

7. आज विश्व में कहीं भी संवाद भेजने और पाने का एक बड़ा साधन इंटरनेट है। पक्षी और बादल की चिट्ठियों की तुलना इंटरनेट से करते हुए दस पंक्तियाँ लिखिए।
उत्तर:- पक्षी और बादल प्रकृति के अनुसार काम करते हैं किंतु , इंटरनेट मनुष्य के अनुसार काम करते है। बादल का कार्य प्रकृति-प्रेमी को प्रभावित करती है किंतु, इंटरनेट विज्ञानं प्रेमी को प्रभावित करती है। पक्षी और बादल का कार्य धीमी गति से होता है किंतु, इंटरनेट का कार्य तीव्र गति से होता है। इंटरनेट एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक बात पहुँचाने का ही सरल तथा तेज माध्यम है। इसके द्वारा हम किसी व्यक्तिगत रायों को जान सकते हैं किन्तु पक्षी और बादल की चिट्ठियाँ हमें भगवान का सं देश देते हैं। वे बिना भेदभाव के सारी दुनिया में प्रेम और एकता का संदेश देते हैं। हमें भी इंटरनेट के माध्यम से प्रेम और एकता और भाईचारा का संदेश विश्व में फैलाना चाहिए।
8. 'हमारे जीवन में डाकिए की भूमिका' क्या है? इस विषय पर दस वाक्य लिखिए।
उत्तर:- डाकिया' भारतीय सामाजिक जीवन की एक आधारभूत कड़ी है। डाकिया द्वारा डाक लाना , पत्रों का बेसब्री से इंतज़ार , डाकिया से ही पत्र पढ़वाकर उसका जवाब लिखवाना इत्यादि तमाम महत्त्वपूर्ण पहलू हैं, जिन्हें नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता। उसके परिचित सभी तबके के लोग हैं। हमारे जी वन में डाकिए की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। भले ही अब कंप्यूटर और इ- मेल का ज़माना आ गया है पर, डाकिया का महत्त्व अभी भी उतना ही बना हुआ है जितना पहले था।
कई अन्य देशों ने होम-टू-होम डिलीवरी को खत्म करने की तरफ कदम बढ़ाये हैं , या इसे सुविधा-शुल्क से जोड़ दिया है, वहीं भारतीय डाकिया आज भी सुबह से शाम तक चलता ही रहता है। डाकिया कम वेतन पाकर भी अपना काम अत्यन्त परिश्रम और लगन के साथ संपन्न करता है। गर्मी , जाड़ा और बरसात का सामना करते हुए वह समाज की सेवा करता है। भारतीय डाक प्रणाली की गुडविल बनाने में उनका सर्वाधिक योगदान माना जाता है।

पाठ 7

क्या निराश हुआ जाए - हजारी प्रसाद द्विवेदी

आज कल के समाचार पत्रों में छप रही चोरी , भ्रष्टाचारी, हिंसा ,बेईमानी आदि की खबरों को पढ़ने से समाज में निराशा का वातावरण बना है। उस पर लेखक ने चिंता व्यक्त की। यद्यपि समाज में अच्छे और बुरे दोनों काम करने वाले लोग हैं। पर अच्छे काम करने वालों से प्रेरणा लेकर आशावादी होना चाहिए।
गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-
गद्यांश 1
यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले.भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ व फरेब का रोजगार करने वाले फल फूल रहे हैं । ईमानदारी को मूखर्ता का पयार्य समझा जाने लगा है। सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हि स्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है। भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया है। उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक गुण स्थिर भाव से बैठा हुआ है। वही चरम और परम है।

1. आजकल कैसा माहौल चल रहा है ?

उत्तर- आजकल निराशाजनकमाहौल चल रहा है ।

2. आजकल कौन फल फूल रहे हैं ?

उत्तर- आजकल झूठ और फरेब का व्यापार करने वाले लोग फल फूल रहे हैं

3. ईमानदारी का पर्याय किसे समझा जाने लगा है ?

उत्तर- ईमानदारी का पर्याय मूर्खता को समझा जाने लगा है ।

4. किसके बारे में लोगों की आस्था हिलने लगी है ?

उत्तर- जीवन के मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था हिलने लगी है ।

5. भारतवर्ष में चरम और परम इसे माना गया है ?

उत्तर- मानव के भीतर समाये महान गुणों को चरम और परम माना गया है ।

गद्यांश 2

दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करके उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्घाटन को ,एक मात्र कर्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई में उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है। सैंकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं जिन्हें उजागर करने से लोक चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है ।

1 .पाठ और लेखक का नाम लिखिए ।

उत्तर- क्या निराश हुआ जाए, हजारी प्रसाद द्विवेदी

2. दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात क्यों नहीं है ?

उत्तर- क्योंकि दोषों को उजागर करने से ही उनको दूर किया जा सकता है तथा स्वस्थ समाज की नीव राखी जा सकती है ।

3 .लेखक को बुराई कहाँ मालूम पड़ती है ?

उत्तर- गुणों को उजागर न करने में लेखक को बुराई नजर आती है ।

4 .बुराई में रस लेने का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर- बुराई में रस लेने का अर्थ है कि किसी की कमियों का मजाक नहीं बनाना चाहिए ।

5.अच्छी घटनायें उजागर करने का क्या परिणाम होता है ?

उत्तर- अच्छी घटनाएँ उजागर करने से समाज में अच्छाई का प्रचार होता है और सकारात्मक दृष्टि कोण पैदा होता है।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न1. लेखक ने स्वीकार किया है कि लोगों ने उन्हें भी धोखा दि या है । फिर भी वह निराश नही है। आपके विचार से इस बात का क्या कारण हो सकता है ?

उत्तर-लेखक का कहना कि आज भी भारत वर्ष में सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए है। रेलवे स्टेशन पर टिकट बाबू के द्वारा लेखक को ढूढ़कर नब्बे रुपये वापस करना तथा बस कंडक्टर द्वारा लेखक के बच्चों के लिए दूध और पानी लाना इसी बात प्रमाण है। इसलिए धोखा दिए जाने पर भी लेखक निराश नही है।

प्रश्न 2 लेखक ने लेख का शीर्षक क्या निराश हुआ जाए क्यों रखा होगा क्या आप इससे भी बेहतर शीर्षक सुझा सकते है ?

उत्तर- क्या निराश हुआ जाए पाठ शीर्षक से हम पूर्णरूप से सहमत है आज के युग में समाचार . पत्रों में भ्रष्टाचारए बेईमानी आदि के समाचारों को पढ़कर हमें निराश नही होना चाहिए। समाज में अभी भी सच्चाई और ईमानदारी है तथा मनुष्यता समाप्त नही हुई है। आशा की ज्योति बुझी नही है । अत : निराश होने की आवश्कता नही है।

अन्य शीर्षक ..... आशावादी दृष्टि कोण ।

प्रश्न 3. लेखक कंडक्टर के चरित्र से क्यों प्रभावित हुआ ?

उत्तर- बस कंडक्टर के चरित्र की प्रमुख विशेषता कर्तव्य पालन एवं दया भावना थी। उसने इंसानियत का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया बस ख़राब हो जाने के बाद कंडक्टर दूसरी बस लेने के लिए बस अड्डे चला गया। नई बस लेकर आते समय वह एक लोटे में पानी और दूध भी लेता आया। उसके व्यवहार से लेखक बहुत प्रभावित हुआ।उसे लगा कि अभी भी दया.भाव और मनुष्यता जीवित है।

प्रश्न4. क्या निराश हुआ जाए पाठ का मूल भाव क्या है ?

उत्तर- मनुष्य को कभी भी निराश नही होना चाहिए। समाज में अगर निराशा और अराजकता से काम करने वाले लोग है तो आशावादी दृष्टि कोण रखने वालो की भी कमी नही है।

अतिरिक्त प्रश्न

1 जीवन के महान मूल्य क्या हैं ? उन जीवन मूल्यों को किस प्रकार के कार्यों ने दबा दिया है ?

उत्तर- जीवन के महान मूल्य अपने काम के प्रति सच्चाईए ईमानदारी और कर्तव्य निष्ठा आदि हैं। इन जीवन मूल्यों को झूठए तथा फरेब का रोजगार करने वाले कामों ने दबा दिया है।

2 भारतवर्ष के लोग किन.किन भौतिक वस्तुओं के संग्रह को अधिक महत्त्व नहीं देते हैं ?

उत्तर- भारतवर्ष के लोग काम, क्रोध, लोभ और मोह आदि गुणों को संतुष्ट करने वाले कामों को अधिक महत्त्व नहीं देते हैं ।

3 भारतीय लोगो में किस बात को लेकर ऊपरी वर्ग के व्यक्तियों के प्रति भ्रान्तियाँ है ?

उत्तर- भारतीय लोगो में सेवा, ईमानदारी, सच्चाई ओर आध्यात्मिकता के मूल्यों को लेकर ऊपरी वर्ग के व्यक्तियों के प्रति भ्रांतियाँ है ।

1. लेखक ने स्वीकार किया है कि लोगों ने उन्हें भी धोखा दिया है फिर भी वह निराश नहीं हैं। आपके विचार से इस बात का क्या कारण हो सकता है?

उत्तर:- लेखक ने अपने व्यक्ति गत अनुभवों का वर्णन करते हुए कहा है कि उसने धोखा भी खाया है परंतु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज मिलती है। पर उसका मानना है कि अगर वो इन धोखों को याद रखेगा तो उसके लिए विश्वास करना बेहद कष्टकारी होगा और ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण उनकी सहायता की है ,निराश मन को ढाँढस दिया है और हिम्मत बँधाई है।

टिकट बाबू द्वारा बचे हुए पैसे लेखक को लौटाना, बस कंडक्टर द्वारा दूसरी बस व बच्चों के लिए दूध लाना आदि ऐसी घटनाएँ हैं। इसलिए उसे विश्वास है कि समाज में मानवता ,प्रेम, आपसी सहयोग समाप्त नहीं हो सकते।

2. दोषों का पर्दाफ़ाश करना कब बुरा रूप ले सकता है?

उत्तर:- दोषों का पर्दाफ़ाश करना तब बुरा रूप ले सकता है जब हम किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करके उसमें रस लेते है या जब हमारे ऐसा करने से वे लोग उग्र रूप धारण कर किसी को हानि पहुँचाए।

3. आजकल के बहुत से समाचार पत्र या समाचार चैनल 'दोषों का पर्दाफ़ाश' कर रहे हैं। इस प्रकार के समाचारों और कार्यक्रमों की सार्थकता पर तर्क सहित विचार लिखिए?

उत्तर:- इस प्रकार के पर्दा फाश से समाज में व्याप्त बुराईयों से , अपने आस-पास के वातावरण तथा लोगों से अवगत हो जाते हैं और इसके कारण समाज में जागरूकता भी आती है साथ ही समाज समय रहते ही सचेत और सावधान हो जाता हैं।

4. निम्नलिखित के संभावित परिणाम क्या-क्या हो सकते हैं? आपस में चर्चा कीजिए, जैसे - "ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है।"परिणाम-भ्रष्टाचार बढ़ेगा।

1. "सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है।" .....

2. "झूठ और फरेब का रोज़गार करनेवाले फल-फूल रहे हैं।" .....

3. "हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम।" .....

उत्तर:- 1. "सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। - तानाशाही बढ़ेगी

2. "झूठ और फरेब का रोज़गार करनेवाले फल-फूल रहे हैं।" - भ्रष्टाचार बढ़ेगा

3. "हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम।" - अविश्वास बढ़ेगा

5. लेखक ने लेख का शीर्षक 'क्या निराश हुआ जाए' क्यों रखा होगा? क्या आप इससे भी बेहतर शीर्षक सुझा सकते हैं?

उत्तर:- लेखक ने इस लेख का शीर्ष क 'क्या निराश हुआ जाए' उचित रखा है। आजकल हम अराजकता की जो घटनाएँ अपने आसपास घटते देखते रहते हैं। जिससे हमारे मन में निराशा भर जाती है। लेकिन लेखक हमें उस समय समाज के मानवीय गुणों से भरे लोगों को और उनके कार्यों को याद करने कहा हैं जिससे हम निराश न हो।

इसका अन्य शीर्षक 'हम निराशा से आशा' भी रख सकते हैं।

6. यदि 'क्या निराश हुआ जाए' के बाद कोई विराम चिहन लगाने के लिए कहा जाए तो आप दिए गए चिह्नों में से कौन-सा चिहन लगाएँगे? अपने चुनाव का कारण भी बताइए - , । . । ? ; - , ... ।

उत्तर:- 'क्या निराश हुआ जाए' के बाद मैं प्रश्न चिन्ह 'क्या निराश हुआ जाए?' लगाना उचित समझता हूँ। समाज में व्याप्त बुराइयों के बीच रहते हुए भी जीवन जीने के लिए सकारात्मक दृष्टि जरूरी है।

7. "आदर्शों की बातें करना तो बहुत आसान है पर उन पर चलना बहुत कठिन है। " क्या आप इस बात से सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर:- "आदर्शों की बातें करना तो बहुत आसान है पर उन पर चलना बहुत कठिन है। " - मैं इस कथन से सहमत हूँ क्योंकि व्यक्ति जब आदर्शों की राह पर चलता है तब उसे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। असामाजिक तत्वों का अकेले सामना करना पड़ता है।

• भाषा की बात

8. दो शब्दों के मिलने से समास बनता है। समास का एक प्रकार है - द्वंद्व समास।

इसमें दोनों शब्द प्रधान होते हैं। जब दोनों भाग प्रधान होंगे तो एक- दूसरे में द्वंद्व (स्पर्धा, होड़) की संभावना होती है। कोई किसी से पीछे रहना नहीं चाहता,

जैसे - चरम और परम = चरम-परम, भीरु और बेबस = भीरू-बेबस। दिन और रात = दिन-रात।

'और' के साथ आए शब्दों के जोड़े को 'और' हटाकर (-) योजक चिह्न भी लगाया जाता है। कभी- कभी एक साथ भी लिखा जाता है।

द्वंद्व समास के बारह उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर:-

सुख और दुख	सुख-दुख
भूख और प्यास	भूख-प्यास
हँसना और रोना	हँसना-रोना
आते और जाते	आते-जाते
राजा और रानी	राजा-रानी
चाचा और चाची	चाचा-चाची
सच्चा और झूठा	सच्चा-झूठा
पाना और खोना	पाना-खोना
पाप और पुण्य	पाप-पुण्य
स्त्री और पुरूष	स्त्री-पुरूष
राम और सीता	राम-सीता
आना और जाना	आना-जाना

9. पाठ से तीनों प्रकार की संज्ञाओं के उदाहरण खोजकर लिखिए।

उत्तर:- जातिवाचक संज्ञा : बस, यात्री, मनुष्य, ड्राइवर, कंडक्टर,हिंदु , मुस्लिम, आर्य, द्रविड़, पति, पत्नी आदि।

भाववाचक संज्ञा : ईमानदारी, सच्चाई, झूठ, चोर, डकैत आदि।

पाठ 8

यह सबसे कठिन समय नहीं -जया जादवानी

इस पाठ में कवयित्री मन में आशावादी विचारधारा को लेकर चलने के लिए प्रेरित कर रही है। वे अनेक ऐसे उदहारण प्रस्तुत कर रही हैं, जिनमें निराश न होकर आशा की चमक दिखाई देती है ।

काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

नहीं यह सबसे कठिन समय नहीं !
अभी भी दबा है चिड़िया की
चोंच में तिनका
और वह उड़ने की तैयारी में है !
अभी भी झरती हुई पत्ती
थामने को बैठा है एक हाथ

1 चिड़िया ने चोंच में क्या दबा रखा है ?

उत्तर- तिनका

2 झरती हुई पत्ती को थामने के लिए कौन तैयार है ?

उत्तर- एक हाथ

3. वह तिनकों का क्या करती होगी ?

उत्तर- वह तिनकों से अपने रहने के लिए घोंसला बनाती होगी ।

4. इस पद्यांश के कवि या कवयित्री का नाम लिखिए।

उत्तर- जया जादवानी

काव्यांश 2

अभी कहा जाता है
उस कथा का आखिरी हिस्सा
जो बूढ़ी नानी सुना रही सदियों से
दुनिया के तमाम बच्चों को
अभी आती है एकबस
अन्तरिक्ष के पार की दुनिया से
लाएगी बचे हुए लोगों की खबर !
नही यह सबसे कठिन समय नहीं ।

1. कहानी कौन सुना रहा है ?

उत्तर- कहानी बूढ़ी नानी सुना रही है ।

2. कहानी का कौन सा हिस्सा बाकी है ?

उत्तर- कहानी का यह हिस्सा बाकि है कि आज भी ईमानदारी और सच्चाई बची है और हमेशा रहेगी।

3. अन्तरिक्ष से आने वाली बस किसका समाचार लाती है ?

उत्तर- अन्तरिक्ष से आने वाली बस ये समाचार लाती है कि कोई समय ख़राब नहीं होता तुम कभी भी अपना कम शुरू कर सकते हो।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. यह कठिन समय नही है यह बताने के लिए कविता में कौन- कौन से तर्क प्रस्तुत किए गए है ? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- यह कठिन समय नही है, यह बताने के लिए कविता में कवयित्री ने अनेक तर्क दिए है। वह कहती है कि अभी भी चिड़िया की चोंच में तिनका दबा हु आ है। उसे अभी सहारा प्राप्त है। पेड़ से झड़ने वाली पत्तियों को थामने के लिए किसी व्यक्ति विशेष का हाथ आगे आने तैयार है। आज के समय में भी व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को बताता है कि अभी का समय कोई कठिन समय नही है ।

प्रश्न 2. यह सबसे कठिन समय नहीं कविता का मूल उद्देश्य क्या है ?

उत्तर- कविता का मूल उद्देश्य है ..... जीवन में किसी भी समय को कठिन न समझे । जीवन का कोई भी क्षण कठिन नही होता व्यक्ति अगर प्रयत्न करेए तो उसे प्रत्येक दुविधा से निकलने का अवसर मिल जाता है उसे विश्वास रखना चाहिए कि अँधेरे के बाद उजाला अवश्य होता है। इसी तरह कठिन समय के बाद अच्छा समय भी जल्दी आ जाता है। कठिनता मानव ह्रदय की सबसे बड़ी कमजोरी है।

प्रश्न 3 सूरज डूबने का वक्त हो गया पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- उक्त पंक्ति हमारे वापस आने का संदेश देती है। यह हमें बताती है कि घर के बाहर रहने का समय समाप्त हुआ, अब हमें घर वापस लौट जाना चाहिए। यह समय घूमने- फिरने का नहीं अपितु घर परिवार में आराम से बैठने का है। अत: समय रहते घर वापस आ जाओ।

अतिरिक्त प्रश्न

1 -पद्यांश में किस प्राचीन परंपरा की ओर संकेत किया गया है ?

उत्तर- संयुक्त परिवार में दादा- दादी द्वारा बच्चों को शाम के समय कहानी सुनाने की ओर संकेत किया गया है ।

2. चिड़िया चोंच में तिनका दबाए कहाँ उड़ने को तैयार है ?

उत्तर- सुरक्षित स्थान पर

3. बस कहाँ से और किनकी खबर लाएगी ?

उत्तर- अंतरिक्ष की दुनिया से बचे हुए लोगों की कुशलता का समाचार लाएगी ।

4 . यह कविता क्या संदेश देती है।

उत्तर- निराशा से बचने का संदेश देती है ।

1. "यह कठिन समय नहीं है?" यह बताने के लिए कविता में कौन-कौन से तर्क प्रस्तुत किए गए हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- "यह कठिन समय नहीं है?" - यह बताने के लिए कवि ने निम्नलिखित तर्क दिए हैं -

1. अभी भी चिड़िया चोंच में तिनका दबाए उड़ने को तैयार है क्योंकि वह नीड़ का निर्माण करना चाहती है।

2. एक हाथ झड़ती हुई पत्ती को सहारा देने के लिए बैठा है।

3. अभी भी एक रेलगाड़ी गंतव्य अर्थात् पहुँचने वाले स्थान तक जाती है।

4. नानी की कथा का आखिरी हिस्सा बाकी है।

5. अभी भी एक बस अंतरिक्ष के पार की दुनिया से बचे हुए लोगों की खबर लाएगी।

6. अभी भी कोई किसी को कहता है कि जल्दी आ जाओ, सूरज डूबने का समय हो चला है।

2. चिड़िया चोंच में तिनका दबाकर उड़ने की तैयारी में क्यों है ? वह तिनकों का क्या करती होगी? लिखिए।

उत्तर:- चिड़िया अपनी चोंच में तिनका दबाकर उड़ने की तैयारी में है क्योंकि सूरज डूबने का समय हो चुका है उसके डूबने से पहले चिड़िया अपने लिए घोंसला बनाना चाहती है। वह तिनके से अपने लिए घोंसला तैयार कर उसमें अपने बच्चों के साथ रहेगी। घोंसला उसके परिवार को सुरक्षा प्रदान करता है।

3. कविता में कई बार 'अभी भी' का प्रयोग करके बातें रखी गई है। अभी भी का प्रयोग करते हुए तीन वाक्य बनाइए और देखिए उसमे लगातार , निरंतर,बिना रुके चलनेवाले किसी कार्य का भाव निकल रहा है या नहीं?

उत्तर:- 1. मुझे अभी भी सिरदर्द है।

2. अभी भी गाँव में बच्चे कई मील पैदल चलकर स्कूल जाते हैं।

3. हम अभी भी अंग्रेजी सीख रहे हैं।

तीनों वाक्यों में निरंतरता का भाव निकल रहा है।

4. "नहीं" और "अभी भी" को एक साथ प्रयोग करके तीन वाक्य लिखिए और देखिए 'नहीं' 'अभी भी' के पीछे कौन-कौन से भाव छिपे हो सकते हैं?

उत्तर:-

(i) नहीं, अभी भी मेरी परीक्षा की तैयारी कम है।

(ii) नहीं, अभी भी इमारत का निर्माण नहीं हुआ है।

(iii) नहीं, अभी भी मेहमान के आने में देर हैं।

अभी भी, निरंतर चलने वाली प्रक्रिया का बोध कराता है तथा नहीं से कार्य के न होने का पता चलता है।

5. आप जब भी घर से स्कूल जाते हैं कोई आपकी प्रतीक्षा कर रहा होता है। सूरज डूबने का समय भी आपको खेल के मैदान से घर लौट चलने की सूचना देता है कि घर में कोई आपकी प्रतीक्षा कर रहा है - प्रतीक्षा करनेवाले व्यक्ति के विषय में आप क्या सोचते हैं? अपने विचार लिखिए।

उत्तर:- प्रतीक्षा करनेवाले व्यक्ति हमारे प्रियजन ही हो सकते हैं। मेरे तो दिन की शुरुआत और अंत माँ के प्यार से ही होता है। सुबह में प्यार से माथा चूमकर जगाने में माँ का प्यार, नाश्ते में बनी पसंद की चीज़ों में माँ का प्यार , भले-बुरे की डाँट में माँ का प्यार, सूरज डूबने के साथ खेल के मैदान से घर लौट चलने की सूचना देता माँ का प्यार तथा जीने का सलीका सिखाता माँ का प्यार।

पाठ 9

कबीर की साखियाँ

इन साखियों में जीवन मूल्यों को उजागर किया गया है । इनमें बताया गया है कि एक गाली देने से यह अनेक गालियों में बदल जाती है क्योंकि एक का विलोम अनेक होता है और माला के फेरने की बजाय हमें मन के दुर्गुणों को दूर करना चाहिए।

काव्य पंक्तियाँ पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

जाति ने पूछो साध की। पूछ लीजिए ज्ञान ।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान ।।
आवत गारी एक है, उलटत होइ अनेक ।
कह कबीर नहीं उलटिए, वही एक की एक।।

1 कवि ने साधु की जाति न पूछने के लिए क्यों कहा है?

उत्तर- क्योंकि साधु किसी भी जाति कुछ भी हो हमें केवल उसके ज्ञान को प्रा प्त करने की चेष्टा करनी चाहिए।

3- हमें म्यान का मोल क्यों नहीं करना चाहिए?

उत्तर- क्योंकि जब तलवार खरीदी जाती है तो उसकी धार देखी जाती है जोकि उसका गुण है इस लिए हमें म्यान का मोल नहीं करना चाहिए जिसकी कोई महत्ता नहीं होती।

4-हमें गाली का जवाब गाली से क्यों नहीं देना चाहिए?

उत्तर- इसलिए नहीं देना चाहिए क्योंकि बुराई को फ़ैलाने से बचना चाहिए अगर गाली का जवाब गाली से दिया जाएगा तो वह कभी समाप्त नहीं होगी ।

2

माला तो कर में फिरै,जीभि फिरै मुख मांहि।
मनुवां तो दहुँ दिसि फिरै,यह तौ सुमिरन नाहिं ।।
कबीर घास न नींदिए,जो पाऊं तलि होई ।
उड़ि पडै जब आँखि मेंए खरी दुहेली होई ।।

1-मनुष्य दिखावे की भक्ति किस रूप में करता है ?

उत्तर- मनुष्य दिखावे के लिए मुख से तो ईश्वर का नाम जपता है परन्तु उसका मन स्थिर न रहकर सांसारिक मोह माया में भटकता रहता है।

2- कवि सच्चा सुमिरन किसे नहीं मानता है ?

उत्तर- कवि के अनुसार जो केवल दिखावे के लिए भगवा न का नाम लेता है उसे सच्चा सुमिरन नहीं माना जा सकता।

3 मनुवां तो दहुँ दिसि फिरै, से क्या आशय है ।

उत्तर- इस पंक्ति का आशय है कि मनुष्य का मन ईश्वर की भक्ति करते हुए भी सांसारिकता में लिप्त रहता है ।

4 . कवि घास के तिनके की भी निंदा करने से क्यों मना करता है ?

उत्तर- क्योंकि तिनका बहुत छोटा होने के बाद भी आँख में पड़ने के बाद पीड़ा का कारण बन जाता है इसलिए हमें छोटी चीजों के महत्व को समझते हुए उनकी निंदा नहीं करनी चाहिए ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 तलवार का महत्व होता है म्यान का नहीं उक्त उदा हरण से कबीर क्या कहना चाहते है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कबीर के अनुसार हमें वस्तु को महत्व देना चाहिए न कि वस्तु के डिब्बे को। कबीर इसी प्रकार गुणों को महत्व देने की बात करते है। उनके अनुसार व्यक्ति का अपना कोई अस्तित्व नहीं है जब तक कि उसमें गुणों का संचार न हो।

प्रश्न 2. कबीर घास की निंदा करने से क्यों मना करते है ?

उत्तर- कबीर कहते है कि हमें कमज़ोर लोगों की निंदा नहीं करनी चाहिए क्योंकि जागृत होने के बाद ये लोग ही कष्ट देने का कारण बन सकते हैं।

प्रश्न 3. कबीर संत थे या कवि ? स्पष्ट कीजिए

उतर कबीरदा स एक संत थे। उन्होंने संतों की परम्परा का निर्वाह करते हुए लोगों को सद्विचार प्रदान किए। नि :संदेह वे कवि भी थे। लेकिन उनकी संत प्रवृतियों के समक्ष उनकी कवि वृति छिप जाती है ।

प्रश्न 4 कबीर की भाषा पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- कबीर की भाषा साधारण बोलचाल की भा षा है। उन्हें वाणी का डिक्टेटर भी कहा जाता है। कबीर की भाषा में अरबी , फारसी खड़ी बोली , पंजाबी आदि भाषाओँ के शब्द देखने को मिलते हैं। इसलिए कबीर की भाषा को सधुक्कड़ी या खिचड़ी भाषा भी कहते है।

अतिरिक्त प्रश्न

प्रश्न. हमें विद्वान लोगों के ज्ञान और जाति में से किसका सम्मान करना चाहिए ?

उत्तर- हमें विद्वान लोगों के ज्ञान का सम्मान करना चाहिए न कि जाति का।

प्रश्न. कबीर जी ने गाली देने के बारे में क्या बताया है ?

उत्तर- कबीर जी ने गाली देने वाले को समझाया है कि हमें कभी भी गाली का जवाब गाली सेनहीं देना चाहिए क्योंकि इसका कोई अंत नहीं होता ।

प्रश्न. कबीर ने किसको फेरने पर जोर दिया है ?

उत्तर- मन को फेरने पर जोर दिया है ।

प्रश्न. घास के तिनके की निंदा के माध्यम से किसकी ओर संकेत किया गया है ?

उत्तर- कमज़ोर और असहाय व्यक्ति की ओर

प्रश्न. किस तरह के व्यक्ति पर लोग दया करते हैं ?

उत्तर- सज्जन और अहंकार से रहित व्यक्ति पर सभी दया करते हैं ।

1. 'तलवार का महत्त्व होता है, म्यान का नहीं' - उक्त उदाहरण से कबीर क्या कहना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- 'तलवार का महत्व होता है , म्यान का नहीं' से कबीर यह कहना चाह ते हैं कि असली चीज़ की कद्र की जानी चाहिए। दिखावटी वस्तु का कोई महत्त्व नहीं होता। इसी प्रकार किसी व्यक्ति की पहचान अथवा उसका मोल उसकी काबलियत के अनुसार तय होता है न कि कुल , जाति, धर्म आदि से। उसी प्रकार ईश्वर का भी वास्तविक ज्ञान जरुरी है। ढोंग- आडंबर तो म्या न के समान निरर्थक है। असली बह्रम को पहचानो और उसी को स्वीकारो।

2. पाठ की तीसरी साखी- जिसकी एक पंक्ति हैं 'मनुवाँ तो दहुँ दिसि फिरै , यह तो सुमिरन नाहिं ' के द्वारा कबीर क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर:- कबीरदास जी इस पंक्ति के द्वारा यह कहना चाहते हैं कि भगवान का स्मरण एकाग्रचित होकर करना चाहिए। इस साखी के द्वारा कबीर केवल माला फेरकर ईश्वर की उपासना करने को ढोंग बताते हैं।

3. कबीर घास की निंदा करने से क्यों मना करते हैं। पढ़े हुए दोहे के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- घास का अर्थ है पैरों में रहने वाली तुच्छ वस्तु। कबीर अपने दोहे में उस घास तक की निंदा करने से मना करते हैं जो हमारे पैरों के तले होती है। कबीर के दोहे में 'घास' का विशेष अर्थ है। यहाँ घास दबे-कुचले व्यक्तियों की प्रतीक है। कबीर के दोहे का संदेश यही है कि व्यक्ति या प्राणी चाहे वह जितना भी छोटा हो उसे तु च्छ समझकर उसकी निंदा नहीं करनी चाहिए। हमें सबका सम्मान करना चाहिए।

4. मनुष्य के व्यवहार में ही दूसरों को विरोधी बना लेनेवाले दोष होते हैं। यह भावार्थ किस दोहे से व्यक्त होता है?

उत्तर:- "जग में बैरी कोइ नहीं, जो मन सीतल होय।
या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।।

5. "या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।"
"ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय।"

इन दोनों पंक्तियों में 'आपा' को छोड़ देने या खो देने की बात की गई है। 'आपा' किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है? क्या 'आपा' स्वार्थ के निकट का अर्थ देता है या घमंड का?

उत्तर:- "या आपा को . . . . . आपा खोय।" इन दो पंक्तियों में 'आपा' को छोड़ देने की बात की गई है। यहाँ 'आपा' अंहकार के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। 'आपा' घमंड का अर्थ देता है।

6. आपके विचार में आपा और आत्मविश्वास में तथा आपा और उत्साह में क्या कोई अंतर हो सकता है? स्पष्ट करें।

उत्तर:- आपा और आत्मविश्वास में तथा आपा और उत्साह में अंतर हो सकता है -

1. आपा और आत्मविश्वास - आपा का अर्थ है अहंकार जबकि आत्मविश्वास का अर्थ है अपने ऊपर विश्वास।

2. आपा और उत्साह - आपा का अर्थ है अहंकार जबकि उत्साह का अर्थ है किसी काम को करने का जोश।

7. सभी मनुष्य एक ही प्रकार से देखते- सुनते हैं पर एकसमान विचार नहीं रखते। सभी अपनी- अपनी मनोवृत्तियों के अनुसार कार्य करते हैं। पाठ में आई कबीर की किस साखी से उपर्युक्त पंक्तियों के भाव मिलते हैं, एकसमान होने के लिए आवश्यक क्या है? लिखिए।

उत्तर:- "आवत गारी एक है, उलटत होइ अनेक।
कह कबीर नहिं उलटिए, वही एक की एक।।"

मनुष्य के एक समान होने के लिए सबकी सोच का एक समान होना आवश्यक है।

8. कबीर के दोहों को साखी क्यों कहा जाता है?

उत्तर:- कबीर के दोहों को साखी इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनमें श्रोता को गवाह बनाकर साक्षा त् ज्ञान दिया गया है। कबीर समाज में फैली कुरीतियों , जातीय भावनाओं, और बाह्य आडंबरों को इस ज्ञान द्वारा समाप्त करना चाहते थे।

• भाषा की बात

9. बोलचाल की क्षेत्रीय विशेषताओं के कारण शब्दों के उच्चारण में परिवर्तन होता है जैसे वाणी शब्द बानी बन जाता है। मन से मनवा, मनुवा आदि हो जाता है। उच्चारण के परिवर्तन से वर्तनी भी बदल जाती है। नीचे कुछ शब्द दिए जा रहे हैं उनका वह रूप लिखिए जिससे आपका परिचय हो।

ग्यान, जीभि, पाऊँ, तलि, आंखि, बरी।

उत्तर:- ग्यान - ज्ञान

जीभि - जीभ

पाऊँ - पाँव

तलि - तले

आँखि - आँख

बरी - बड़ी

पाठ 10

कामचोर

इस्मत चुगताई

इस पाठ में हास्य व्यंग्य से भरपूर अमीर घर के उन बच्चों की शरारतों का वर्णन हैं , जिन्हें बचपन में काम करने की आदत नहीं डाली गई है। इससे वे आलसी ओर निकम्मे हो गए हैं। उनकी आदतों को देखकर उनके माता-पिता जब उन्हें काम करने के लि ए प्रलोभन देते हैं, तब वे इस तरह से कामों को करते हैं कि उन्हें दुबारा काम न करने की चेतावनी देनी पड़ती है इससे वे फिर आलसी ओर निकम्मे हो जाते हैं।

गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

गद्यांश 1

बड़ी देर के वाद-विवाद के बाद यह तय हुआ कि सचमुच नौकरों को निकाल दिया जाए। आखिर, ये मोटे-मोटे किस काम के हैं ! हिलकर पानी नहीं पीते। इन्हें अपना काम खुद करने की आदत होनी चाहिए। कामचोर कहीं के! "तुम लोग कुछ नहीं। इतने सारे हो और सारा दिन ऊधम मचाने के सिवा कुछ नहीं करते।"और सचमुच हमें खयाल आया कि हम आखिर काम क्यों नहीं करते? हिलकर पानी पीने में अपना क्या खर्च हाता है ? इसलिए हमने तुरतं हिल-हिलकर पानी पीना शुरू किया।

प्रश्न 1. लेखक व पाठ का नाम लीखिए ?

उत्तर- इस्मत चुगताई, कामचोर

प्रश्न 2. वाद विवाद किनके मध्य हो रहा था ?

उत्तर- वाद विवाद अम्मा और अब्बा के मध्य हो रहा था ।

प्रश्न 3. अम्मा और अब्बा न्र क्या निर्णय लिया ?

उत्तर- अम्मा और अब्बा ने घर के सभी नौकरों को निकलने का निर्णय लिया ।

प्रश्न 4. मोटे -मोटे शब्द का प्रयोग किनके लिए और क्यों किया गया है ?

उत्तर- मोटे-मोटे शब्द का प्रयोग बच्चों के लिए किया गया क्योंकि उनकी नजर में वे पूर्णतया कामचोर हैं, केवल खाते पीते व आराम करते हैं। घर का कोई काम नहीं करते।

गद्यांश 2

घर में तूफान उठ खड़ा हुआ। ऐसा लगता था जैसे सारे घर में मुर्गियाँ , भेडें, टूटे हुए तसले , बालटियाँ, लोटे, कटोरे और बच्चे थे। ब च्चे बाहर किए गए। मुर्गियाँ बाग में हँकाई गईं। मातम- सा मनाती तरकारी वाली के आँसू पोंछे गए और अम्मा आगरा जाने के लिए सामान बाँधने लगीं। "या तो बच्चा-राज कायम कर लो या मुझे ही रख लो। नहीं तो मैं चली मायके अम्मा ने चुनौती दे दी।

प्रश्न 1. अब्बा ने सबको क़तर में खड़ा कर क्या हिदायत दी ?

उत्तर- अब्बा ने बच्चोंको हिदायत दी कि कोई किसी भी काम को हाथ नहीं लगाएगा यदि लगाएगा तो उसे रात का खाना नहीं दिया जाएगा ।

प्रश्न 2. कोर्ट मार्शल से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर- कोर्ट मार्शल का अर्थ हैशाही फरमान जिसका उल्लंघन नही किया जा सकता ।

प्रश्न 3. बच्चों ने क्या निश्चय किया ?

उत्तर- बच्चों ने निश्चय कर लिया कि अब किसी भी काम को हाथ नहीं लगाएँगे मेहनत कर पानी भी नहीं पिएँगे।

प्रश्न 4. बच्चों को रात का खाना क्यों नहीं दिया गया ?

उत्तर- क्योंकि बच्चों ने घर का काम ऐसे अस्त व्यस्त तरीके से किया कि घर की दशा ही बिगड़ गई।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न1 बच्चों के ऊधम मचाने के कारण घर की क्या दुर्दशा हुई ?

उतर- बच्चों के ऊधम मचाने के कारण घर की दशा बिगड़ गई। घर का सारा सामान अस्त.व्यस्त हो गया। सबसे पहले दरी की हालत बुरी हो गई। उसके ऊपर पानी डालकर उसे कीचड़ युक्त कर दिया। बर्तनों से तोड़. फोड़ की गई। इन सब उपद्रवों के कारण घर की दशा दुर्दशा में बदल गई ।

प्रश्न 2 तो बच्चा राज कायम कर लो या मुझे ही रख लो। अम्मा ने कब कहा और इसका क्या परिणाम क्या हुआ?

उतर- अम्मा ने ये शब्द तब कहे जब बच्चों ने घर में भयंकर उपद्रव मचा दिया। सारा सामान कूड़े.कर्कट के समान लग रहा था। घर की दशा दुर्दशा में बदल चुकी थी। इस कथन का यह परिणाम निकला कि पिताजी ने सभी बच्चों को एक पंक्ति में खड़ा करके पूरी बटालियन का कोर्ट मार्शल कर दिया। उन्हें चेतावनी दे डाली कि अगर किसी बच्चे ने किसी भी वस्तु को हाथ लगायाए तो उसका रात का खाना बंद हो जाएगा।

प्रश्न 3 कामचोर कहानी क्या संदेश देती है ?

उतर- कामचोर कहानी बच्चों को जिम्मेदार और कार्यकुशल बनाने का संदेश देती है । इसके अनुसार प्रत्येक माता-पिता को चाहिए कि वे अ पने बच्चों को अपना काम स्वयं करने तथा समय आने पर पारिवारिक जिम्मेदारियाँ उठाने के लिए तैयार करें ।

प्रश्न 4 सोचे- समझे बिना कार्य कर डालने से क्या.क्या हानियाँ हो सकती है ?

उतर- जो व्यक्ति बिना सोचे-समझे कार्य करता है। उसे बाद में पछताना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति काम तो बिगाडता ही है साथ ही वह सबकी हँसी का पात्र भी बनता है। काम के बिगड़ जाने पर उसके मन को शाँति नही मिलती ।

अतिरिक्त प्रश्न

1. घर से नौकरों को निकालने का निर्णय क्यों लिया गया ?

उत्तर- घर से नौकरों को निकालने का निर्णय इसलिए लिया गया क्योंकि ब च्चे अपना काम स्वयंकर सकें और उनमे काम करने की आदत का विकास हो सके ।

2. काम करने के लिए उन्हें क्या प्रलोभन दिया गया ?

उत्तर- तनख्वाह देने का

3. झाड़ू के पुर्जे पुर्जे क्यों उड़ गए ?

उत्तर- तनख्वाह के प्रलोभन देने से बच्चों के द्वारा खींचातानी से ।

4. धींगा-मुश्ती में बच्चों ने क्या हालत बना ली ?

उत्तर- कीचड़ में सन गए ।

5. भेड़ें कहाँ टूट पड़ी और क्यों ?

उत्तर- तरकारी की सब्जियों भरी टोकरी परए दाने को छोड़कर तरकारी खाना चाहती थी ।

1. कहानी में मोटे-मोटे किस काम के हैं? किन के बारे में और क्यों कहा गया?

उत्तर:- कहानी में 'मोटे-मोटे किस काम के हैं ' बच्चों के बारे में कहा गया है क्योंकि वे घर के काम-काज में जरा सी भी मदद नहीं करते थे तथा दिन भर उधम मचाते रहते थे। इस तरह से ये कामचोर हो गए थे।

2. बच्चों के ऊधम मचाने के कारण घर की क्या दुर्दशा हुई?

उत्तर:- बच्चों के उधम मचाने से घर अस्त-व्यस्त हो गया। मटके-सुराहियाँ इधर-उधर लुढक गए। घर के सारे बर्तन अस्त-व्यस्त हो गए। पशु-पक्षी इधर-उधर भागने लगे। घर में धूल , मिट्टी और कीचड़ का ढ़ेर लग गया। मटर की सब्जी बनने से पहले भेड़ें खा गईं। मुर्गे- मुर्गियों के कारण कपड़े गंदे हो गए। इस वजह से पारिवारिक शांति भी भंग हो गई। अम्मा ने तो घर छोड़ने का भी फैसला ले लिया।

3. "या तो बच्चाराज कायम कर लो या मुझे ही रख लो। " अम्मा ने कब कहा ? और इसका परिणाम क्या हुआ?

उत्तर:- अम्मा ने बच्चों द्वारा किए गए घर के हालत को देखकर ऐसा कहा था । जब पिताजी ने बच्चों को घर के काम काज में हाथ बँटाने को कहा तब उन्होंने इसके विपरीत सारे घर को तहस- नहस कर दिया। जिससे अम्मा जी बहुत परेशान हो गई थीं। इसका परिणाम ये हुआ कि पिताजी ने घर की किसी भी चीज़ को बच्चों को हाथ ना लगाने कि हिदायत दे डाली। अगर किसी ने घर का काम किया तो उसे रात का खाना नहीं दिया जाएगा।

4. 'कामचोर' कहानी क्या संदेश देती है?

उत्तर:- यह एक हास्यप्रधान कहानी है। यह कहानी संदेश देती है की बच्चों को घर के कामों से अनभिज्ञ नहीं होना चाहिए। उन्हें उनके स्वभाव के अनुसार , उम्र और रूचि ध्यान में रखते हुए काम कराना चाहिए। जिससे बचपन से ही उनमें काम के प्रति लगन तथा रूचि उत्पन्न हो न कि ऊब।

5. क्या बच्चों ने उचित निर्णय लिया कि अब चाहे कुछ भी हो जाए, हिलकर पानी भी नहीं पिएँगे।

उत्तर:- बच्चों द्वारा लिया गया निर्णय उचित नहीं था क्योंकि स्वयं हिलकर पा नी न पीने का निश्चय उन्हें और भी कामचोर बना देगा। वे कभी-भी कोई काम करना सीख ही नहीं पाएँगें। बच्चों को काम तो करना चाहिए पर समझदारी के साथ। बड़ों को उनको काम सिखाना चाहिए और आवश्यकता अनुसार मार्गदर्शन देना चाहिए।

6. घर के सामान्य काम हों या अपना निजी काम , प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुरूप उन्हें करना आवश्यक क्यों है?

उत्तर:- अपनी क्षमता के अनुसार काम करना इसलिए जरूरी है क्योंकि क्षमता के अनुरूप किया गया कार्य सही और सुचारु रूप से होता है। यदि हम अपने घर का काम या अपना निजी काम , नहीं करेंगे तो हम कामचोर बन जाएँगे। हमें अपने कामों के लिए आत्मनिर्भर रहना चाहिए।

7. भरा-पूरा परिवार कैसे सुखद बन सकता है और कैसे दुखद ? कामचोर कहानी के आधार पर निर्णय कीजिए।

उत्तर:- भरा-पूरा परिवार तब सुखद बन सकता है जब सब मिल-जुलकर कार्य करें व दुखद तब बनता है जब सब स्वार्थ भावना से कार्य करें। कामों के क्षमतानुसार विभाजित करने से कहानी जैसी दुखद स्थिति से बचा जा सकता है। कार्यों को बाँटने से किसी दूसरे को काम करने के लिए कहने की जरुरत होगी और तनाव भी उत्पन्न नहीं होगा।

8. बड़े होते बच्चे किस प्रकार माता- पिता के सहयोगी हो सकते हैं और किस प्रकार भार ? कामचोर कहानी के आधार पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर:- बडे होते बच्चे यदि माता-पिता को छोटे-मोटे कार्यों में मदद करें तो वे उनके सहयोगी हो सकते हैं जैसे अपना कार्य स्वयं, अपने-आप स्कूल के लिए तैयार हो जाएँ, अपने खाने के बर्तन यथा सम्भव स्थान पर रख आएँ, अपने कमरे को सहज कर रखें।

यदि हम बच्चों को उनका कार्य करने की सीख नहीं देते तो वह सहयोग के स्थान पर माता- पिता के लिए भार ही साबित होंगे। उनके बड़ा होने पर उनसे कोई कार्य कराया जाएगा तो वह उस कार्य को भली-भांति करने के स्थान पर तहस-नहस ही कर देंगे, जैसे की कामचोर लेख पर बच्चों ने सारे घर का हाल कर दिया था। इसलिए माता- पिता को बच्चों को उनके स्वभाव के अनुसार , उम्र और रूचि ध्यान में रखते हुए काम कराना चाहिए। जिससे बचपन से ही उनमें काम के प्रति लगन तथा रूचि उत्पन्न हो न कि ऊब। और उनके सहयोगी हो सके।

9. 'कामचोर' कहानी एकल परिवार की कहानी है या संयुक्त परिवार की? इन दोनों तरह के परिवारों में क्या-क्या अंतर होते हैं?

उत्तर:- कामचोर कहानी सयुंक्त परिवार की कहानी है इन दोनों में अन्तर इस प्रकार है -

एकल परिवार में सदस्यों की संख्या तीन से चार होती है - माँ, पिता व बच्चे होते है। सयुंक्त परिवार में सदस्यों की संख्या ज़्यादा होती है क्योंकि इसमें चाचा- चाची ताऊजी-ताईजी,माँ-पिताजी, बच्चे सभी सम्मिलित होते हैं। एकल परिवार में सारा कार्य स्वयं करना पड़ता है जबकि संयुक्त परिवार में सबलोग मिल-जुलकर कार्य करते हैं। एकल परिवार में जीवन के सुख- दुख का अकेले सामना करना पड़ता है जबकि सयुंक्त परिवार में सारे सदस्य मिलकर जीवन के सुख-दुख का सामना करते है।

• भाषा की बात

10. "धुली-बेधुली बालटी लेकर आठ हाथ चार थनों पर पिल पड़े। " धुली शब्द से पहले 'बे' लगाकर बेधुली बना है। जिसका अर्थ है 'बिना धुली' 'बे' एक उपसर्ग है।

'बे' उपसर्ग से बननेवाले कुछ और शब्द हैं -

बेतुका, बेईमान, बेघर, बेचैन, बेहोश आदि। आप भी नीचे लिखे उपसर्गों से बननेवाले शब्द खोजिए -

1. प्र .....
2. आ .....
3. भर .....

4. बद .....

उत्तर:- 1. प्र - प्रबल, प्रभाव, प्रयोग, प्रचलन, प्रवचन

2. आ - आमरण, आभार, आजन्म, आगत

3. भर - भरपेट, भरपूर, भरमार, भरसक

4. बद - बदसूरत, बदमिज़ाज, बदनाम, बदतर

पाठ 11

जब सिनेमा ने बोलना सीखा - प्रदीप तिवारी

इस पाठ में लेखक ने भारतीय सिनेमा जगत में आए महत्त्व पूर्ण बदलाव को रेखांकित किया है। 14 मार्च,1931 की ऐतिहासिक तारीख को पहली बोलने वाली फिल्म 'आलम आरा' का प्रदर्शन हुआ। उससे पहले मूक फ़िल्में बनती थी जो काफी लोकप्रिय हुआ करती थी ।इस तिथि के बाद भारतीय सिनेमा ने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

गद्यांश 1

'वे सभी सजीव हैं , साँस ले रहे हैं , शत-प्रतिशत बोल रहे हैं , अठहत्तर मुर्दा इंसान जिंदा हो गए , उनको बोलते, बातें करते देखो।' देश की पहली सवाक बोलती फिल्म 'आलम आरा' के पोस्टरों पर विज्ञापन की ये पंक्तियाँ लिखी हुई थीं। 14 मार्च 1931 की वह ऐतिहासिक तारीख भारतीय सिनेमा में बड़े बदलाव का दिन था। इसी दिन पहली बार भारत के सिनेमा ने बोलना सीखा था। हालाँकि वह दौर ऐसा था जब मूक सिनेमा लोकप्रियता के शिखर पर था। 'पहली बोलती फिल्म जिस साल प्रदर्शित हुई, उसी साल कई मूक फिल्में भी विभिन्न भाषाओं में बनीं। मगर बोलती फिल्मों का नया दौर शुरू हो गया था।

प्रश्न 1. आलम आरा फिल्म के पोस्टरों पर क्या लिखा था ?

उत्तर- 'आलम आरा" फिल्म के पोस्टरों पर लिखा था वे सभी सजीव हैं , सांस ले रहे हैं, शत प्रतिशत बोल रहे हैं, अठहत्तर मुर्दा इंसान जिन्दा हो गए, उनको बोलते बातें करते देखो ।

प्रश्न 2. 14 मार्च 1931 को ऐतिहासिक तारीख क्यों माना जाता है ?

उत्तर- क्योंकि इस दिन पहली बार भारतीय सिनेमा ने बोलना सीखा था। पहली बोलने वाली फिल्म आलम आरा प्रदर्शित की गयी थी ।

प्रश्न 3. सवाक फ़िल्में किसे कहते हैं ?

उत्तर- जिन फिल्मों में संवाद बोले जाते हैं उन्हें सवाक फिल्में कहा जाता है।

प्रश्न 4. सवाक फिल्मों से पहले किन फिल्मों का प्रचालन था ?

उत्तर- सवाक फिल्मों से पहले मूक फिल्मों का प्रचलन था ।

गद्यांश 2

फिल्म की नायिका जुबैदा थीं। नायक थे विट्ठल। वे उस दौर के सर्वाधिक पारिश्रमिक पानेवाले स्टार थे। उनके चयन को लेकर भी एक किस्सा काफी चर्चित है। विट्ठल को उर्दू बोलने में मुश्किलें आती थीं। पहले उनका बतौर नायक चयन किया गया मगर इसी कमी के कारण उन्हें हटाकर उनकी जगह मेहबूब को नायक बना दिया गया। विट्ठल नाराज हो गए और अपना हक पाने के लिए उन्हों ने मुकदमा कर दिया।

प्रश्न 1 फिल्म की नायिका कौन थी ?

उत्तर- जुबैदा ।

प्रश्न 2 फिल्म के नायक कौन थे ?

उत्तर- विठ्ठल ।

प्रश्न 3 महबूब को नायक क्यों बनाया गया ?

उत्तर- विठ्ठल को उर्दू बोलनी नहीं आती थी इस लिए महबूब को नायक बनाया गया ।

प्रश्न 4 विठ्ठल ने अपना हक़ पाने के लिए क्या किया ?

उत्तर- विठ्ठल ने अपना हक़ पाने के लिए मुकदमा कर दिया ।

गद्यांश 3

अभिनेताओं-अभिनेत्रियों की लोकप्रियता का असर उस दौर के दर्शकों पर भी खूब पड़ रहा था। 'माधुरी' नाम की फिल्म में नायिका सुलोचना की हेयर स्टाइल उस दौर में औरतों में लोकप्रिय थी। औरतें अपनी केश सज्जा उसी तरह कर रही थीं। अर्देशिर ईरानी की फिल्मों में भारतीय के अलावा ईरानी कलाकारों ने भी अभिनय किया था। स्वयं 'आलम आरा' भारत के अलावा श्रीलंका , बर्मा और पश्चिम,एशिया में पसंद की गई। भारतीय सिनेमा के ज नक फाल्के को 'सवाक' सिनेमा के जनक अर्देशिर ईरानी की उपलब्धि को अपनाना ही था, क्योंकि वहाँ से सिनेमा का एक नया युग शुरू हो गया था।

प्रश्न 1 माधुरी नाम की फिल्म में नायिका कौन थी ?

उत्तर- माधुरी नाम की फिल्म में नायिका सुलोचना थी ।

प्रश्न 2 औरतें अपनी केश सज्जा किस तरह कर रही थी ?

उत्तर- औरतें अपनी केश सज्जा सुलोचना की तरह कर रही थी ।

प्रश्न 3 सवाक फिल्मों का जनक किसे कहा जाता है ?

उत्तर- सवाक फिल्मों का जनक फाल्के को कहा जाता है ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न1. पहला बोलता सिनेमा बनाने के लिए फि ल्मकार अर्देशिर,म.ईरानी को प्रेरणा कहाँ से मिली ? उन्होंने आलम आरा फिल्म के लिए आधार कहाँ से मिला ?

उतर- पहला बोलता सिनेमा बनाने के लिए फिल्मकार अर्देशिर ,म. ईरानी को सन 1929 में हॉलीवुड की एक बोलती फिल्म शो बोट से प्रेरणा मिली। इस फिल्म को देखने के बाद उनके मन में बोलती फिल्म बनाने की इच्छा जागृत हुई। अर्देशिर ने पारसी रंगमंच के लोकप्रिय नाटक को आधार बनाकर अपनी फिल्म आलम आरा की पटकथा का निर्माण किया

प्रश्न 2. विट्ठल का चयन आलम आरा के नायक के रूप में हुआ लेकिन उन्हें हटाया क्यों गया ? विट्ठल ने पुन: नायक होने के लिए क्या किया ?

उतर- विट्ठल को आलम आरा फिल्म में नायक की भूमिका से इसलिए हटाया गया था क्योंकि उन्हें उर्दू बोलने में कठिनाई आती थी। लेकिन विट्ठल ने इसे अपना अपमान समझा और न्यायालय में मुकदमा दायर कर दिया। उनका मुकदमा उस समय के जाने माने वकील मोहम्मद अली जिन्न ने लड़ा। इस मुकदमे में विट्ठल की जीत हुई और पुनः आलम आरा के लिए नायक बना दिए ।

प्रश्न 3. 14 मार्च 1931 की तिथि का भारतीय सिनेमा के इतिहास में क्या स्थान है ?

उतर 14 मार्च 1931 की तिथि भारतीय सिनेमा के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखी गई है। इस दिन प्रथम सवाक फिल्म आलम आरा का प्रदर्शन मुंबई के मेजेस्टिक सिनेमा हॉल में हुआ था ।

प्रश्न 4 फिल्मों में प्रकाश प्रणाली का जन्म कैसे हुआ ?

उत्तर- भारतीय इतिहास की प्रथम बोलती फिल्म आलम आरा की शूटिंग साउंड के कारण रात को करनी पड़ी थी। इसके लिए कृत्रिम प्रकाश की व्यवस्था करनी पड़ी थी। यहीं से प्रकाश प्रणाली का जन्म हुआ ।

अतिरिक्त प्रश्न

1.अर्देशिर की कंपनी ने भारतीय सिनेमा को लगभग कितने फ़िल्में बनाकर दी ?

उत्तर- लगभग 150 से अधिक मूक और 100 से अधिक सवाक फ़िल्में ।

2. आलमआरा फिल्म के नायक और नायिका नाम लिखिए ।

उत्तर- नायक विट्ठल, नायिका जुबैदा

3. विट्ठल की जगह पर महबूब को नायक केरूप में क्यों रखा गया ?

उत्तर- विट्ठल की जगह पर महबूब को नायक के रूप में इसलिए रखा गया क्योंकि उन्हें उर्दू बोलने में परेशानी आती थी ।

4. आलमआरा फिल्म को बनाने में कितना समय लगा ?

उत्तर- 4 माह का समय ।

5. फिल्म के 25 वर्ष पूरे होने पर अर्देशिर को क्या कहकर सम्मानित किया गया ?

उत्तर- भारतीय सवाक फिल्मों का पिता

1. जब पहली बोलती फिल्म प्रदर्शित हुई तो उसके पोस्टरों पर कौन-से वाक्य छापे गए? उस फिल्म में कितने चेहरे थे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- देश की पहली बोलती फिल्म के विज्ञापन के लिए छापे गए वाक्य इस प्रकार थे -

"वे सभी सजीव हैं, साँस ले रहे हैं, शत-प्रतिशत बोल रहे हैं, अठहत्तर मुर्दा इनसान जिंदा हो गए, उनको बोलते, बातें करते देखो।"

पाठ के आधार पर 'आलम आरा' में कुल मिलाकर 78 चेहरे थे अर्थात् काम कर रहे थे।

2. पहला बोलता सिनेमा बनाने के लिए फिल्मकार अर्देशिर एम . ईरानी को प्रेरणा कहाँ से मिली ? उन्होंने आलम आरा फिल्म के लिए आधार कहाँ से लिया?विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर:- फिल्मकार अर्देशिर एम. ईरानी ने 1929 में हॉलीवुड की एक बोलती फिल्म 'शो बोट' देखी और तभी उनके मन में बोलती फिल्म बनाने की इच्छा जगी। इस फ़िल्म का आधार उन्होंने पारसी रंगमंच के एक लोकप्रिय नाटक से लिया।

3. विट्ठल का चयन आलम आरा फिल्म के नायक के रूप हुआ लेकिन उन्हें हटाया क्यों गया? विट्ठल ने पुन: नायक होने के लिए क्या किया? विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर:- विट्ठल को फ़िल्म से इसलिए हटाया गया कि उन्हें उर्दू बोलने में परेशानी होती थी। पुन: अपना हक पाने के लिए उन्होंने मुकदमा कर दिया। विट्ठल मुकदमा जीत गए और भारत की पहली बोलती फिल्म के नायक बनें।

4. पहली सवाक् फिल्म के निर्माता-निदेशक अर्देशिर को जब सम्मानित किया गया तब सम्मानकर्ताओ ने उनके लिए क्या कहा था ? अर्देशिर ने क्या कहा ?और इस प्रसंग में लेखक ने क्या टिप्पणी की है ? लिखिए।

उत्तर:- पहली सवाक् फिल्म के निर्माता- निर्देशक अर्देशिर को प्रदर्शन के पच्चीस वर्ष पूरे होने पर सम्मानित किया गया और उन्हें "भारतीय सवाक् फिल्मों का पिता" कहा गया तो उन्होंने उस मौके पर कहा था, - "मुझे इतना बड़ा खिताब देने की जरूरत नहीं है। मैंने तो देश के लिए अपने हिस्से का जरूरी योगदान दिया है।" इस प्रसंग की चर्चा करते हुए लेखक ने अर्देशिर को विनम्र कहा है।

5. मूक सिनेमा में संवाद नहीं होते, उसमें दैहिक अभिनय की प्रधानता होती है। पर, जब सिनेमा बोलने लगा, उसमें अनेक परिवर्तन हुए। उन परिवर्तनों को अभिनेता , दर्शक और कुछ तकनीकी दृष्टि से पाठ का आधार लेकर खोजें, साथ ही अपनी कल्पना का भी सहयोग लें।

उत्तर:- मूक सिनेमा ने बोलना सीखा तो बहुत सारे परिवर्तन हुए। बोलती फिल्म बनने के कारण अभिनेताओं पढ़ा-लिखा होना ज़रूरी हो गया, क्योंकि अब उन्हें संवाद भी बोलने पड़ते थे। दर्शकों पर भी अभिनेताओं का प्रभाव पड़ने लगा। नायक- नायिका के लोकप्रिय होने से औरतें अभिने त्रियों की केश सज्जा तथा उनके कपड़ों की नकल करने लगीं। दृश्य और श्रव्य माध्यम के एक ही फ़िल्म में समिश्रित हो जाने से तकनीकी दृष्टि से भी बहुत सारे परिवर्तन हुए।

6. डब फिल्में किसे कहते हैं? कभी-कभी डब फ़िल्मों में अभिनेता के मुँह खोलने और आवाज़ में अंतर आ जाता है। इसका कारण क्या हो सकता है?

उत्तर:- फिल्मों में जब अभिनेताओं को दूसरे की आवाज़ दी जाती है तो उसे डब कहते हैं।

कभी-कभी फिल्मों में आवाज़ तथा अभिनेता के मुँह खोलने में अंतर आ जाता है क्योंकि डब करने वाले और अभिनय करने वाले की बोलने की गति समान नहीं होती या किसी तकनीकी दिक्कत के कारण हो जाता है।

भाषा की बात

7. सवाक् शब्द वाक् के पहले 'स' लगाने से बना है। स उपसर्ग से कई शब्द बनते हैं। निम्नलिखित शब्दों के साथ 'स' का उपसर्ग की भाँति प्रयोग करके शब्द बनाएँ और शब्दार्थ में होनेवाले परिवर्तन को बताएँ।

हित, परिवार, विनय, चित्र, बल, सम्मान।

उत्तर:- शब्द - उपसर्ग वाले शब्द

(i) हित - सहित
(ii) परिवार - सपरिवार
(iii) विनय - सविनय
(iv) चित्र - सचित्र
(v) बल - सबल
(vi) मान - सम्मान

8. उपसर्ग और प्रत्यय दोनों ही शब्दांश होते हैं। वाक्य में इनका अकेला प्रयोग नहीं होता। इन दोनों में अंतर केवल इतना होता है कि उपसर्ग किसी भी शब्द में पहले लगता है और प्रत्यय बाद में।

हिंदी के सामान्य उपसर्ग इस प्रकार हैं - अ/अन, नि, दु, क/कु, स/सु, अध, बिन, औ आदि।

पाठ में आए उपसर्ग और प्रत्यय युक्त शब्दों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं-

मूल शब्द	उपसर्ग	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द
वाक	स	सवाक	फिल्म	कार	फिल्मकार
लोचना	सु	सुलोचना	कामयाब	ई	कामयाबी

इस प्रकार के 15-15 उदाहरण खोजकर लिखिए और अपने सहपाठियों को दिखाइए।

मूल शब्द	उपसर्ग	नया शब्द
पुत्र	सु	सुपुत्र
घट	औ	औघट

सार	अनु	अनुसार
मुख	आ	आमुख
परिवार	स	सपरिवार
नायक	अधि	अधिनायक
मरण	आ	आमरण
संहार	उप	उपसंहार
ज्ञान	अ	अज्ञान
यश	सु	सुयश
कोण	सम	समकोण
कर्म	सत्	सत्कर्म
राग	अनु	अनुराग
बंध	नि	निबंध
पका	अध	अधपका

पाठ 12

सुदामा चरित- नरोत्तमदास

पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

इस पाठ में श्रीकृष्ण और सुदामा के माध्यम से सच्ची मित्रता का कठिन उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। इस मित्रता को एक आदर्श रूप में देखा जा सकता है। ऐसी मित्रता अनुपालन करने योग्य है । वर्तमान समय में यह मित्रता और भी महत्तवपूर्ण बन जाती है। जब व्यक्ति बुरे समय में अपने मित्र को पहचानने से इनकार कर देता है तब इस मित्रता के माध्यम से सबक लेकर कृष्ण और सुदामा की तरह एक दूसरे को समान बना लेने का सन्देश मिलता हैं।

पद्यांश 1

सीस पगा न झगा तन पे प्रभु, जानै को आहि बसै केहि ग्रामा।
धोती फटी-सी लटी दुपटी अरु, पाँयउ पानह की नहिं सामा॥
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक, रह्यौ चकि सों वसुधा अभिरामा।
पूछत दीन दयाल को धाम, बतावत आपनो नाम सुदामा॥

प्रश्न 1 सुदामा कहाँ और क्यों गया था ?

उत्तर- सुदामा की आर्थिक दशा बहुत ख़राब थी वह दीनों की भाँति जीवन व्यतीत कर रहा था अपनी पत्नी के आग्रह करने पर वह अपने मित्र कृष्ण के पास सहायता माँगने के लिए गया था।

प्रश्न 2 द्वारपाल ने कृष्ण को सुदामा के बारे में क्या बताया ?

उत्तर- द्वारपाल ने बताया कि द्वार पर एक ब्राहमण खड़ा है उसके सर पर न पगड़ी है , न शरीर पर कुरता और न जाने किस गाँव का है उसके पैरों में जूते तक नहीं हैं वह इस धरती की सुंदरता देख कर चकित है । वह अपना नाम सुदामा बता रहा है और आपसे मिलना चाहता है ।

पद्यांश 2

आगे चना गुरुमातु दए तेए लए तुम चाबि हमें नहिं दीने ।
स्याम कह्यो मुसकाय सुदामा सोंए श्चोरी की बान में हौं जू प्रवीने ।
पोटरि काँख में चापि रहे तुमए खोलत नाहिं सुधा रस भीने ।
पाछिली बानि अजौ न तजो तुमए तैसई भाभी के तंदुल कीन्हें । ।

1 .सुदामा के माध्यम से किसने किसके लिए क्या उपहार भेजा ?
उत्तर. श्रीकृष्ण के लिए सुदामा की पत्नी ने चावल उपहार में भेजे ।
2. सुदामा उस उपहार को क्यों छिपा रहे थे ?
उत्तर- सुदामा उस उपहार को इसलिए छिपा रहे थे क्योंकि वे श्रीकृष्ण के लिए सूखे चावल तुच्छ उपहार समझ रहे थे ।
3 .गुरुमाता ने सुदामा को चने कब दिए थे ?
उत्तर- बचपन में ऋषि संदीपनी के आश्रम में साथ-साथ पढ़ने के समय ।
4. 'चोरी की बान में हौं जू प्रवीने' कृष्ण ने ऐसा क्यों कहा ?
उत्तर- 'चोरी की बान में हौं जू प्रवीने ' कृष्ण ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि गुरुमाता द्वारा दिए गए चने सुदामा जी ने चुपके-से अकेले ही खा लिए थे और चावल की पोटली को छिपाकर रखा हुआ था।
5.श्रीकृष्ण ने सुदामा द्वारा लाए गए उपहार को कैसा बताया ?
उत्तर- चावलों को प्रेम रुपी अमृत से सना हुआ, स्वादिष्ट बताया ।
पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर
प्रश्न 1 सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या मनोदशा हुई ?
उत्तर- सुदामा की दीनदशा देखकर कृष्ण को अत्यंत दुःख हुआ। कृष्ण जो दया के सागर है । वे अपने मित्र के लिए फूट-फूट कर रोने लगे। उन्होंने सुदामा के पैरों को धोने के लिए न तो परात उठाई न ही पानी उन्होंने अपने मित्र के पैरों को अपने आँसुओं से धोया जो उनके अंतर मन की पीड़ा को स्पष्ट करता है।
प्रश्न 2. 'पानी परात को हाथ छुओ नहिं नैनन के जल सों पग धोए '। पंक्ति में वर्णित भाव का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
उत्तर- उक्त पंक्ति में भगवान श्रीकृष्ण का अपने परम मित्र सुदामा के प्रति अनन्य प्रेम प्रकट हुआ है। वे अपने बाल सखा की दयनीय दशा को देखकर अत्यंत दुखी हो जाते है । वे इतने दुखी हो जाते है कि पानी की बजाय अपने आँसुओं से मि त्र के पैरो को धोने लगते है। सच्चे अर्थो में श्रीकृष्ण एक भक्त वत्सल स्वामी हैं।
प्रश्न.3 अपने गाँव लौटकर जब सुदामा अपनी झोंपड़ी नही खोज पाए तब उनके मन में क्या- क्या विचार आए ?
उत्तर- सुदामा के हृदय में ये भाव आए थे कि वे गलती से कहीं और पहुँच गए हैं। उनकी झोंपड़ी तो टूटी.फूटी थी, परन्तु अब वहाँ बड़े.बड़े महल थे । वे पहले ही दुखी थे और अब वव अपना घर भी खो बैठे थे ।
प्रश्न 4. सुदामा किसके कहने पर और क्यों द्वारिका पुरी गए?
उत्तर- सुदामा अपनी पत्नी के कहने पर द्वारिकापुरी गए। वहाँ जाने का उनका ,एक मात्र उ द्देश्य अपने मित्र से आर्थिक सहायता प्राप्त कर अपनी गरीबी को दूर करना था ।
अतिरिक्त प्रश्न..
1. उपानह शब्द का क्या अर्थ है ?
उत्तर- जूते
2. सुदामा कौन थे वे श्रीकृष्ण के पास क्यों गए ?

उत्तर- सुदामा श्रीकृष्ण के मित्र थे वे कुछ मदद पाने के उद्देश्य से कृष्ण के पास गए थे ।

3 .सुदामा किस वेश भूषा में अपने मित्र श्रीकृष्ण के पास गए ?

उत्तर- सिर पर पगड़ी नहीं थी। शरीर पर कुर्ता नहीं था।जगह-जगह धोती फटी हुई थी और पैरों में जूते भी नहीं थे।

4. द्वारपाल ने सुदामा के बारे में श्रीकृष्ण को क्या बताया ?

उत्तर- प्रभु! दरवाजे पर एक गरीब और कमजोर ब्राहमण खड़ा है। वह आपसे मिलना चाहता है और अपना नाम सुदामा बता रहा है ।

5. श्रीकृष्ण ने सुदामा के दुःख को महादुख क्यों कहा है ?

उत्तर- उनके पैरों की फटी बिवाइयों और काँटों के जाल को देखकर ।

1. सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या मनोदशा हुई? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- सुदामा की दीनदशा को देखकर दुख के कारण श्री कृष्ण की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। उन्होंने सुदामा के पैरों को धोने के लिए पानी मँगवाया। परन्तु उनकी आँखों से इतने आँसू निकले की उन्ही आँसुओं से सुदामा के पैर धुल गए।

2. "पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।" पंक्ति में वर्णित भाव का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर:- प्रस्तुत दोहे में यह कहा गया है कि जब सुदामा दीन- हीन अवस्था में कृष्ण के पास पहुँचे तो कृष्ण उन्हें देखकर व्यथित हो उठे। श्रीकृष्ण ने सुदामा के आगमन पर उनके पैरों को धोने के लिए परात में पानी मँगवाया परन्तु सुदामा की दुर्दशा देखकर श्रीकृष्ण को इतना कष्ट हुआ कि वे स्वयं रो पड़े और उनके आँसुओं से ही सुदामा के पैर धुल गए। अर्थात् परात में लाया गया जल व्यर्थ हो गया।

3. "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।"

(क) उपर्युक्त पंक्ति कौन, किससे कह रहा है?

(ख) इस कथन की पृष्ठभूमि स्पष्ट कीजिए।

(ग) इस उपालंभ (शिकायत) के पीछे कौन-सी पौराणिक कथा है?

उत्तर:-

(क) उपर्युक्त पंक्ति श्रीकृष्ण अपने बालसखा सुदामा से कह रहे हैं।

(ख) अपनी पत्नी द्वारा दिए गए चावल संकोचवश सुदामा श्रीकृष्ण को भेंट स्वरूप नहीं दे पा रहे हैं। परन्तु श्रीकृष्ण सुदामा पर दोषारोपण करते हुए इसे चोरी कहते हैं और कहते हैं कि चोरी में तो तुम पहले से ही निपुण हो।

(ग) बचपन में जब कृष्ण और सुदामा साथ-साथ संदीपन ऋषि के आश्रम में अपनी-अपनी शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। तभी एकबार जब श्रीकृष्ण और सुदामा जंगल में लकड़ियाँ एकत्र करने जा रहे थे तब गुरूमाता ने उन्हें रास्ते में खाने के लिए चने दिए थे। सुदामा श्रीकृष्ण को बिना बताए चोरी से चने खा लेते हैं। श्रीकृष्ण उसी चोरी का उपालंभ सुदामा को देते हैं।

4. द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा मार्ग में क्या- क्या सोचते जा रहे थे ? वह कृष्ण के व्यवहार से क्यों खीझ रहे थे? सुदामा के मन की दुविधा को अपने शब्दों में प्रकट कीजिए।

उत्तर:- द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा का मन बहुत दुखी था। वे कृष्ण द्वारा अपने प्रति किए गए व्यवहार के बारे में सोच रहे थे कि जब वे कृष्ण के पास पहुँचे तो कृष्ण ने आनन्द पूर्वक उनका आतिथ्य सत्कार किया था। क्या वह सब दिखावटी था ? वे कृष्ण के व्यवहार से खीझ रहे थे

क्योंकि उन्हें आशा थी कि श्रीकृष्ण उनकी दरिद्रता दूर करने के लिए ध न-दौलत देकर विदा करेंगे परंतु श्रीकृष्ण ने उन्हें चोरी की उलहाना देकर खाली हाथ ही वापस भेज दिया।

5. अपने गाँव लौटकर जब सुदामा अपनी झोंपड़ी नहीं खोज पाए तब उनके मन में क्या- क्या विचार आए? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- द्वारका से लौटकर सुदामा जब अपने गाँव वापस आएँ तो अपनी झोंपड़ी के स्थान पर बड़े- बड़े भव्य महलों को देखकर सबसे पहले तो उनका मन भ्रमित हो गया कि कहीं मैं घूम फिर कर वापस द्वारका ही तो नहीं चला आया। फिर भी उन्होंने पूरा गाँव छानते हुए सबसे पूछा लेकिन उन्हें अपनी झोंपड़ी नहीं मिली।

6. निर्धनता के बाद मिलनेवाली संपन्नता का चित्रण कविता की अंतिम पंक्तियों में वर्णित है। उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- श्रीकृष्ण की कृपा से निर्धन सुदामा की दरिद्रता दूर हो गई। जहाँ सुदामा की टूटी-फूटी सी झोपड़ी रहा करती थी, वहाँ अब सोने का महल खड़ा है। कहाँ पहले पैरों में पहनने के लिए चप्पल तक नहीं थी, वहाँ अब घूमने के लिए हाथी घोड़े हैं , पहले सोने के लिए केवल यह कठोर भूमि थी और अब शानदार नरम-मुलायम बिस्तरों का इंतजाम है, कहाँ पहले खाने के लिए चावल भी नहीं मिलते थे और आज प्रभु की कृपा से खाने को मनचाही चीज उपलब्ध है। परन्तु वे अच्छे नहीं लगते।

• भाषा की बात

7. "पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सो पग धोए"

ऊपर लिखी गई पंक्ति को ध्यान से पढ़िए। इसमें बात को बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ाकर चित्रित किया गया है। जब किसी बात को इतना बढ़ा- चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है तो वहाँ पर अतिशयोक्ति अलंकार होता है। आप भी कविता में से एक अतिशयोक्ति अलंकार का उदाहरण छाँटिए।

उत्तर:- " कै वह टूटी-सी छानी हती, कहँ कंचन के अब धाम सुहावत।"- यहाँ अतिश्योक्ति अलंकार है। टूटी सी झोपड़ी के स्थान पर अचानक कंचन के महल का होना अतिश्योक्ति है।

पाठ 13

जहाँ पहिया है - पी . साईनाथ

पडुकोट्टई तमिलनाडु साइकिल चलाना एक सामाजिक आंदोलन है ? कुछ अजीब-सी बात है।है न! लेकिन चौंकने की बात नहीं है। पुडुकोट्टई की हज़ारों नवसाक्षर ग्रामीण महिलाओं के लिए यह अब आम बात है। अपने पिछड़ेपन पर लात मारने , अपना विरोध व्यक्त करने औ र उन जंजीरों को तोड़ने का जिनमें वे जकड़े हुए हैं , कोई-न-कोई तरीका लोग निकाल ही लेते हैं। कभी- कभी ये तरीके अजीबो-गरीब होते हैं। भारत के सर्वाधिक गरीब जिलों में सेएकहै पडुकोट्टई पिछले दिनों यहाँ की ग्रामीण महिलाओं ने अपनी स्वाधीनता , आजादी और गतिशीलता को अभिव्य क्त करने के लिए प्रतीक के में साइकिल को चुना है। उनमें से अधिकांश नवसाक्षर थीं। अगर हम दस वर्ष से कम उम्र की लड़कियों को अलग कर दें इसका अर्थ यह होगा कि यहाँ ग्रामीण महिलाओं के एक- चौथाई हिस्से ने साइकिल चलाना सीख लिया है और इन महिलाओं में से सत्तर हशार से भी अधिक महिलाओं ने 'प्रदर्शनएवं प्रतियोगिता' जैसे सार्वजनिक कार्यक्रमों में बड़े गर्व के साथ अपने नए कौशल का प्रदर्शन किया और अभी भी उनमें साइकिल चलाने की इच्छा जारी है। वहाँ इसके लिए कई 'प्रशिक्षण शिविर' चल रहे हैं।

प्रश्न 1 साईकिल चलने को सामाजिक आन्दोलन क्यों कहा गया ?

उत्तर- जब महिलाओं ने साईकिल चलाना शुरू किया तो यहएकआन्दोलन ही बन गया क्यों की यहाँ की सभी महिलाऐं साईकिल सीखने हेतु अग्रसर हुए ।

प्रश्न 2 नवसाक्षर शब्द से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर- नवसाक्षर शब्द का अर्थ है साइकिल चलाना सीखने वाली ईएसआई महिलाएं जिन्होंने नयी नयी साईकिल चलानी सीखी है।

प्रश्न 3 साइकिल चलने ने यहाँ की महिलाओं को कैसे प्रभावित किया है ?

उत्तर- साईकिल चलाना सीखते ही ग्रामीण महिलाओं ने नई जागृति आई वे अपने आप आजाद महसूस करने लगीं उन्हें ऐसा लगा जैसे अपने पिछड़ेपन का विरोध कर वे अपने बन्धनों की जंजीरें तोड़ रही हैं उन्होंने अपनी स्व्च्चन्द्ता का यही रास्ता अपनाया ।

प्रश्न 4 पुदुकोट्टई जिला किस राज्य में आता है ?

उत्तर- पुदुकोट्टई जिला तमिलनाडु राज्य में है ।

अनुच्छेद 2

इस सारे मामले पर पुरुषों की क्या राय थी? इसके पक्ष में 'आर. साइकिल्स'के मालिक को तो रहना ही था। इस अके ले डीलर के यहाँ लेडी साइकिल की बिक्री में साल भर के अंदर काफी वृद्धि हुई। माना जा सकता है कि इस आँकड़े को दो कारणों से कम करके आँका गया। पहली बात तो यह है कि ढेर सारी महिलाओं ने जो लेडी साइकिल का इंतजार नहीं कर सकती थीं, जेंट्स साइकिलें खरीदने लगीं। दूसरे, उस डीलर ने बड़ी सर्तकता के साथ यह जानकारी मुझे दी थी उसे लगा कि मैं बिक्री कर विभाग का कोई आदमी हूँ।

प्रश्न 1 आर साइकिल्स के मालिक महिलाओं के पक्ष में क्यों थे ?

उत्तर- क्योंकि इस आन्दोलन की वजह से उनकी बिक्री काफ़ी बढ़ गयी थी ।

प्रश्न 2 महिलाओं ने लेडी साइकिल का इंतजार क्यों नही किया ?

उत्तर- क्योंकि महिलाएँ साइकिल सीखने के लिए बहुत उत्साहित थी और वे अपना समय व्यर्थ नहीं करना चाहती थी ।

प्रश्न 3 डीलर ने लेखक को क्या समझ कर जवाब दिया ?

उत्तर- डीलर ने लेखक को बिक्री कर विभाग का आदमी समझ कर जवाब दिया ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. साइकिल आन्दोलन से पुदुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में क्या बदलाव आये ?

उत्तर- साइकिल आन्दोलन से पुदुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में अनेक बदलाव आए। अब उन्हें बस की लम्बी पंक्ति में प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती थी। अब वे पुरुषों पर निर्भर नहीं थी। दूसरे स्थानों से सामान ढोने का कार्य भी साइकिल के माध्यम से स्वयं ही करने लगी। साइकिल चलाने से महिलाएँ विशेष प्रकार की स्वतन्त्रता महसूस करती हैं ।

प्रश्न 2. प्रारम्भ में इस आन्दोलन को चलाने में कौन-कौन सी बाधा आई ?

उत्तर- प्रारम्भ में इस आन्दोलन को चलाने में पुदुकोट्टई की महिलाओं को अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा। शुरू-शुरू में पुरुष साइकिल चलाने वाली स्त्रियों पर फब्तियाँ कसते थे। स्त्रियों को पुरुष प्रधान समाज में अपने साइकिल आन्दोलन के कारण अनेक मानसिक और शारीरिक कष्ट सहने पड़े ।

प्रश्न 3. प्रशिक्षित हो चुकी महिलाएँ प्रशिक्षण शिविर में क्या करती थीं ?

उत्तर- प्रशिक्षित हो चुकी महिलाएँ प्रशिक्षण शिविर में साइकिल सीखने वाली नई म हिलाओं को भरपूर सहयोग देती थी। वे उन में सीखने की इच्छा पर बल देती थी ताकि सभी महिलाएँ साइकिल चलाना भी सीख जाएँ ।

प्रश्न 4 पाठ में पहिया किस बात का प्रतीक है ।

उत्तर- पाठ में पहिया बदलते समय का प्रतीक है। पहिया हमें बताता है कि ह में समय अनुसार गति करनी चाहिए। परिस्थितियों के अनुसार हमें स्वयं को बदलना और संवारना चाहिए ।

अतिरिक्त प्रश्न

1 . साइकिल चलाने का लाभ किस-किस वर्ग की महिलाएँ लाभ उठा रही हैं ?

उत्तर- खेतिहर मजदूर पत्थर खदानों में काम करने वाली औरतें एवं गाँव में काम करने वाली नर्सें , बालवाड़ी कार्यकर्ता, ग्राम सेविकाएँ, अध्यापिकाएँ इसका लाभ उठा रही हैं ।

2. जमीला कौन है ?

उत्तर- पुदुकोट्टई की नवसाक्षर युवती है ।

3. महिलाएँ किस तरह के गीत गा रही थी ?

उत्तर- साइकिल चलाना सीखने को प्रोत्साहित करने वाले गीत ।

पाठ 14

अकबरी लोटा- अन्नपूर्णानन्द

इस कहानी में काल्पनिकता का सहा रा लेते हुए कहानीकार ने लाला झाऊलाल की समस्या का हल अत्यंत रोचक ढंग से किया गया है। वह उनके मित्र और एक अंग्रेज़ पात्र के माध्यम से यह भी बताने का प्रयास किया है कि दूसरे को नीचा दिखाने के लिए व्यक्ति कुछ भी कर सकता है । लाला झाऊलाल का बेढंगा लोटा किस तर ह से ऐतिहासिक लोटा बनकर अंग्रेज़ के संग्रहालय का अंग बन जाता है।

अनुच्छेद 1

लाला झाऊलाल को खाने- पीने की कमी नहीं थी। काशी के ठठेरी बाजार में मकान था। नीचे की दुकानों सेएकसौ रुपये मासिक के करीब किराया उतर आता था। अच्छा खाते थे , अच्छा पहनते थे, पर ढाई सौ रुपये तोएकसाथ आँख सेंकने के लिए भी न मिलते थे।इसलिए जब उनकी पत्नी ने एक दिन,का एक ढाई सौ रुपये की माँग पेश की , तब उनका जी एक बार जोर से सनसनाया और फिर बैठ गया। उनकी यह दशा देखकर पत्नी ने कहा डरिए मत , आप देने में असमर्थ हों तो मैं अपने भाई से माँग लूँ?

प्रश्न 1 झाऊ लाल का मकान कहाँ था ?

उत्तर- लाला झाऊ लाल का माकन कशी के ठठेरी बाजार में था ।

प्रश्न 2 पत्नी ने कितने रुपयों की मांग की ?

उत्तर- पत्नी ने ढाई सौ रुपयों की माँग की ।

प्रश्न 3 लाला झौलाल का जीवन कैसा था ?

उत्तर- लाला झाऊ लाल का जीवन तो सुखमयी था परन्तु उनके पास अधिक धन संपत्ति नहीं थी ।

अनुच्छेद 2

लाला झाऊलाल ने देखा कि इस भीड़ में प्रधान पात्रएकअंग्रेज़ है जो नखशिख से भीगा हुआ है और जो अपनेएकपैर को हाथ से सहलाता हुआ दूसरे पैर पर नाच रहा है। उसी के पास अपराधी लोटे को भी

देखकर लाला झाऊलाल जी ने फौरन दो और दो जोड़कर स्थिति को समझ लिया। गिरने के पूर्व लोटाएकदुकान के सायबान से टकराया। वहाँ टकराकर उस दुकान पर खड़े उस अंग्रेज़ को उसने सांगोपांग स्नान कराया और फिर उसी के बूट पर आ गिरा।

प्रश्न 1 भीड़ का प्रधान पात्र कौन था ?

उत्तर- भीड़ का प्रधान पात्रएकअंग्रेज़ था ।

प्रश्न 2 अंग्रेज़ की स्थिति का वर्णन करो ?

उत्तर- अंग्रेज़ नख शिख से भीगा हुआ था जो अपनेएकपैर सहलाता हुआ दूसरे पैर पर नाच रहा था ।

प्रश्न 3 अंग्रेज़ के ऊपर गिरने से पहले लोटा कहाँ टकराया ?

उत्तर- दुकान के सायबान से ।

गद्यांश 3

सोलहवीं शताब्दी की बात है। बादशाह हुमायूँ शेरशाह से हारकर भागा था और ¯सिध के रेगिस्तान में मारा- मारा फिर रहा था।एकअवसर पर प्यास से उसकी जान निकल रही थी। उस समयएकब्राह्मण ने इसी लोटे से पानी पिलाकर उसकी जान बचाई थी। हुमायूँ के बाद अकबर ने उस ब्राह्मण का पता लगाकर उससे इस लोटे को ले लिया और इसके बदले में उसे इसी प्रकार के दस सोने के लोटे प्रदान किए। यह लोटा सम्राट अकबर को बहुत प्यारा था। इसी से इसका नाम अकबरी लोटा पड़ा। वह बराबर इसी से वजू करता था। सन् 57 तक इसके शाही घराने में रहने का पता है। पर इसके बाद लापता हो गया। कलकत्ता के म्यूजियम में इसका प्लास्टर का मॉडल रखा हुआ है । पता नहीं यह लोटा इस आदमी के पास कैसे आया ? म्यूजियम वालों को पता चले तो फैंसी दाम देकर खरीद ले जाएँ।

प्रश्न 1 हुमायूँ किस से हर कर भाग गए थे ?

उत्तर- हुमायूँ शेर शाह से हार कर भाग गए थे ।

प्रश्न 2 हुमायूँ के बाद लोटा किसके पास गया ?

उत्तर- हुमायूँ के बाद लोटा अकबर के गया ।

प्रश्न 3 इस लोटे का नाम अकबरी लोटा कैसे पड़ा ?

उत्तर- अकबर को अत्यंत प्रिय होने के कारण इसका नाम अकबरी लोटा पड़ा ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध कहाँ से किया थाध्लिखिए ।

उत्तर- पंडित बिलवासी मिश्र लाला झाऊलाल के घनिष्ठ मित्र थे। अपने मित्र को कठिनाई में देख उसकी सहायता करने का निश्चय किया। जब पंडित जी के पास कहीं से भी रुपयों का प्रबंध नही हुआ तो उन्होंने अपनी पत्नी के संदूक में से ढाई सौरूपए चोरी किए । इस प्रकार से पंडित बिलवासी मिश्र ने रुपयों का प्रबंध किया ।

प्रश्न 2 अंग्रेज़ के सामने बिलवासी जी ने झाऊलाल को पहचाननें तक से क्यों इंकार कर दिया था ? आपके विचार से बिलवासी जी ऐसा अजीब व्यवहार क्यों कर रहे थे ? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- अंग्रेज़ के सामने बिलवासी जी ने झाऊलाल को पहचाननें से इंकार कर दिया थाए उन्होंने अंग्रेज़ से कह दिया कि वे लाला जी के मित्र है। तो वह उन से कोई बात नही करेगा। वह तुरंत पुलिस थाने जाकर लाला जी के विरुद्ध रिपोर्ट करेगा और इसके बाद वह ह र्जाने की मांग भी कर सकता है लाला जी भलाई के लिए बिलवासी जी ने अपने व्यवहार में परिवर्तन किया और अंग्रेज़ को अपने तरीके से समझाने-बुझाने का प्रयत्न किया ।

प्रश्न 3. पाठ में पंडित बिलवासी मिश्र अपने मित्र झाऊलाल की मदद के लिए अपने घर में चोरी करते है। अपने विवेक आधार पर बताइए कि क्या चोरी करके किसी की सहायता करना ठीक है ?

उत्तर- मित्र की सहायता करना एक अच्छा काम है । किन्तु सहायता के नाम पर नैतिकता को भूल जाना ठीक नही है । मित्र के लिए चोरी जैसे किसी भी विचार को अपने मन में न आने दें। मित्र को सही सलाह देना तथा उसके लिए स्वयं को गलत कार्यो में उलझाने से बचाना ही सर्वथा उचित है।

प्रश्न 4. लाला झाऊलाल के बारे में आप क्या जानते है ? संक्षिप्त में उत्तर दीजिए।

उत्तर- लाला झाऊलाल काशी के ठठेरी बाजार में रहते थे। उन्हें खाने- पीने की कोई कमी नही थी वे अच्छा खाते और अच्छा पहनते थे।लेकिन वे थोड़े कंजूस प्रवृति के व्यक्ति थे। रूपए देने का नाम सुनकर उनका दिल बैठ जाता था।

अतिरिक्त प्रश्न

प्रश्न- कौन लोटे को रद्दी बता रहा था?

उत्तर- अंग्रेज़

प्रश्न- हुमायूँ की जान किस तरह बची थी?

उत्तर- रेगिस्तान में भटकते हुए उसेएकब्राह्मण ने पानी पिलाया था।

प्रश्न- मेजर डगलस कौन थे ?

उत्तर- उस अंग्रेज़ के पड़ोसी थे जिसे चोट लगी थी ।

प्रश्न- वज़ू करना क्या है ?

उत्तर- नमाज पढ़ने से पहले मुसलमान अपने हाथ पैर धोते है जिसे वज़ू करना कहते हैं ।

पाठ 15 सूरदास के पद

सूरदास

इस पाठ में सूरदास द्वारा रचित दो पद हैं। पहले पद में बालक कृष्ण अपनी चोटी के विषय में अपनी मैया यशोदा से संवाद कर रहे हैं। दूसरे पद में एक गोपी यशोदा से कृष्ण के माखन चोरी करने की शिकायत कर रही है । वात्सल्य रस की सुंदर अनुभूति इन पदों के द्वारा हो रही है।

मैया कबहुं बढ़ैगी चोटी।
किती बेर मोहि दूध पियत भइ यह अजहूं है छोटी॥
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों ह्वै है लांबी मोटी।
काढ़त गुहत न्हवावत जैहै नागिन-सी भुई लोटी॥
काचो दूध पियावति पचि पचि देति न माखन रोटी।
सूरदास त्रिभुवन मनमोहन हरि हलधर की जोटी॥

1. मैया किसे कहा गया है ?

उत्तर- यशोदा को

2. कौन कह रहा है ?

उत्तर- श्रीकृष्ण

3. अजहूँ का क्या अर्थ है ?

उत्तर- आज भी

4. बल शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ है ?

उत्तर- बलराम के लिए

5. इस पद की भाषा कौन सी है ?

उत्तर- ब्रजभाषा

तेरैं लाल मेरौ माखन खायौ ।

दुपहर दिवस जानि घर सूनो ढूँढी.ढँढोरि आपही आयौ ।

खोलि किवारिएपैठि मंदिर मैंए दूध दही सब सखनि खावायौ ।

प्रश्न अभ्यास

1. कौन किससे कह रहा है ?

उत्तर- एक गोपी मैया यशोदा से कह रही है ।

2. यहाँ किसकी शिकायत हो रही है ?

उत्तर- श्रीकृष्ण की

3. उसके बारे में क्या शिकायत है ?

उत्तर- वह माखन चुरा लेता है ।

4 . दूध दही में कौन सा समास है ?

उत्तर- द्वंद्व समास

5. माखन चुराने वाले को क्या कहा जाता है ?

उत्तर- माखनचोर यानी श्री कृष्ण ।

अतिरिक्त प्रश्न

1. गोपी यशोदा के पास क्यों आई थी ?

उत्तर- श्रीकृष्ण की शिकायत करने के लिए ।

2. श्रीकृष्ण कब और किसके घर गए ?

उत्तर- दोपहर के समयए गोपी के घर गए।

3. गोपी यशोदा पर क्या आरोप लगाती है ?

उत्तर- तुमने अपने पुत्र को क्या सिखाया है ? तुमने ही क्या अनोखा पुत्र जन्मा है ?

4. उपमा अलंकार काएकउदाहरण लिखिए ।

उत्तर- नागिन सी भुई लोटी

5. इन पदों की भाषा कौन-सी है ?

उत्तर- ब्रज भाषा ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. श्री कृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्या सोच रहे थे ?

उत्तर- श्री कृष्ण अपनी चोटी के विषय में सोच रहे थे कि न जाने क्यों उनकी चोटी छोटी क्यों है । बड़े भैया बलराम की चोटी की तरह मेरी चोटी न जाने कब बदेगी। माँ भी यही कहती है कि जल्दी मेरी चोटी बलराम भैया की तरह मोटी, घनी और लम्बी हो जाएगी ।

प्रश्न 2. तै ही पूत अनोखो जायो....पंक्तियों में ग्वालन के मन के कौन-कौन से भाव मुखरित हुए है ?

उत्तर- उक्त पंक्ति के माध्यम से ग्वालिन ने यशोदा मैया पर कटाक्ष किया है कि उन्होंने कोई अनोखा पुत्र नही जन्मा है। वह भी दूसरे बच्चों के समान है। लेकिन फिर भी उका बेटा कृष्ण माखन की चोरी करता है। इसलिए यशोदा तुम अपने पुत्र को समझाओ ।

प्रश्न 3. माखन खाते समय श्री कृष्ण थोड़ा-सा माखन गिरा क्यों देते हैं ?

उत्तर- वे ऐसा इसलिए करते है, ताकि किसी को यह प्या न चले कि माखन कृष्ण ने खाया है। लोग यही सोचें कि किसी पक्षी या किसी पशु ने इस तरह छिटका कर माखन खाया है ।

प्रश्न 4. सूरदास की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए ।

उत्तर- सूरदास भगवान श्री कृष्ण को अपना आराध्य मानते थे। वे परम कृष्ण भक्त थे। उनका जीवन कृष्ण से शुरू होकर कृष्ण पर ही जाकर समाप्त हुआ। पहले पद में उन्होंने कृष्ण के बाल सुलभरूप का सुंदर अंकन किया है। दूसरे पद में ग्वालिन द्वारा माता यशोदा को उलाहना देना व्यावहारिक जान पड़ता है। वास्तव में ग्वालिन और माँ के रूप में स्वयं सूरदास हैं ।

1. बालक श्रीकृष्ण किस लोभ के कारण दूध पीने के लिए तैयार हुए?

उत्तर:- माता यशोदा ने श्रीकृष्ण को बताया की दूध पीने से उनकी चोटी बलराम भैया की तरह हो जाएगी। श्रीकृष्ण अपनी चोटी बलराम जी की चोटी की तरह मोटी और बड़ी करना चाहते थे इस लोभ के कारण वे दूध पीने के लिए तैयार हुए।

2. श्रीकृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्या-क्या सोच रहे थे?

उत्तर:- श्रीकृष्ण अपनी चोटी के विषय में सोच रहे थे कि उनकी चोटी भी बलराम भैया की तरह लम्बी , मोटी हो जाएगी फिर वह नागिन जैसे लहराएगी।

3. दूध की तुलना में श्रीकृष्ण कौन-से खाद्य पदार्थ को अधिक पसंद करते हैं?

उत्तर:- दूध की तुलना में श्रीकृष्ण को माखन-रोटी अधिक पसंद करते हैं।

4. 'तैं ही पूत अनोखी जायौ' - पंक्तियों में ग्वालन के मन के कौन-से भाव मुखरित हो रहे हैं?

उत्तर:- 'तैं ही पूत अनोखी जायौ' - पंक्तियों में ग्वालन के मन
में यशोदा के लिए कृष्ण जैसा पुत्र पाने पर ईर्ष्या की भावना व कृष्ण के उनका माखन चुराने पर क्रोध के भाव मुखरित हो रहे हैं। इसलिए वह यशोदा माता को उलाहना दे रही हैं।

5. मक्खन चुराते और खाते समय श्रीकृष्ण थोड़ा-सा मक्खन बिखरा क्यों देते हैं?

उत्तर:- श्रीकृष्ण को माखन ऊँचे टंगे छींकों से चुराने में दिक्कत होती थी इसलिए माखन गिर जाता था तथा चुराते समय वे आधा माखन खुद खाते हैं व आधा अपने सखाओं को खिलाते हैं। जिसके कारण माखन जगह-जगह ज़मीन पर गिर जाता है।

6. दोनों पदों में से आपको कौन-सा पद अधिक अच्छा लगा और क्यों?

उत्तर:- दोनों पदों में प्रथम पद सबसे अच्छा लगता है। क्योंकि यहाँ बाल स्वभाववश प्राय : श्रीकृष्ण दूध पीने में आनाकानी किया करते थे। तब एक दिन माता यशोदा ने प्रलोभन दिया कि कान्हा ! तू नित्य कच्चा दूध पिया कर, इससे तेरी चोटी दाऊ (बलराम) जैसी मोटी व लंबी हो जाएगी। मैया के कहने पर कान्हा दूध पीने लगे। अधिक समय बीतने पर श्रीकृष्ण अपने बालपन के कारण माता से अनुनय-विनय करते हैं कि तुम्हारे कहने पर मैंने दूध पिया पर फिर भी मेरी चोटी नहीं बढ़ रही। उनकी माता से उनकी नाराज़गी व्यक्त करना, दूध न पीने का हट करना , बलराम भैया की तरह चोटी पाने का हट करना हृदय को बड़ा ही आनंद देता है।

7. दूसरे पद को पढ़कर बताइए कि आपके अनुसार उस समय श्रीकृष्ण की उम्र क्या रही होगी?

उत्तर:- दूसरे पद को पढ़कर लगता है कि उस समय श्रीकृष्ण की उम्र चार से सा त साल रही होगी तभी उनके छोटे-छोटे हाथों से सावधानी बरतने पर भी माखन बिखर जाता था।

• भाषा की बात

8. श्रीकृष्ण गोपियों का माखन चुरा- चुराकर खाते थे इसलिए उन्हें माखन चुरानेवाला भी कहा गया है। इसके लिए एक शब्द दीजिए।

उत्तर:- माखन चुरानेवाला - माखनचोर

9. श्रीकृष्ण के लिए पाँच पर्यायवाची शब्द लिखिए।

उत्तर:- श्रीकृष्ण के पर्यायवाची शब्द - गोविन्द, रणछोड़, वासुदेव, मुरलीधर, नन्दलाल।

10. कुछ शब्द परस्पर मिलते- जुलते अर्थवाले होते हैं , उन्हें पर्यायवाची कहते हैं। और कुछ विपरीत अर्थवाले भी। समानार्थी शब्द पर्यायवाची कहे जाते हैं और विपरीतार्थक शब्द विलोम, जैसे -

पर्यायवाची- चंद्रमा-शशि, इंदु, राका मधुकर-भ्रमर, भौंरा, मधुप सूर्य-रवि, भानु,दिनकर

विपरीतार्थक-

दिन-रात

श्वेत-श्याम

शीत-उष्ण

पाठों से दोनों प्रकार के शब्दों को खोजकर लिखिए।

उत्तर:-

पर्यायवाची शब्द

बेनी - चोटी

मैया - जननी, माँ, माता

दूध - दुग्ध, पय, गोरस

काढ़त - गुहत

बलराम - दाऊ, हलधर

ढोटा - सुत, पुत्र, बेटा

विपरीतार्थक शब्द लम्बी - छोटी

स्याम - श्वेत

संग्रह - विग्रह

विज्ञ - अज्ञ

रात - दिन

प्रकट - ओझल

पाठ 16 पानी की कहानी

रामचंद्र तिवारी

इस पाठ में विज्ञान विषय का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। इसमें पानी का मानवीकरण करते हुए उसकी विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन किया गया है। इसमें पानी के निर्माण तथा अस्तित्व बचाए रखने की जानकारी दी गई है। इसके अलावा ओस की एक बूँद अनेक अवस्थाओं से गुजरकर वायु , बादल, समुद्र, ज्वालामुखी। फिर नदी ओर नल के पानी से होते हुए पेड़ की पत्ती तक की यात्रा करने का रोचक वर्णन बूँद की कहानी उसी की ज़ुबानी प्रस्तुत किया गया है ।

गद्यांश 1

मैं आगे बढ़ा ही था कि बेर की झाड़ी पर से मोती- सीएकबूँद मेरे हाथ पर आ पड़ी। मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब मैंने देखा कि ओस की बूँद मेरी कलाई पर से सरककर हथेली पर आ गई। मेरी दृष्टि पड़ते ही वह ठहर गई। थोड़ी दरे में कतार के कतार की- सी झंकार सुनाई देने लगी। मैंनंे सोचा

कि कोई सितार बजा रहा होगा। चारों ओर देखा। कोई नहीं। फिर अनुभव हुआ कि यह स्वर मेरी हथेली से निकल रहा है। ध्या न से देखने पर मालूम हुआ कि बूँद के दो कण हो गए हैं और वे दोनों हिल-हिलकर यह स्वर उत्पन्न कर रहे हैं मानो बोल रहे हों। उसी सुरीली आवाज़ में मैंने सुना सुनो , सुनो...मैं चुप था। फिर आवाज़ आई , सुनो, सुनो। अब मुझसे रहा न गया। मेरे मुख से निकल गया , कहो, कहो। ओस की बूँद मानो प्रसन्नता से हिली और बोली मैं ओस हूँ।

प्रश्न 1 लेखक के हाथ पर क्या आकर गिरा?

उत्तर- ओस की बूँद।

प्रश्न 2 पानी की बूँद कहाँ से गिरी थी?

उत्तर- बेर की झड़ी से।

प्रश्न 3 सितार के तारों सी झंकार कहाँ से उत्पन्न हो रही थी?

उत्तर- ओस को बूँद से

प्रश्न 4 आवाज़ सुनकर लेखक ने क्या सोचा?

उत्तर- आवाज़ सुनकर लेखक ने सोचा कोई सितार बजा रहा है।

अनुच्छेद 2

मैं सोच रही थी कि यहाँ पर जीवों को कैसे दिखाई पड़ता होगा कि सामने ऐसा जीव दिखाई पड़ा मानो कोई लालटेन लिए घूम रहा हो। यह एक अत्यंत सुंदर मछली थी। इसके शरीर सेएकप्रकार की चमक निकलती थी जो इसे मार्ग दिखलाती थी। इसका प्रकाश देखकर कितनी छोटी- छोटी अनजान मछलियाँ इसके पास आ जाती थीं और यह जब भूखी होती थी तो पेट भर उनका भोजन करती थी। विचित्र है! जब मैं और नीचे समुद्र की गहरी तह में पहुँची तो देखा कि वहाँ भी जंगल है। छोटे ठिंगने, मोटे पत्ते वाले पेड़ बहुतायत से उगे हुए हैं। वहाँ पर पहाड़ियाँ हैं ,घाटियाँ हैं। इन पहाड़ियों की गुफ़ाओं में नाना प्रकार के जीव रहते हैं जो निपट अँधे तथा महा आलसी हैं।

प्रश्न 1 पानी की बूँद क्या सोच रही थी ?

उत्तर- पानी की बूँद ने अँधेरा देखकर सोचा कि यहाँ जीवों को कैसे दिखाई पड़ता होगा ।

प्रश्न 2 किसके शरीर से चमक उत्पन्न हो रही थी ?

उत्तर- एक सुन्दर मछली के शरीर से ।

प्रश्न 3 समुद्र में और गहरे में जाने पर क्या मिला ?

उत्तर- छोटे ठिगने पेड़,घाटियाँ, पहाड़ियाँ तथा आलसी जीव ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. ओस की बूँद कब, कहाँ और कैसे पकड़ी गयी थी ?

उत्तर- ओस की बूँद भूमि के खनिजों को अपने शरीर में घुलाकर आनंद से घूम रही थी। उसका शरीर दुर्भाग्यवश एक जड़ के रोएँ से छू गया। उसके छूते ही वह काँपने लगी। बूँद ने दूर भागने की पूरी कोशिश की । लेकिन वह असफल रही। इस प्रकार जड़ के रोएँ द्वारा ओस की बूँद पकड़ी गई।

प्रश्न 2. ओस की बूँद क्रोध और घृणा से क्यों काँप उठी ?

उत्तर- ओस की बूँद क्रोध और घृणा से इसलिए काँप उठी क्योंकि पेड़ की जड़ें तथा जड़ों पर उगने वाले रोएँ बड़े ही निर्दय होते है। वे असं ख्य बूंदोंएवं जल .कणों को बल .पूर्वक पृथ्वी से खींच लेते है । और अधिकांश का सब कुछ छीनकर उन्हें बाहर निकाल देते है।

प्रश्न 3. हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को पानी ने अपना पूर्वज क्यों कहा है ?

उत्तर- हजारों वर्ष पहले हाइड्रोजन और ऑक्सीजन नामक दो गैसें सूर्यमंडल में लपटों के रूप में विद्यमान थी। हाइड्रोजन और ऑक्सीजन की रासायनिक क्रिया के फलस्वरूप पानी का जन्म हुआ। इसलिए पानी ने हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को अपना पूर्वज माना है ।

प्रश्न 4. जलमंडल किसे कहते है ?

उत्तर- पृथ्वी का वह भाग जो जल से घिरा रहता है , जलमंडल कहलाता है। इसका निर्माण नदियों , झीलों, समुद्रों एवं महासागरों के द्वारा होता है। पृथ्वी की सतह का 70% से अधिक भाग जल से ढका हुआ है।

अतिरिक्त प्रश्न

1. यह पाठ किस शैली में लिखा गया ?

उत्तर- आत्मकथात्मक शैली में

2. लेखक की हथेली पर पडी बूँद किसके इन्तजार में थी ?

उत्तर- सूर्योदय के इन्तजार में

3. पेड़ की पत्तियों तक आने से पहले बूँद कहाँ थी ?

उत्तर- ज़मीन में इधर उधर घूम रही थी ।

4. बूँद लेखक की हथेली पर क्यों कूदी थी ?

उत्तर- अपनी जान बचाने के लिए,पत्तियों पर सिकुड़ी बैठी थी ।

5. लाल पीला पड़ना मुहावरे का क्या अर्थ है ?

उत्तर- क्रोधित होना ।

1. लेखक को ओस की बूँद कहाँ मिली?

उत्तर:- लेखक को बेर की झाड़ी पर ओस की बूँद मिली।

2. ओस की बूँद क्रोध और घृणा से क्यों काँप उठी?

उत्तर:- पेड़ों की जड़ों में निकले रोएँ द्वारा जल की बूँदों को बलपूर्वक धरती के भूगर्भ से खींच लाना व उनको खा जाना याद करते ही बूँद क्रोध व घृणा से काँप उठी।

3. हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को पानी ने अपना पूर्वज/पुरखा क्यों कहा?

उत्तर:- जब ब्रह्मांड में पृथ्वी व उसके साथी ग्रहों का उद्भव भी नहीं हुआ था तब ब्रह्मांड में हाइड्रोजन व ऑक्सीजन दो गैसें सूर्यमंडल में लपटों के रूप में विद्यमान थीं। ऑक्सीजन वहाइड्रोजन के बीच रासायनिक क्रिया हुई। दोनों के संयोग से पानी का जन्म हुआ। इसलिए बूँद ने इन दोनों को अपना पूर्वज कहा है।

4. "पानी की कहानी" के आधार पर पानी के जन्म और जीवन-यात्रा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर:- पानी का जन्म (ह्द्रजन) हाइड्रोजन व (ओषजन) ऑक्सीजन के बीच रासायनिक प्रक्रिया द्वारा होता है। जब ब्रह्मांड में पृथ्वी व उसके साथी ग्रहों का उद्भव भी नहीं हुआ था तबब्रह्मांड में हाइड्रोजन व ऑक्सीजन दो गैसें सूर्यमंडल में लपटों के रूप में विद्य मान थीं।किसी उल्कापिंड के सूर्य से टकराने से सूर्य के टुकडें कड़े हो गए उन्हीं टुकड़ों में से एकटुकड़ा पृथ्वी रूप में उत्पन्न हुआ और इसी ग्रह में ऑक्सीजन व हाइड्रोजन के बीच रासायनिक क्रिया हुई और दोनों के संयोग से पानी का जन्म हुआ। सर्वप्रथम बूँद भाप के रूप में पृथ्वी के वातावरण में ईद- गिर्द घूमती रहती है, तत्पश्चात ठोस बर्फ के रूप में विद्यमान हो जाती है। समुद्र से होती हुई वह गर्म- धारा से मिलकर ठोसरूप को त्यागकर जल का रूप धारण कर लेती है।

5. कहानी के अंत और आरंभ के हिस्से को स्वयं पढ़कर देखिए और बताइए कि ओस की बूँद लेखक को आपबीती सुनाते हुए किसकी प्रतीक्षा कर रही थी?

उत्तर:- कहानी के अंत और आरंभ के हिस्से को पढ़कर यह पता चलता है कि ओस की बूँद सूर्य उदय की प्रतीक्षा कर रही थी।

6. समुद्र के तट पर बसे नगरों में अधिक ठंड और अधिक गरमी क्यों नहीं पड़ती?

उत्तर:- समुद्र के तट पर बसे नगरों में अधिक ठंड और अधिक गरमी नहीं पड़ती क्योंकि वहाँ के वातावरण में सदा नमी होती है।

7. पेड़ के भीतर फव्वारा नहीं होता तब पेड़ की जड़ों से पत्ते तक पानी कैसे पहुँचता है ? इस क्रिया को वनस्पति शास्त्र में क्या कहते हैं?

उत्तर:- पेड़ के भीतर फव्वा रा नहीं होता तब पेड़ की जड़ों से पत्ते तक पानी पहुँचता है क्योंकि पेड़ की जड़ों व तनों में जाइलम और फ्लोएम नामक वाहिकाएँ होती हैं जो पानी जड़ों सेपत्तियों तक पहुँचाती हैं। इस क्रिया को वनस्पति शास्त्र में 'संवहन' (ट्रांसपाईरेशन) कहते हैं।

• भाषा की बात

8. किसी भी क्रिया को पूरी करने में जो भी संज्ञा आदि शब्द संलग्न होते हैं , वे अपनी अलग-अलग भूमिकाओं के अनुसार अलग-अलग कारकों में वाक्य मेंदिखाई पडते हैं ; जैसे - "वह हाथों से शिकार को जकड़ लेती थी।"

जकड़ना क्रिया तभी संपन्न हो पाएगी जब कोई व्यक्ति (वह) जकड़नेवाला हो, कोई वस्तु (शिकार) हो जिसे जकड़ा जाए। इन भूमिकाओं की प्रकृति अलग- अलग है। व्याकरण में ये भूमिकाएँ कारकों के अलग-अलग भेदों; जैसे - कर्ता, कर्म, करण आदि से स्पष्ट होती हैं।

अपनी पाठ्यपुस्तक से इस प्रकार के पाँच और उदाहरण खोजकर लिखिए और उन्हें भलीभाँति परिभाषित कीजिए।

उत्तर:- 1. आगे एक और बूँद मेरा हाथ पकड़कर ऊपर खींच रही थी।

पकड़कर - सबंध कारक

2. हम बड़ी तेजी से बाहर फेंक दिए गए।

तेज़ी से - अपादान कारक

3. मैं प्रति क्षण उसमें से निकल भागने की चेष्टा में लगी रहती थी।

मैं - कर्ता

4. वह चाकू से फल काटकर खाता है।

चाकू से - करण कारक

5. बदलू लाख से चूड़ियाँ बनाता है।

लाख से - करण कारक

पाठ 17 .बाज और साँप

निर्मल वर्मा

इस पाठ में डॉ प्राणियों के माध्यम से उनके जीने के ढंग का वर्णन है । प्राणी बाज जो साहस का प्रतीक है, वह अपनी जान की परवाह किए बिना आसमान की ऊँचाइयाँ नापना जानता है। वह स्वतंत्रता को अपनी जान से भी बढ़कर चाहता है। दूसरा प्राणी सांप अपनी नम एवं अँधेरी खोखल तक ही सीमित रहता है। बाज का साहस उस कायर प्राणी में भी भर है।

गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

समुद्र के किनारे ऊँचे पर्वत की अँधेरी गुफ़ा में एक साँप रहता था। समुद्र की तूफानी लहरें धूप में चमकतीं, झिलमिलातीं और दिन भर पर्वत की चट्टानों से टकराती रहती थीं। पर्वत की अँधेरी घाटियों मेंएकनदी भी बहती थी। अपने रास्ते पर बिखरे पत्थरों को तोड़ती , शोर मचाती हुई यह नदी बड़े जोर से समुद्र की ओर लपकती जाती थी। जिस जगह पर नदी और समुद्र का मिलाप होता था , वहाँ लहरें दूध के झाग-सी सफेद दिखाई देती थीं। अपनी गुफ़ा में बैठा हुआ साँप सब कुछ देखा करता लहरों का गर्जन, आकाश में छिपती हुई पहाड़ियाँ, टेढ़ी-मेढ़ी बल खाती हुई नदी की गुस्से से भरी आवाजें। वह मन ही मन खुश होता था कि इस गर्जन- तर्जन के होते हुए भी वह सुखी और सुरक्षित है। कोई उसे दुख नहीं दे सकता। सबसे अलग, सबसे दूर, वह अपनी गुफ़ा का स्वामी है। न किसी से लेना, न किसी से देना।

प्रश्न 1 साँप कहाँ रहता था ?

उत्तर- साँप एक गुफ़ा में रहता था ।

प्रश्न 2 समुद्र की तूफानी लहरें धुप में कैसी लगती थी ?

उत्तर- चमकती झिलमिलाती हुई ।

प्रश्न 3 नदी किससे मिलने के लिए उतावली थी ?

उत्तर- समुद्र से ।

प्रश्न 4 मन ही मन में साँप क्यों खुश हो रहा था ?

उत्तर- उसे लगता था कि सागर की गर्जन तर्जन से दूर वह सुखी और सुरक्षित है।

गद्यांश 2

बाज की ऐसी करुण चीख सुनकर साँप कुछ सिटपिटा- सा गया।एक क्षण के लिए उसके मन में उस आकाश के प्रति इच्छा पैदा हो गई जिसके वियोग में बाज इतना व्याकुल होकर छटपटा रहा था। उसने बाज से कहा यदि तुम्हें स्वतंत्रता इतनी प्यारी है तो इस चट्टा न के किनारे से ऊपर क्यों नहीं उड़ जाने की कोशिश करते। हो सकता है कि तुम्हारे पैरों में अभी इतनी ताकत बाकी हो कि तुम आकाश में उड़ सको। कोशिश करने में क्या हर्ज है बाज में एक नयी आशा जग उठी। वह दूने उत्साह से अपने घायल शरीर को घसीटता हुआ चट्टान के किनारे तक खीं च लाया। खुले आकाश को देखकर उसकी आँखें चमक उठीं। उसने एक गहरी, लंबी साँस ली और अपने पंख फैलाकर हवा में कूद पड़ा।

प्रश्न 1 साँप क्यों छटपटा गया ?

उत्तर- बाज की चीख सुनकर साँप छटपटा गया ।

प्रश्न 2 साँप के मन में आकाश में उड़ने की लालशा क्यों गयी ?

उत्तर- बाज की ख़ुशी को देखकर साँप के मन में आकाश में उड़ने की इच्छा जगी ।

प्रश्न 3 बाज ने उड़ने की अंतिम कोशिश कैसे की ?

उत्तर- साँप अपने घायल शरीर को घसीटता हुआ चट्टान तक ले गया औरएकलम्बी साँस लेकर चट्टान से कूद गया।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. घायल होने के बाद भी बाज ने यह क्यों कहाए मुझे कोई शिकायत नहीं है। विचार प्रकट कीजिए ?

उत्तर- बाज के अनुसार उसने अपनी जिंदगी जी भर के जी ली है। कोई ऐसा सुख नहीं है जो उसने न भोगा हो। इसलिए बाज को अपनी जिंदगी से कोई शिकायत नहीं है।

प्रश्न 2. बाज जिंदगी भर आकाश में ही उड़ता रहा, फिर घायल होने के बाद भी वह उडऩा क्यों चाहता था ?

उत्तर- अपने अंतिम समय में भी बाज बहादुरी का परिचय देते हुए अपने जीवन की सार्थकता को सि . करना चाहता था। यही उसका लक्ष्य था। इसलिए उसने अंतिम समय में उड़ान भरने का निश्चय किया।

प्रश्न 3. साँप उडऩे की इच्छा को मूर्खतापूर्ण मानता था। फिर उसने उडऩे की कोशिश क्यों की ?

उत्तर- अंतिम समय में बाज को उडऩे की कोशिश कर देखकर साँप के मन में भी जिज्ञासा उत्पन्न हो गई। वह सोच में पड़ गया कि इस आकाश में आखिर है क्या ? इसलिए उसने उडऩे की कोशिश की।

प्रश्न 4. बाज के लिए लहरों ने गीत क्यों गाया था ?

उत्तर- बाज के लिए लहरों ने गीत गाया था ताकि संसार बाज के जीवन से प्रेरणा ले और अपना जीवन साहसपूर्वक बिताए।

प्रश्न 5. घायल बाज को देखकर साँप खुश क्यों हुआ होगा ?

उत्तर- बाज साँप का परम शत्रु है। दोनों में जाति से शत्रुता होती है। घायल बाज से साँप को कोई खतरा नहीं थाए इसलिए साँप खुश था।

अतिरिक्त प्रश्न..

1.बाज कहाँ गिरा और क्यों ?

उत्तर- नदी में,क्योंकि घायल होने से पंख टूट गए और वह अपना बोझ संभाल नहीं सका ।

2.बाज की करुणचीख का साँप पर क्या असर हुआ ?

उत्तर- साँप के मन में भी आकाश में उड़ने की इच्छा जाग उठी ।

3.लहरें गीत क्यों गा रही थी ?

उत्तर- बाज की वीरता ,साहस के साथ शत्रुओं का मुकाबला करने तथा उसकी स्वतन्त्रप्रियता के लिए गीत गा रहा है।

4.बाज का चरित्र हमें क्या शिक्षा दे रहा है ?

उत्तर- खतरों का सा मना करते समय यदि प्राणों की बाजी लगानी पड़े तो भी हमें पीछे नहीं हटना चाहिए।

5- दूधके समान सफ़ेद झाग में कौन सा अलंकार है ?

उत्तर- उपमा अलंकार

6. साँप की गुफ़ा कहाँ थी ?

उत्तर- साँप की गुफ़ा समुद्र के किनारे ऊँचे पर्वत में थी ।

7. बाज किसका प्रतीक है ?

उत्तर- साहस एवं वीरता और स्वतंत्रता का प्रतीक है ।

8.नदी कहाँ बहती है ?

उत्तर- पर्वत की अँधेरी घाटियों में ।

9. साँप द्वारा प्रेरित करने पर बाज पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर- बाज में एक नया जोश भर गया। उसने अपने पंख फैलाए और उड़ने के लिए हवा में कूद पड़ा ।

10. दुबारा उड़ने पर घायल बाज का स्वागत किसने किया ?

उत्तर- लहरों ने ।

1. घायल होने के बाद भी बाज ने यह क्यों कहा, "मुझे कोई शिकायत नहीं है।" विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर:- घायल होने के बाद भी बाज ने यह कहा कि - "मुझे कोई शिकायत नहीं है।" उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वह किसी भी कीमत पर समझौतावादी जीवन शैली पसंद नहीं करताथा। वह अपने अधिकारों के लिए लड़ने में विश्वास रखता था। उसने अपनी ज़िंदगी को भरपूर भोगा। वह असीम आकाश में जी भरकर उड़ान भर चुका था।जब तक उसके शरीर मेंताकत रही तब तक ऐसा कोई सुख नहीं बचा जिसे उसने न भोगा हो। वह अपने जीवन से पूर्णतः संतुष्ट था।

2. बाज ज़िंदगी भर आकाश में ही उड़ता रहा फिर घायल होने के बाद भी वह उड़ना क्यों चाहता था?

उत्तर:- बाज ज़िंदगी भर आकाश में उड़ता रहा , उसने आकाश की असीम ऊँचाइयों को अपने पंखों से नापा। बाज साहसी था। वह किसी भी कीमत पर समझौतावादी जीवन शैली पसंदनहीं करता था। अतः कायर की मौत नहीं मरना चाहता था। वह अंतिम क्षण तक जीवन की आवश्यकताओं के लिए संघर्ष करना चाहता था।

3. साँप उड़ने की इच्छा को मूर्खतापूर्ण मानता था। फिर उसने उड़ने की कोशिश क्यों की?

उत्तर:- साँप उड़ने की इच्छा को मूर्ख तापूर्ण मानता था क्योंकि वह मानता था कि वह उड़ने में सक्षम नहीं है। पर जब उसने बाज के मन में आकाश में उड़ने के लिए तड़प देखी तब साँप के मन में भी उत्सुकता जागी कि आकाश का मुक्त जीवन कैसा होता है ? इस रहस्य का पता लगाना ही चाहिए। तब उसने भी आकाश में एक बार उड़ने की कोशिश करने का निश्चय किया।

4. बाज के लिए लहरों ने गीत क्यों गाया था?

उत्तर:- बाज की बहादुरी पर प्रसन्न होकर लहरों ने गीत गाया था। उसने अपने प्राण गँवा दिए परन्तु ज़िंदगी के खतरे का सामना करने से पीछे नहीं हटा।

5. घायल बाज को देखकर साँप खुश क्यों हुआ होगा?

उत्तर:- साँप का शत्रु बाज है चूँकि वो उसका आहार होता है। घायल बाज उसे किसी प्रकार का आघात नहीं पहुँचा सकता था इसलिए घायल बाज को देखकर साँप के लिए खुश होनास्वाभाविक था।

6. कहानी में से वे पंक्तियाँ चुनकर लिखिए जिनसे स्वतंत्रता की प्रेरणा मिलती हो।

उत्तर:- कहानी की स्वतंत्रता से संबंधित पंक्तियाँ -

1. जब तक शरीर में ताकत रही , कोई सुख ऐसा नहीं बचा जिसे न भोगा हो। दूर- दूर तक उडानें भरी हैं, आकाश की असीम ऊँचाइयों को अपने पंखों से नाप आया हूँ।

2. "आह! काश, मैं सिर्फ एक बार आकाश में उड पाता।"

3. पर वह समय दूर नहीं है, जब तुम्हारे खून की एक- एक बूँद जिंदगी के अँधेरे में प्रकाश फैलाएगी और साहसी, बहादुर दिलों में स्वतंत्रता और प्रकाश के लिए प्रेम पैदा करेगी।

7. मानव ने भी हमेशा पक्षियों की तरह उड़ने की इच्छा की है। आज मनुष्य उड़ने की इच्छा किन साधनों से पूरी करता है।

उत्तर:- मानव ने आदिकाल से ही पक्षियों की तरह उड़ने की इच्छा मन में रखी है। किन्तु शारीरिक असमर्थता की वजह से उड़ नहीं पा रहा था जिसका परिणाम यह हुआ कि मनुष्य हवाईजहाज का आविष्कार कर दिखाया। आज मनुष्य अपने उड़ने की इच्छा की पूर्ति हवाई जहाज , हेलीकॉप्टर, गैस-बैलून आदि से करता है।

• भाषा की बात

8. कहानी में से अपनी पसंद के पाँच मुहावरे चुनकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर:- 1. भाँप लेना - बच्चों का मुँह देखकर माता जी ने परीक्षा का क्या नतीजा आया होगा यह भाँप लिया।

2. हिम्मत बाँधना - मित्र के आने पर ही परीक्षा के लिए राहुल की हिम्मत बँधी।

3. अंतिम साँस गिनना - दादाजी की गिरती साँसें देखकर माता जी ने स्थिति भाँप ली वे कि वे उनकी अंतिम साँस गिन रहे हैं।

4. मन में आशा जागना - शिक्षिका की कहानी ने मेरे मन में आशा जगा दी।

5. प्राण हथेली में रखना - सिपाही ने देशवासियों की जान बचाने के लिए अपने प्राणों को हथेली में रख देते हैं।

9. 'आरामदेह' शब्द में 'देह' प्रत्यय है। यहाँ 'देह' 'देनेवाला' के अर्थ में प्रयुक्त है। देनेवाला के अर्थ में 'द', 'प्रद', 'दाता', 'दाई' आदि का प्रयोग भी होता है , जैसे - सुखद, सुखदाता, सुखदाई, सुखप्रद। उपर्युक्त समानार्थी प्रत्ययों को लेकर दो-दो शब्द बनाइए।

उत्तर:- प्रत्यय शब्द

द - सुखद, दुखद

दाता - परामर्शदाता, सुखदाता

दाई - सुखदाई, दुखदाई

देह - विश्रामदेह, लाभदेह, आरामदेह

प्रद - लाभप्रद, हानिप्रद, शिक्षाप्रद

पाठ.18

टोपी

- संजय

इस पाठ में लेखक ने एक लोक कथा का पुन सृजन किया है। सामाजिक सरोकारों से युक्त यह कथा राजा और प्रजा के बीच संबंधों का ज्ञान कराती है राजतन्त्र व प्रजातंत्र के बीच अंतर समझाने में यह कहानी बहुत ही सहायक है। एक नन्हीं सी गौरैया को माध्यम बनाकर कर्तव्यनिष्ठ होने की प्रेर णा इस कहानी से मिलती है।

गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

एक थी गवरइया और कथा गवरा। दोनों एक दूजे के परम संगी। जहाँ जाते , जब भी जाते, साथ ही जाते। साथ हँसते , साथ ही रोते , एक साथ खाते- पीते,एक साथ सोते। भिनसार होते ही खेतों से निकल पड़ते दाना चुगने और झुटपुटा होते ही खेतों में आ घुसते। थकान मिटाते और सारे दिन के देखे-सुने में हिस्सेदारी बटाते।एक शाम गवरइया बोली , आदमी को देखते हो ? कैसे रंग-बिरंगे कपड़े पहनते हैं! कितना फबता है उन पर कपड़ा! खाक फबता है! गवरा तपाक से बोला, कपड़ा पहन लेने के बाद तो आदमी और बदसूरत लगने लगता है।

प्रश्न 1 गवरइया और गवरा खेतों में किस समय जाते थे ?

उत्तर- भिनसार होते ही ।

प्रश्न 2 सारे दिन के किस्से गवरइया और गवरा कहाँ जाकर सुनते थे ?

उत्तर- खेतों में

प्रश्न 3 गवरइया ने गवरा से क्या कहा ?

उत्तर- गवरइया ने कहा आदमी पर कपडे कैसे फबते हैं ?

प्रश्न 4 गवरा ने गवरइया को क्या जवाब दिया ?

उत्तर- गवरा बोला कपड़ा पहनने के बाद आदमी और भी बदसूरत लगता है ।

गद्यांश 2

कदम-कदम पर मिलते कामगारों के सहयोग ने गवरइया को आगे बढ़ने पर उकसा दिया। इसके बाद वे दोनोंएकबुनकर के पास गए और इसरार करने लगे,बुनकर भइया, बुनकर भइया, इस कते सूत से कपड़ा बुन दो। बुनकर इन्हें अगबग होकर देखने लगा , हटते हो कि नहीं यहाँ से! देखते नहीं, अभी मुझे राजा जी के लिए बागा बुनना है। अभी थोड़ी देर बाद ही राजा जी के कारिंदे हाजिर हो जाएँगे। साव करे भाव तो चबाव करे चाकर। इतना कहकर बुनकर अपने काम में मशगूल हो गया।

प्रश्न 1 गवरइया को आगे बढ़ने के लिए किन बातों ने उकसा दिया ?

उत्तर- गवरइया को कदम. कदम पर मिलने वाले कामगारों ने ।

प्रश्न 2 गवरइया सूत लेजाकर किसके पास गयी?

उत्तर- बुनकर के पास ।

प्रश्न 3 बुनकर किसका काम कर रहा था?

उत्तर- बुनकर रजा का काम कर रहा था ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. गवरइया और गवरा के बीच किस बात पर बहस हुई और गवरइया को अपनी इच्छा पूरी करने का अवसर कैसे मिला ?

उत्तर- आदमी के कपड़े पहनने की बात को लेकर गवरइया और गवरा में बहस हुई। एकदिन गवरइया को रुई का फाहा मिला। उसने उसे धुनवाया कपड़ा बुनवाया फिर टोपी सिलवाई। इसी के द्वारा उसे टोपी पहनने की इच्छा पूरी करने का अवसर मिला।

प्रश्न 2. टोपी बनवाने के लिएगवरइया किस किस के पास गई ? टोपी बनने तक के ,क.एक कार्य को लिखी।

उत्तर- टोपी बनवाने के लिएगवरइया.ई लेकर सबसे पहले धुनिया के पास गई। उसके बाद कोरी से.ई से सूत कतवाया। बुनकर से कपड़ा बनवाया और अंत में दर्जी से टोपी सिलवाई।

प्रश्न 3. गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुंदने क्यों जड़ दिए ?

उत्तर- गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुंदने खुश हो कर दे दिए क्योंकिगवरइया ने दर्जी को टोपी बनाने के लिए अपने कपड़े में से आधा कपड़ा दे दिया था।

प्रश्न 4. गवरइया और गवरे की बहस के तर्कों को एक करें।

उत्तर- 1.गवरइया.. आदमी को देखते हो ? कैसे रंग.बिरंगे कपड़े पहनते हैं। कितना फबता है उन पर। लगता है आज लट जीरा चुग गए हों। कपड़े केवल अच्छा लगने के लिए नहीं मौसम की मार से बचने के लिए भी पहनता है आदमी। फिर भी आदमी कपड़ा पहनने से बाज नहीं आता। नित नए-नए लिबास सिलवाता है।

2. गवरा.. खाक फबता है। कपड़ा पहन लेने के बाद तो आदमी आर बदसूरत लगने लगता है। कपड़े पहन लेने के बाद आदमी की कुदरती खूबसूरती ही ढँक जाती है। अब तू ही सोच अभी तो तेरी सुघड़ काया का,एक कटाव मेरे सामने है। रोंवें- रोंवें की रंगत मेरी आँखों में चमक रही है। तू समझती नहीं। कपड़े पहनकर जाड़ा,गरमी, बरसात सहने की सकत भी जाती रही है और इस कपड़े में बड़ा लफड़ा है।

प्रश्न5. कारीगर के परिश्रम का उचित मूल्य न मिलने पर उसकी प्रतिक्रिया क्या होगी ?

उत्तर-1. यदि किसी कारीगर को उसकी मेहनत का उचित मूल्य नहीं मिलेगा तो वह कार्य पूरा नहीं करेगा। यदि करेगा तो फुर्ती से या खूबसूरती से नहीं करेगा।

2. गवरइया के स्वभाव से यह प्रमाणित होता है कि कार्य की सफलता के लिए उत्साह आवश्यक है। सफलता के लिए उत्साह की आवश्यकता क्यों पड़ती है ?

उत्तर- किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिए मन में उत्साह होना आवश्यक है । यदि हम किसी भी कार्य को बेमन से करेंगे तो निश्चय ही हमें उस कार्य में सफलता नहीं मिलेगी।

अतिरिक्त प्रश्न..

1.लेखक ने परम संगी किसे कहा है ?

उत्तर- गवरइया और गवरे को ।

2.गवरइया और गवरे की दिनचर्या क्या थी ?

उत्तर- प्रात: काल होते ही दाना चुगने जाना तथा अपने दैनिक कार्य करना ।

3.टोपी कहानी से तुम्हे क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर- हमें मुफ्त में कार्य नही करवाना चाहिए तथा काम के बदले पूरा पैसा देना चाहिए ।

4.टोपी पहनाना मुहावरे का क्या अर्थ है ?

उत्तर- मूर्ख बनाना

5.टोपी बनाने में किस-किस का योगदान रहा ?

उत्तर- धुनिया, कोरी, बुनकर और दर्जी का ।

1. गवरइया और गवरा के बीच किस बात पर बहस हुई और गवरइया को अपनी इच्छा पूरी करने का अवसर कैसे मिला?

उत्तर:- गवरइया और गवरा के बीच आदमी के वस्त्र पहनने को लेकर बहस हुई। गवरइया वस्त्र पहनने के पक्ष में थी तथा गवरा विपक्ष में था। गवरइया को आदमी द्वारा रंग- बिरंगे कपड़ेपहनना अच्छा लग रहा था जबकि गवरा का कहना था कि कपड़ा पहन लेने के बाद आदमी और बदसूरत लगने लगता है। कपड़े पहन लेने के बाद आदमी की कुदरती ख़ूबसूरतीढँक जाती है। उसी बहस के दौरान गवरइया ने अपनी टोपी पहनने की इच्छा को व्यक्त किया। उसकी इच्छा तब पूरी हुई जब एक दिन घूरे पर चुगते-चुगते उसे रुई का एक फाहामिल गया।

2. टोपी बनवाने के लिए गवरइया किस-किस के पास गई? टोपी बनने तक के एक-एक कार्य को लिखें।

उत्तर:- टोपी बनवाने के लिए गवरइया धुनिया, कोरी, बुनकर और दर्जी के पास गई। धुनिया के पास रुई धुनवा कर वह उसे लेकर कोरी के पास जा पहुँची। उसे कोरी से कतवा लिया। कतेसूत को लेकर वह बुनकर के पास गई उससे बुनकर से कपड़ा बुनवाया। कपड़े को लेकर वह दर्जी के पास गई। उसने उस कपड़े से गवरइया की टोपी सिल दी।

3. गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुँदने क्यों जड़ दिए?

उत्तर:- गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुँदने लगाए क्योंकि दर्जी को वाजिब मजदूरी मिली थी , जिससे वह खुश था। दर्जी राजा औए उसके सेवकों के कपड़े सिलता था जो उसे बेगारकरवाते थे। लेकिन गवरइया ने अपनी टोपी सिलवाने के बदले में दर्जी को मजदूरी स्वरूप आधा कपड़ा दिया।

4. गवरइया के स्वभाव से यह प्रमाणित होता है कि कार्य की सफलता के लिए उत्साह आवश्यक है। सफलता के लिए उत्साह की आवश्यकता क्यों पड़ती है,तर्क सहित लिखिए।

उत्तर:- सफलता के लिए उत्साह आवश्यक है। कहा भी गया है कि मन के हारे हार है मन के जीते जीत। उत्साह से ही हमारे मन में किसी भी कार्य के प्रति जागरूकता उत्प न्न होती है। यदिहम किसी भी कार्य को बेमन से करेंगे तो निश्चय ही हमें उस कार्य में पूर्णतया सफलता नहीं मिलेगी।

5. टोपी पहनकर गवरइया राजा को दिखाने क्यों पहुँची जबकि उसकी बहस गवरा से हुई और वह गवरा के मुँह से अपनी बड़ाई सुन चुकी थी। लेकिन राजा से उसकी कोई बहस हुई ही नहीं थी। फिर भी वह राजा को चुनौती देने को पहुँची। कारण का अनुमान लगाइए।

उत्तर:- टोपी पहनकर गवरइया राजा को दिखाने पहुँची जबकि उसकी बहस गवरा से हुई और वह गवरा के मुँह से अपनी बड़ाई सुन चुकी थी। लेकिन राजा से उसकी कोई बहस हुई हीनहीं थी। फिर भी वह राजा को चुनौती देने को पहुँची क्योंकि गवरा ने बहस के दौरान कहा था कि टोपी मात्र राजा ही पहनता है। यह बात उसे अच्छी नहीं लगी थी।

6. यदि राजा के राज्य के सभी कारीगर अपने- अपने श्रम का उचित मूल्य प्राप्त कर रहे होते तब गवरइया के साथ उन कारीगरों का व्यवहार कैसा होता?

उत्तर:- यदि राजा के राज्य के सभी कारीगर अपने- अपने श्रम का उचित मूल्य प्राप्त कर रहे होते तब गवरइया के साथ उन कारीगरों का व्यवहार सामान्य होता और सर्वप्रथम वे राजा काकाम करते क्योंकि उनका काम ज्यादा था।

7. चारों कारीगर राजा के लिए काम कर रहे थे। एक रजाई ब ना रहा था। दूसरा अचकन के लिए सूत कात रहा था। तीसरा बागा बुन रहा था। चौथा राजा की सातवीं रानी की दसवीं संतान के लिए झब्बे सिल रहा था। उन चारों ने राजा का काम रोककर गवरइया का काम क्यों किया?

उत्तर:- चारों ने राजा का काम रोककर गवरइया का काम किया क्योंकि उन लो गों को काम की वाजिब मजदूरी मिली थी, जिससे वे सब खुश थे।

• भाषा की बात

8. गाँव की बोली में कई शब्दों का उच्चारण अलग होता है। उनकी वर्तनी भी बदल जाती है। जैसे गवरइया गौरैया का ग्रामीण उच्चारण है। उच्चारण केअनुसार इस शब्द की वर्तनी लिखी गई है। फुँदना , फुलगेंदा का बदला हुआ रूप है।

कहानी में अनेक शब्द हैं जो ग्रामीण उच्चारण में लिखे गए हैं , जैसे - मुलुक-मुल्क, खमा-क्षमा, मजूरी-मजदूरी, मल्लार-मलार इत्यादि। आप क्षेत्रीय या गाँवकी बोली में उपयोग होने वाले कुछ ऐसे शब्दों को खोजिए और उनका मूल रूप लिखिए, जैसे - टेम-टाइम, टेसन/टिसन-स्टेशन।

उत्तर:-

क्षेत्रीय भाषा	मूल रूप
घइला	घड़ा
लइकी	लड़की
भीख	भिक्षा
तरकारी	सब्जी
भात	चावल

9. मुहावरों के प्रयोग से भाषा आकर्षक बनती है। मुहावरे वाक्य के अंग होकर प्रयुक्त होते हैं। इनका अक्षरश : अर्थ नहीं बल्कि लाक्षणिक अर्थ लिया जाता है। पाठ में अनेक मुहावरे आए हैं। टोपी को लेकर तीन मुहावरे हैं; जैसे - कितनों को टोपी पहनानी पड़ती है। शेष मुहावरों को खोजिए और उनका अर्थ ज्ञात करने का प्रयास कीजिए।

उत्तर:-

मुहावरा अर्थ

टोपी उछलना- बेइज्जती होना

टोपी से ढ़ँक लेना- इज्ज़त ढ़क लेना

टोपी कसकर पकड़ना- सम्मान बचाना

व्याकरण

संज्ञा की परिभाषा.

संज्ञा का शाब्दिक अर्थ होता है नाम। किसी व्यक्ति , गुणए प्राणीए व् जातिए स्थान , वस्तुए क्रिया और भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के उदाहरण

रमेश परीक्षा में प्रथम आया था। इसलिए वह दौड़ता हुआ स्कूल से घर पहुंचाए इस बात से वह बहुत खुश था। उसने यह बात अपने माता . पिता को बताई। यह समाचार सुन वह इतने आनंदित हुए कि उन्होंने उसे गले लगा लिया।

यहाँ पर खुश और आनंदित भाव .ए रमेश, माता.पिता यक्ति .ए स्कूलएघर स्थान .ए सुनए गले क्रिया . आदि संज्ञा आई हैं।

संज्ञा के भेद

1. जातिवाचक संज्ञा
2. भाववाचक संज्ञा
3. व्यक्तिवाचक संज्ञा
4 समूहवाचक संज्ञा
5. द्रव्यवाचक संज्ञा

1. जातिवाचक संज्ञा क्या होती है .. जिस शब्द सेएकही जाति के अनेक प्राणियों , वस्तुओं का बोध हो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं अथार्त जिस शब्द से किसी जाति का सम्पूर्ण बोध होता हो यह उसकी पूरी श्रेणी और पूर्ण वर्ग का ज्ञान होता है उस संज्ञा शब्द को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदहारण- मोटर साइकिल, कार, टीवी, पहाड़, तालाब, गाँव, लड़का, लड़की , घोड़ा, शेर।

2. भाववाचक संज्ञा- जिस संज्ञा शब्द से किसी के गुण, दोष, दशा, स्वभाव, भाव आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। अथार्त जिस शब्द से किसी वस्तु , पदार्थ या प्राणी की दशा, दोष भाव, आदि का पता चलता हो वहाँ पर भाववाचक संज्ञा होती है।

सर्वनाम

सर्वनाम की परिभाषा-

सर्वनाम का अर्थ होता है सब का नाम। जो शब्द संज्ञा की जगह प्रयुक्त होते हैं उसे सर्वनाम कहते हैं। भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं उसे सर्वनाम कहते हैं।

संज्ञा की पुनरुक्ति को दूर करने के लिए ही सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है। हिंदी में कु ल 11 मूल सर्वनाम होते हैं- मैं, तू, यह, वह, आप, जो, सो, कौन, क्या, कोई, कुछ आदि।

सर्वनाम के उदाहरण.

1. सीता ने गीता से कहा, मैं तुम्हे पुस्तक दूंगी।
2. सीता ने गीता से कहा, मैं बाजार जाती हूँ।
3. सोहन एक अच्छा विद्यार्थी है वह रोज स्कूल जाता है।
4. राम, मोहन के साथ उसके घर गया।

यहाँ पर मैं, वह और उसके संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम प्रयुक्त हुए हैं।

सर्वनाम के भेद..

1. पुरुषवाचक सर्वनाम

2. निजवाचक सर्वनाम

3. निश्चयवाचक सर्वनाम

4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

5. संबंधवाचक सर्वनाम

6. प्रश्नवाचक सर्वनाम

1. पुरुषवाचक सर्वनाम - जिन शब्दों से व्यक्ति का बोध होता है उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। इसका प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा की जगह पर किया जाता है। इसका प्रयोग स्त्री और पुरुष दोनों के लिए किया जाता है। जिस सर्वनाम का प्रयोग सुननेवाले यानि श्रोता, कहने वाले यानि वक्ता और किसी और व्यक्ति के लिए होता है उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे.. मैं, तू, वह, हम, वे, आप, उसे, उन्हें, ये, यह आदि।

पुरुषवाचक सर्वनाम के भेद..

1. उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम

2. मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम

3. अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम

1. उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम- जिन शब्दों का प्रयोग कहने वाला खुद को प्रकट करने के लिए करता है उसे उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं अथार्त जिन शब्दों का प्रयोग बोलने वाला खुद के लिए करता है उसे उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- मैं, हम, हमारा, मुझे, मुझको, हमको, मेरा, हमें आदि।

2. मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम- जिन शब्दों को सुनने वाले के लिए प्रयोग किया जाता है उसे मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं अर्थात जिन शब्दों का प्रयोग बोलने वाला यानि वक्ता , सुनने वाले यानि की श्रोता के लिए प्रयोग करता है उसे मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे.. तुम, आप, तू, तुझे, तुम्हारा, आप, आपको, तेरा, तुम्हे, आपका, आप लोग, तुमसे, तुमने आदि।

3. अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम.. जो व्यक्ति उपस्थित नही होता है वह वक्ता और श्रोता के लिए अन्य व्यक्ति होता है। जिन शब्दों का प्रयोग अन्य व्यक्तियों के लिए किया जाये वे स भी अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम होते हैं। अथार्त जिन शब्दों का प्रयोग बोलने वाला , सुनने वाले के अलावा जिसके लिए करता है उसे अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे.. वह, वे, उसने, यह, ये, इसने, वो, उसका, उनका, उन्हें, उसे आदि।

पुरुष वाचक सर्वनाम कारकरूप में..

कारक एकवचन बहुवचन

1. कर्ता - मैं, मैंने, तू, तूने, वह, उसने त्र हम, हमने, तुम, तुमने, वे, उन्होंने आदि।

2. कर्म - मुझे, मुझको, तुझे, तुझको, उसे, उसको त्र हमें, हमको, तुम्हें, तुमको, उन्हें, उनको आदि।

3. करण - मुझसे, मेरे द्वारा, तुझसे, तेरे द्वारा, उससे, उसके द्वारा त्र हमसे , हमारे द्वारा, तुमसे, तुम्हारे द्वारा, उनसे, उनके द्वारा आदि।

4. सम्प्रदान - मेरे लिए, मुझे, मुझको, तेरे लिए, तुझे, तुझको, उसके लिए, उसे उसको त्र हमारे लिए , हमें, हमको, तुम्हारे लिए, तुम्हे, तुमको, उनके लिए, उन्हें, उनको आदि।

5. अपादान - मुझसे, तुझसे, उससे त्र हमसे, तुमसे, उनसे आदि।

6. संबंध - मेरा, मेरी, मेरे, तेरा, तेरी, तेरे, उसका, उसकी, उसके त्र हमारा , हमारी, हमारे, तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे, उनका, उनकी, उनके आदि।

7. अधिकरण - मुझमें, मुझ पर, तुझमें, तुझ पर, उसमें, उस पर , हममें, हम पर, तुममें, तुम पर, उनमें, उन पर आदि।

2. निजवाचक सर्वनाम - निज शब्द का अर्थ होता है अपना और वाचक का अर्थ होता है बोध। अपनेपन का बोध करने वाले शब्दों को निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। अथार्त जिन सर्वनामों का प्रयोग कर्ता के साथ अपने पन का बोध करने के लिए किया जा ता है उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। जहाँ पर वक्ता अपने या अपने आप शब्द का प्रयोग करता है वहाँ पर निजवाचक सर्वनाम होता है।

जैसे- हमें, तुम, अपने, आप, अपने आप, निजी, खुद, स्वंय आदि।

निजवाचक सर्वनाम आप का प्रयोग

क. आप को संज्ञा या सर्वनाम के निश्चय के लिए प्रयोग किया जाता है।

जैसे- मैं आप वहीं से आया हूँ।

ख. आप को दूसरे व्यक्तियों के निराकरण के लिए किया जाता है।

जैसे- उन्होंने मुझे रहने के लिए कहा था और आप चलते बने।

ग. आप को सर्वसाधारण के अर्थ के लिए प्रयोग किया जाता है।

जैसे- अपने से बड़ों का आदर करना उचित होता है।

घ. आप का प्रयोग अवधारण में कभी कभी ही जोडकर किया जाता है।

जैसे- मैं यह कार्य आप ही कर लूँगा।

3. निश्चयवाचक सर्वनाम- जिन शब्दों से किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना की ओर निश्चयात्मकरूप से संकेत करे उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। इसे सं केतवाचक सर्वनाम भी कहते हैं। इसमें यह , वह, वे, ये आदि का निश्चयरूप से बोध कराते हैं।

जैसे- वह मेरा गाँव है। यह मेरी पुस्तक है। ये सेब हैं। ये पुस्तक रानी की है।

इसमें वह, यह, ये आदि शब्द निश्चित वस्तु की और संकेत कर रहे हैं।

4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम- जिन शब्दों से किसी व्यक्ति, वस्तु आदि का निश्चयपूर्वक बोध न हो वहाँ पर अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- कोई, कुछ, किसी, कौन, किसने, किन्ही को, किन्ही ने, जौन, तौन, जहाँ, वहाँ आदि।

5. संबंध वाचक सर्वनाम- जिन शब्दों से परस्पर संबंध का पता चले उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जिन शब्दों से दो पदों के बीच के संबंध का पता चले उसे संबंध वाचक सर्वनाम कहते हैं।

जिन शब्दों से किसी व्यक्ति, वस्तु का अहसास तो होता है लेकिन उसके निश्चितरूप पता नहीं चलता उसे अनिश्चय वाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- जैसी,वैसी, जैसा, जो, जिसकी, सो, जिसने, तैसी, जहाँ, वहाँ, जिसकी, उसकी, जितना, उतना आदि।

6. प्रश्नवाचक सर्वनाम- जिन सर्वनाम शब्दों को प्रश्न पूछने के लिए प्रयोग किया जाता है उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। अथार्त जिन शब्दों से प्रश्न का बोध होता है उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

विशेषण की परिभाषा, भेद और उदाहरण

विशेषण किसे कहते हैं ?

जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताते हैं उसे विशेषण कहते हैं। अथार्त जो शब्द गुण , दोष, भाव, संख्या, परिणाम आदि से संबंधित विशेषता का बोध कराते हैं उसे विशेषण कहते हैं। विशेषण को सार्थक शब्दों के आठ भेदों में से एक माना जाता है। यह विकारी शब्द होता है। जो शब्द विशेषता

बताते हैं उन्हें विशेषण कहते हैं। जब विशेषण रहित संज्ञा में जिस वस्तु का बोध होता है विशेषण लगने के बाद उसका अर्थ सीमित हो जाता है।

जैसे.. बड़ा, काला, लम्बा, दयालु, भारी, सुंदर, कायर, टेढ़ा-मेढ़ा,एक, दो, वीर पुरुष, गोरा, अच्छा, बुरा, मीठा, खट्टा आदि।

विशेषण के उदाहरण..

- आसमान का रंग नीला है।
- मोहन एक अच्छा लड़का है।
- टोकरी में मीठे संतरे हैं।
- रीता सुंदर है।
- कौआ काला होता है।
- यह लड़का बहुत बुद्धिमान है।
- कुछ दूध ले आओ।
- पांच किलो दूध मोहन को दे दो।
- यह रास्ता लम्बा है।
- खीरा कडवा है।
- यह भूरी गाय है।
- सुनीता सुंदर लडकी है।

विशेष्य किसे कहते हैं - जिसकी विशेषता बताई जाती है उसे विशेष्य कहते हैं अथार्त जिस संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताई जाती है उसे विशेष्य कहते हैं। विशेष्य को विशेषण के पहले या बाद में भी लिखा जा सकता है।

जैसे.. विद्वान् अध्यापक, सुंदर गीता, थोड़ा सा जल लाओ, खीरा कड़वा है, सेब मीठा, आसमान नीला है, मोहन अच्छा लड़का है, सुंदर फूल,काला घोड़ा, उजली गाय मैदान में खड़ी है आदि।

प्रविशेषण किसे कहते हैं- जिन शब्दों से विशेषण की विशेषता का पता चलता है उन्हें प्रविशेषण कहते हैं।

जैसे- यह आम बहुत मीठा है, यह लडकी बहुत अच्छी है, मोहित बहुत चालाक है।

उद्देश्य विशेषण किसे कहते हैं.. विशेष्य से पहले जो विशेषण लगते हैं उन्हें उद्देश्य विशेषण कहते हैं।

जैसे- सुंदर लड़की, अच्छा लड़का, काला घोड़ा आदि।

विधेय विशेषण किसे कहते हैं.. जो विशेष्य संज्ञा और सर्वनाम आदि के बाद प्रयुक्त होते हैं उसे विधेय विशेषण कहते हैं।

जैसे.. ये सेब मीठे हैं, वह लड़की सुंदर है आदि।

विशेषण के भेद..

क. गुणवाचक विशेषण

ख. परिणामवाचक विशेषण

ग. संख्यावाचक विशेषण

घ. सार्वनामिक विशेषण

क. गुणवाचक विशेषण- जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण के रूप की विशेषता बताते हैं उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

गुणवाचक विशेषण के कुछ के उदाहरण इस प्रकार हैं..

रूप और गुण के उदाहरण इस प्रकार हैं..

सुंदर, बलवान, विद्वान्, भला, उचित, अच्छा, ईमानदार, सरल, विनम्र, बुद्धिमानी, सच्चा, दानी, न्यायी, सीधा, शान्त आदि।

ख. परिमाणवाचक विशेषण- परिमाण का अर्थ होता है मात्रा। जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा या नाप तोल के परिणाम की विशेषता बताएँ उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे- चार किलो दूध, थोड़ा रुपया,एक किलो घी, कम लोग, थोड़ा आटा, चार किलो चावल, कम तेल, सेर भर दूध, तोला भर सोना, कुछ पानी, सब धन, मुझे थोड़ी चाय दीजिए आदि।

ग. संख्यावाचक विशेषण- संख्या की विशेषता का बोध कराने वाले शब्दों को संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। अथार्त जिन सं ज्ञा और सर्वनाम शब्दों से प्राणी , व्यक्ति, वस्तु की संख्या की विशेषता का पता चले उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे- एक,दो, द्वितीय, दुगुना, चौगुना, पाँचों, दस,अनेक, कई, चार, कुछ, सात, पाँच, तीन, बीस, तीसरा, तृतीय आदि।

घ. सार्वनामिक विशेषण- जो सर्वनाम संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता की ओर संकेत करते हैं उन्हें सार्वनामिक विशेषण भी कहते हैं अर्थात जो सर्वनाम संज्ञा से पहले लगकर संज्ञा की विशेषता की तरफ संकेत करें उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। इन्हें निर्देशक भी कहते हैं।

जैसे- मेरी पुस्तक, कोई बालक, किसी का महल, वह लड़का, वह बालक, वह पुस्तक, वह आदमी, वह लडकी आदि।

कारक की परिभाषा भेद और उदाहरण

कारक किसे कहते हैं-

वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ क्रिया का सम्बन्ध कारक कहलाता है।

कारक के विभिन्न चिह्न

कारक	चिह्न	अर्थ
कर्ता	ने	काम करने वाला
कर्म	को	जिस पर काम का प्रभाव पड़े
करण	से, द्वारा	जिसके द्वारा कर्ता काम करें
सम्प्रदान	को,के लिए	जिसके लिए क्रिया की जाए
अपादान	से (अलग होना)	जिससे अलगाव हो
सम्बन्ध	का, की, के; ना, नी, ने; रा, री, रे	अन्य पदों से सम्बन्ध
अधिकरण	में,पर	क्रिया का आधार
संबोधन	हे! अरे! अजी!	किसी को पुकारना, बुलाना

समास

समास की परिभाषा भेद एवं उदाहरण.

समास का शाब्दिक अर्थ है- 'संक्षेप'। समास प्रक्रिया में शब्दों का संक्षिप्तीकरण किया जाता है। । इसका शाब्दिक अर्थ होता है छोटारूप। अथार्त जब दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर जो नया और छोटा शब्द बनता है उस शब्द को समास कहते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो जहाँ पर कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रकट किया जाए वह समास कहलाता है।

संस्कृत, जर्मन तथा बहुत सी भारतीय भाषाओँ में समास का बहुत प्रयोग किया जाता है। समास रचना में दो पद होते हैं, पहले पद को ष्पूर्वपद कहा जाता है और दूसरे पद को उत्तर- पद कहा जाता है। इन दोनों से जो नया शब्द बनता है वो समस्त पद कहलाता है।

जैसे..

रसोई के लिए घर-रसोईघर

हाथ के लिए कड़ी- हथकड़ी

नील और कमल- नीलकमल

राजा का पुत्र- राजपुत्र ।

सामासिक शब्द क्या होता है- समास के नियमों से निर्मित शब्द सामासिक शब्द कहलाता है। इसे समस्तपद भी कहा जाता है। समास होने के बाद विभक्तियों के चिह्न गायब हो जाते हैं।

समास के भेद.

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वंद्व समास
6. बहुब्रीहि समास

1. अव्ययीभाव समास - इसमें प्रथम पद अव्यय होता है और उसका अर्थ प्रधान होता है उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इसमें अव्यय पद का प्रारूप लिंगए वचनए कारकए में नहीं बदलता है वो हमें शा एक जैसा रहता है।

दूसरे शब्दों में कहा जाए तो यदि एक शब्द की पुनरावृत्ति हो और दोनों शब्द मिलकर अव्यय की तरह प्रयोग हों वहाँ पर अव्ययीभाव समास होता है संस्कृत में उपसर्ग युक्त पद भी अव्ययीभाव समास ही माने जाते हैं।

जैसे..

यथाशक्ति -शक्ति के अनुसार

यथाक्रम -क्रम के अनुसार

यथानियम - नियम के अनुसार

प्रतिदिन - प्रत्येक दिन

प्रतिवर्ष -हर वर्ष

आजन्म -जन्म से लेकर

यथासाध्य -जितना साधा जा सके

धडाधड- धड.धड की आवाज़ के साथ

घर.घर- प्रत्येक घर

रातों रात - रात ही रात में

आमरण - म्रत्यु तक

यथाकाम - इच्छानुसार

2. तत्पुरुष समास- इस समास में दूसरा पद प्रधान होता है। यह कारक से जुदा समास होता है। इसमें ज्ञातव्य विग्रह में जो कारक प्रकट होता है उसी कारक वाला वो समास होता है। इसे बनाने में दो पदों के बीच कारक चिन्हों का लोप हो जाता है उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसे..

देश के लिए भक्ति देशभक्ति

राजा का पुत्र - राजपुत्र

शर से आहत - शराहत

राह के लिए खर्च - राहखर्च

तुलसी द्वारा कृत - तुलसीदासकृत

राजा का महल - राजमहल

3. कर्मधारय समास - इस समास का उत्तर पद प्रधान होता है। इस समास में विशेषण विशेष्य और उपमेय उपमान से मिलकर बनते हैं उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

जैसे-

चरणकमल - कमल के समान चरण

नीलगगन -नीला है जो गगन

चन्द्रमुख - चन्द्र जैसा मुख

पीताम्बर -पीत है जो अम्बर

महात्मा -महान है जो आत्मा

लालमणि - लाल है जो मणि

महादेव - महान है जो देव

देहलता - देह रूपी लता

नवयुवक नव है जो युवक

4- द्विगु समास - द्विगु समास में पूर्वपद संख्यावाचक होता है और कभी- कभी उत्तर पद भी संख्यावाचक होता हुआ देखा जा सकता है। इस समास में प्रयुक्त संख्या किसी समूह को दर्शाती है किसी अर्थ को नहीं । इससे समूह और समाहार का बोध होता है। उसे द्विगु समास कहते हैं।

जैसे..

नवग्रह - नौ ग्रहों का समूह

दोपहर - दो पहरों का समाहार

त्रिवेणी - तीन वेणियों का समूह

पंचतन्त्र - पांच तंत्रों का समूह

त्रिलोक - तीन लोकों का समाहार

शताब्दी - सौ अब्दों का समूह

पंसेरी - पांच सेरों का समूह

सतसई - सात सौ पदों का समूह

चौगुनी - चार गुनी

त्रिभुज - तीन भुजाओं का समाहार

5. द्वंद्व समास - इस समास में दोनों पद ही प्रधान होते हैं इसमें किसी भी पद का गौण नहीं होता है। ये दोनों पद,क.दूसरे पद के विलोम होते हैं लेकिन ये हमें शा नहीं होता है। इसका विग्रह करने पर औरए अथवाए याएएवं का प्रयोग होता है उसे द्वंद्व समास कहते हैं।

जैसे..

जल-वायु - जल और वायु
अपना -पराया - अपना या पराया
पाप-पुण्य - पाप और पुण्य
राधा-कृष्ण - राधा और कृष्ण
अन्न-जल - अन्न और जल
नर-नारी - नर और नारी
गुण-दोष - गुण और दोष
देश-विदेश - देश और विदेश
अमीर-गरीब - अमीर और गरीब

6. बहुब्रीहि समास - इस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता। जब दो पद मिलकर तीसरा पद बनाते हैं तब वह तीसरा पद प्रधान होता है। इसका विग्रह करने पर "वाला" वह बहुब्रीहि समास कहलाता है।

जैसे-

गजानन- गज का आनन है जिसका अर्थात गणेश
त्रिनेत्र - तीन नेत्र हैं जिसके अर्थात शिव
नीलकंठ - नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव
लम्बोदर - लम्बा है उदर जिसका अर्थात गणेश
दशानन - दश हैं आनन जिसके अर्थात रावण
चतुर्भुज - चार भुजाओं वाला अर्थात विष्णु
पीताम्बर - पीले हैं वस्त्र जिसके अर्थात कृष्ण
चक्रधर- चक्र को धारण करने वाला अर्थात विष्णु
वीणापाणी - वीणा है जिसके हाथ में अर्थात सरस्वती
श्वेताम्बर - सफेद वस्त्रों वाली अर्थात सरस्वती

अलंकार

अलंकार दो शब्दों से मिलकर बना होता है अलम + कार। यहाँ पर अलम का अर्थ होता है आभूषण। मानव समाज बहुत ही सौन्दर्योपासक है उसकी प्रवर्ती के कारण ही अलंकारों को जन्म दिया गया है। जिस तरह सेएकनारी अपनी सुन्दरता को बढ़ाने के लिए आभूषणों को प्रयोग में लाती हैं उसी प्रकार भाषा को सुन्दर बनाने के लिए अलं कारों का प्रयोग किया जाता है। अथार्त जो शब्द काव्य की शोभा को बढ़ाते हैं उसे अलंकार कहते हैं।

अलंकार के भेद-

1. शब्दालंकार
2. अर्थालंकार
3. उभयालंकार

1. शब्दालंकार-

शब्दालंकार दो शब्दों से मिलकर बना होता है शब्द + अलंकार। शब्द के दोरूप होते हैं ध्वनी और अर्थ। ध्वनि के आधार पर शब्दालंकार की सृष्टी होती है। जब अलंकार किसी विशेष शब्द की स्थिति में ही रहे और उस शब्द की जगह पर कोई और पर्यायवाची शब्द के रख देने से उस शब्द का अस्तित्व न रहे उसे शब्दालंकार कहते हैं।

अर्थात जिस अलंकार में शब्दों को प्रयोग करने से चमत्कार हो जाता है और उन शब्दों की जगह पर समानार्थी शब्द को रखने से वो चमत्कार समाप्त हो जाये वहाँ शब्दालंकार होता है।

शब्दालंकार के भेद-

1. अनुप्रास अलंकार
2. यमक अलंकार
3. पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार
4. वक्रोक्ति अलंकार

अनुप्रास अलंकार - अनुप्रास अर्थात अनु+प्र+आस । अनु अर्थात पीछे

जैसे- जन रंजन मंजन दनुज मनुजरूप सुर भूप।

विश्व बदर इव धृत उदर जोवत सोवत सूप।।

यमक अलंकार - यमक शब्द का अर्थ होता है दो। जब एक ही शब्द ज्यादा बार प्रयोग हो पर हर बार अर्थ अलग- अलग आये वहाँ पर यमक अलंकार होता है।

जैसे- कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।

पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार - पुनरुक्ति अलंकार दो शब्दों से मिलकर बना है पुनरू +उक्ति। जब कोई शब्द दो बार दोहराया जाता है वहाँ पर पुनरुक्ति अलंकार होता है।

जैसे-

मोहि-मोहि मोहन को मन भयो राधामय।

राधा मन मोहि-मोहि मोहन मयी.मयी।।

वक्रोक्ति अलंकार - जहाँ पर वक्ता के द्वारा बोले गए शब्दों का श्रोता अलग अर्थ निकाले उसे वक्रोक्ति अलंकार कहते है।

जैसे-

को तुम हौ इत आये कहाँ घनस्याम हौ तौ कितहूँ बरसो ।

चितचोर कहावत है हम तौ तहां जाहुं जहाँ धन सरसों।।

वा खाये बौराए नर, वा पाये बौराये।

अर्थालंकार -

जहाँ पर अर्थ के माध्यम से काव्य में चमत्कार होता हो वहाँ अर्थालंकार होता है।

अर्थालंकार के भेद इसके आलावा भी अनेक भेद हैं .

1. उपमा अलंकार
2. रूपक अलंकार
3. उत्प्रेक्षा अलंकार

1. उपमा अलंकार - उपमा शब्द का अर्थ होता है तुलना। जब किसी व्यक्ति या वस्तु की तुलना किसी दूसरे यक्ति या वस्तु से की जाए वहाँ पर उपमा अलंकार होता है।

जैसे-

सागर - सा गंभीर ह्रदय हो,

गिरी - सा ऊँचा हो जिसका मन।

2.रूपक अलंकार -

जहाँ पर उपमेय और उपमान में कोई अंतर न दिखाई दे वहाँरूपक अलंकार होता है अथार्त जहाँ पर उपमेय और उपमान के बीच के भेद को समाप्त करके उसेएककर दिया जाता है वहाँ पररूपक अलंकार होता है।

जैसे-

उदित उदय गिरी मंच परए रघुवर बाल पतंग।

विगसे संत सरोज सब हरषे लोचन भ्रंग।।

उत्प्रेक्षा अलंकार - जहाँ पर उपमान के न होने पर उपमेय को ही उपमान मान लिया जाए। अथा र्त जहाँ पर अप्रस्तुत को प्रस्तुत मान लिया जाए वहाँ पर उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

जैसे-

सखि सोहत गोपाल केए उर गुंजन की माल

बाहर सोहत मनु पियेए दावानल की ज्वाल।।

उपसर्ग

उपसर्ग दो शब्दों से मिलकर बना होता है उपसर्ग। उप का अर्थ होता है समीप और सर्ग का अर्थ होता है सृदृष्टि करना। संस्कृत एवं संस्कृत से उत्पन्न भाषाओँ में उस अव्यय या शब्द को उपसर्ग कहते है। अर्थात शब्दांश उसके आरम्भ में लगकर उसके अर्थ को बदल देते हैं या फिर उसमें विशेषता लाते हैं उन शब्दों को उपसर्ग कहते हैं। शब्दांश होने के कारण इनका कोई स्व तंत्ररूप से कोई महत्व नहीं माना जाता है।

उदाहरण.. हार एक शब्द है जिसका अर्थ होता है पराजय। लेकिन इसके आगे आ शब्द लगने से नया शब्द बनेगा जैसे आहार जिसका मतलब होता है भोजन।

उपसर्ग के भेद..

1. संस्कृत के उपसर्ग
2. हिंदी के उपसर्ग
3. अरबी.फारसी के उपसर्ग
4. अंग्रेजी के उपसर्ग
5. उर्दू के उपसर्ग
6. उपसर्ग की भांति प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के अव्यय

1. संस्कृत के उपसर्ग..

1.अति अधिक,परे, ऊपर, उस पार,.

अत्यधिक, अतिशय, अत्यंत, अतिरिक्त, अत्यल्प, अतिक्रमण, अतिवृदृष्टि , अतिशीघ्र, अत्याचार, अतीन्द्रिय, अत्युक्ति, अत्युत्तम, अत्यावश्यक, अतीव, अतिकाल, अतिरेक आदि।

2. अप बुरा, अभाव, विपरीत, हीनता, छोटा .

अपयश, अपमान, अपशब्द, अपराध, अपकार, अपकीर्ति, अपभ्रश, अपव्यय, अपवाद, अपकर्ष, अपहरण, अपप्रयोग, अपशकुन, अपेक्षा आदि।

3. अ अभाव, अन, निषेध, नहीं, विपरीत .

अधर, अपलक, अटल, अमर, अचल, अनाथ, अविश्वास, अधर्मए अचेतन , अज्ञान, अलग, अनजान, अनमोल, अनेक, अनिष्ट, अथाह, अनाचार, अलौकिक, अस्वीकार, अन्याय, अशोक, अहिंसा, अवगुण, अर्जित आदि।

4. अनु पीछे, समान, क्रम, पश्चात .

अनुक्रमांक, अनुकंपा, अनुज, अनुरूप, अनुपात, अनुचर, अनुकरण, अनुसार, अनुशासन, अनुराग, अनुग्रह, अनुवाद, अनुस्वार, अनुशीलन, अनुकूल, अनुक्रम, अनुभव, अनुशंसा, अन्वय, अन्वीक्षण, अन्वेषण, अनुच्छेद, अनूदित आदि।

5. आ ओर, सीमा, तक, से, समेत, कमी, विपरीत, उल्टा, अभाव, नहीं .

आगमन, आजीवन, आमरण, आचरण,आलेख, आहार, आकर्षण, आकर, आकार, आभार, आशंका, आवेश, आरक्त, आदान, आक्रमण, आकलन, आकाश, आरम्भ, आमुख, आरोहण, आजन्म, आयात, आतप, आगार, आगम, आमोद, आरक्षण, आकर्षण, आबालवृ., आघात आदि।

6. अधि श्रेष्ठ, प्रधान, ऊपर, सामीप्य .

अधिकार, अधिसूचना, अधिपति, अधिकरण, अधिनायक, अधिमान, अधिपाठक, अधिग्रहण, अधिवक्ता, आधिक्य, अध्धयन, अध्यापन, अधिराज, अध्यात्म, अध्यक्ष, अधिनियम, अधिमास, अधिकृत, अधिक्षण, अध्यादेश, अधीन, अधीक्षक आदि।

7.अभि सामने, पास, ओर, इच्छा प्रकट करना, चारों ओर .

अभ्यास, अभ्युदय, अभिमान, अभिषेक,अभिनय, अभिनव, अभिवादन, अभिभाषण, अभियोग, अभिभूत, अभिभावक, अभ्यर्थी, अभीष्ट, अभ्यंतर, अभीप्सा, अभिनन्दन, अभिलाप, अभीमुख, अभ्युत्थान,अभियान, अभिसार, अभ्यागत, अभ्यास, अभिशाप,अभिज्ञान आदि।

8. उप निकट, छोटा, सहायक, सद्रश, गौण, हीनता .

उपकार, उपग्रह, उपमंत्री, उपहार, उपदेश, उपवन, उपनाम, उपचार, उपसर्ग, उपयोग, उपभोग, उपभेद, उपयुक्त, उपेक्षा, उपाधि, उपाध्यक्ष,उपकूल, उपनिवेश, उपस्थिति, उपासना, उपदिशा, उपवेद, उपनेत्र, उपरांत, उपसंहार, उपकरण, उपकार आदि।

9. प्र आगे, अधिक, ऊपर, यश .

प्रमाण, प्रयोग, प्रताप, प्रबल, प्रस्थान, प्रकृति, प्रमुख,प्रदान, प्रचार, प्रसार, प्रहार, प्रयत्न, प्रभंजन, प्रपौत्र, प्रारम्भ, प्रोज्जवल, प्रेत, प्राचार्य, प्रयोजक, प्रार्थी, प्रक्रिया, प्रवाह, प्रख्यात, प्रकाश, प्रकट, प्रगति, प्रपंच, प्रलाप, प्रभुता, प्रपिता, प्रकोप, प्रभु, प्रयास आदि।

2. हिंदी के उपसर्ग..

1. अन अभाव, निषेध, नहीं .

अनजान, अनकहा, अनदेखा, अनमोल, अनबन, अनपढ़, अनहोनी, अछूत, अचेत, अनचाहा, अनसुना, अलग, अनदेखी आदि।

2. अध् आधा .

अधपका, अधमरा, अधक्च्चा, अधकचरा, अधजला, अधखिला, अधगला, अधनंगा आदि।

3. उन एककम .

उनतीस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर, उनतालीस, उन्नीस, उन्नासी आदि।

4. दु बुरा, हीन, दो, विशेष, कम .

दुबला, दुर्जन, दुर्बल, दुलारा, दुधारू, दुसाध्य, दुरंगा, दुलत्ती, दुनाली, दुराहा, दुपहरी, दुगुना, दुकाल आदि।

5. नि रहित, अभाव, विशेष, कमी .

निडर, निक्कमा, निगोड़ा, निहत्था, निहाल आदि।

6. अ . अभाव, निषेध .

अछुता, अथाह, अटल, अचेत आदि।

7. कु बुरा, हिन् .

कुचाल, कुचैला, कुचक्र, कपूत, कुढंग, कुसंगति, कुकर्म, कुरूप, कुपुत्र, कुमार्ग, कुरीति, कुख्यात, कुमति आदि।

8. औ हीन, अब, निषेध .

औगुन, औघर, औसर,औसान, औघट, औतार, औगढ़, औढर आदि।

9. भर पूरा, ठीक .

भरपेट, भरपूर, भरसक, भरमार, भरकम, भरपाई, भरदिन आदि।

10. सु सुंदर, अच्छा .

सुडौल, सुजान, सुघड़, सुफल, सुनामी, सुकाल, सपूत आदि।

4. अंग्रेजी के उपसर्ग..

1. हाफ आधा .

हाफ पेंट, हाफ बाड़ी, हाफटिकट, हाफरेट, हाफकमीज आदि।

2. सब अधीन, नीचे .

सब पोस्टर, सब इंस्पेक्टर, सबजज, सबकमेटी, सबरजिस्टर आदि।

3. चीफ प्रमुख .

चीफ मिनिस्टर, चीफ इंजीनियर, चीफ सेक्रेटरी आदि।

4. जनरल प्रधान, सामान्य .

जनरल मैनेजर, जनरल सेक्रेटरी, जनरल इंश्योरेंस आदि।

5. हैड मुख्य .

हैड मुंशी, हैड पंडित, हेडमास्टर, हेड क्लर्क, हेड ऑफिस, हेड कांस्टेबल आदि।

6. डिप्टी सहायक .

डिप्टी कलेक्टर, डिप्टी रजिस्टर, डिप्टी मिनिस्टर आदि।

7. वाइस सहायक, उप .

वाइसराय, वाइस चांसलर, वाइस प्रेजिडेंट, वाइस प्रिंसिपल आदि।

8.,क्स मुक्त .

एक्सप्रेस,,क्स कमिश्नर,,क्स स्टूडेंट,,क्स प्रिंसिपल आदि।

5. उर्दू के उपसर्ग..

1. अल निश्चित .

अलगरज, अलबत्ता आदि।

2. कम थोडा, हीन .

कमजोर, कमउम्र, कमबख्त, कमसिन, कमख्याल, कमदिमाग, कमजात आदि।

3. खुश अच्छा .

खुशनसीब, खुशहाल, खुशकिस्मत, खुशदिल, खुशनुमा, खुशगवार, खुशमिजाज, खुसबू आदि।

4. गैर निषेध, के बिना .

गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरसरकारी, गैरजरूरी, गैरकौम, गैरहाजिब, गैरमुनासिब आदि।

5. दर में .

दरकार, दरबार, दरमियान, दरअसल, दरहकीकत आदि।

6. ना अभाव, निषेध .

नालायक, नासमझ, नाबालिक, नाराज, नामुमकिन, नादान, नापसंद, नामुराद, नाकामयाब, नाचीज, नापाक, नाकाम आदि।

7. बद बुरा .

बदतर, बदनाम, बदकिस्मत, बदसूरत, बदमाश, बददिमाग, बदचलन, बदहजमी, बदमजा, बददुआ, बदनीयत, बदकार आदि।

8. बर बाहर, ऊपर .

बरखास्त, बरदास्त, बरबाद, बरवक्त, बरकरार, बरअक्स, बरजमा आदि।

9. बे बिना .

बेवक्त, बेझिझक, बेवकूफ, बेइज्जत, बेकाम, बेअसर, बेरहम, बेईमान, बेचारा, बेअक्ल, बेबुनियाद, बेतरह, बेमानी, बेशक आदि।

10. ला बिना, रहित .

लाजवाब, लापता, लाचार, लावारिस, लापरवाह, लाइलाज, लामानी, लाइल्म आदि।

11. हर प्रत्येक, प्रति .

हरदम, हरवक्त, हरपल, हरदिन, हरसाल, हरएक, हरबार आदि।

12. हम समान, बराबर .

हमसफर, हमदर्द, हमशक्ल, हमउम्र, हमदर्दी, हमपेशा, हमराज, हमदम आदि।

प्रत्यय

प्रत्यय की परिभाषा भेद और उदाहरण

प्रत्यय दो शब्दों से मिलकर बना होता है प्रति +अय। प्रति का अर्थ होता है साथ में,पर बाद में और अय का अर्थ होता है चलने वाला ।अतरू प्रत्यय का अर्थ होता है साथ में पर बाद में चलने वाला। जिन शब्दों का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता वे किसी शब्द के पीछे लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं।

प्रत्यय का अपना अर्थ नहीं होता और न ही इनका कोई स्वतंत्र अस्तित्व होता है। प्रत्यय अविकारी शब्दांश होते हैं जो शब्दों के बाद में जोड़े जाते है। कभी कभी प्रत्यय लगाने से अर्थ में कोई बदलाव नहीं होता है। प्रत्यय लगने पर शब्द में संधि नहीं होती बल्कि अंतिम वर्ण में मिलने वाले प्रत्यय में स्वर की मात्रा लग जाएगी लेकिन व्यंजन होने पर वह यथावत रहता है।

जैसे..

समाज + इक - सामाजिक

सुगंध +इत - सुगंधित

भूलना +अक्कड - भुलक्कड

मीठा +आस - मिठास

लोहा +आर - लुहार

नाटक +कार -नाटककार

बड़ा +आई - बडाई

टिक +आऊ - टिकाऊ
बिक +आऊ - बिकाऊ
होन +हार - होनहार
लेन +दार - लेनदार
घट + इया - घटिया
गाडी +वाला - गाड़ीवाला
सुत +अक्कड - सुतक्कड़
दया +लु - दयालु

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

मुहावरे
कोई भी ऐसा वाक्यांश जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करे उसे मुहावरा कहते हैं।
लोकोक्ति
लोक अनुभव से बनने वाली उक्तियाँ जो किसी समाज ने लंबे अनु भव से सीखा है उसे एकवाक्य में बाँध दिया है ।
मुहावरे
अंग अंग खिल उठना- प्रसन्न हो जाना।
अंग छूना- कसम खाना।
अंग अंग टूटना- सारे बदन में दर्द होना।
अंग अंग ढीला होना- बहुत थक जाना।
अंग अंग मुसकाना- बहुत प्रसन्न होना।
अपनी नींद सोना- इच्छानुसार कार्य करना।
अपना हाथ जगन्नाथ- स्वाधिकार होना।
अरण्य रोदन- निष्फल निवेदन।
अवसर चूकना- सुयोग का लाभ न उठाना।
अवसर ताकना- मौका ढूँढना।
आँख का तारा- बहुत प्यारा होनाध्अति प्रिय।
आँख उठाना- क्रोध से देखना।
आँख बन्द कर काम करना- ध्यान न देना।
आँख चुराना - छिपना।
आँख मारना - इशारा करना।
आँख तरसना - देखने के लालायित होना।
आँख फेर लेना - प्रतिकूल होना।
आँख बिछाना - प्रतीक्षा करना।
आँखें सेंकना - सुंदर वस्तु को देखते रहना।
आँख उठाना- देखने का साहस करना।
आँख खुलना - होश आना।

आँख लगना - नींद आना अथवा प्यार होना।
आँखों पर परदा पड़ना - लोभ के कारण सच्चाई न दीखना।
आँखों में समाना - दिल में बस जाना।
आँखे चुराना - अनदेखा करना।
आँखें चार होना - आमने सामने होनाध्प्रेम होना।
आँखों पर बिठाना -आदर करना।
आँखों में धूल झोंकना- धोखा देना।
आँखों का पानी ढलना- निर्लज्ज बन जाना।
आँखों से गिरना-आदर समाप्त होना।
आँखों पर परदा पड़ना --बुद्धि भ्रष्ट होना।
आँखों में रात कटना -रात भर जागते रहना।
आँच न आने देना- थोड़ी भी हानि न होने देना।
आँसू पीकर रह जाना -भीतर ही भीतर दुःखी होना।
आकाश के तारे तोड़ना-असम्भव कार्य करना।
आकाश पातालएककरना -कठिन प्रयत्न करना।
आग में घी डालना -क्रोध और अधिक बढ़ाना।
आग से खेलना -- जानबूझकर मुसीबत में फँसना।
आग पर पानी डालना -उत्तेजित व्यक्ति को शान्त करना।
आटे दाल का भाव मालूम होना - कठिनाई में पड़ जाना।
आसमान से बातें करना- ऊँची कल्पना करना।
आग पानी का बैर -स्वाभाविक शत्रुता।
आसमान पर चढ़ना -बहुत अधिक अभिमान करना।
आग बबूला होना -बहुत क्रोध करना।
आपे से बाहर होना -अत्यधिक क्रोध से काबू में न रहना।
कुछ प्रचलित लोकोक्तियाँ
अंडा सिखावे बच्चे को चीं-चीं मत कर- छोटे के द्वारा बड़े को उपदेश देना।
अंडे सेवे कोई बच्चे लेवे कोई - परिश्रम कोई करे लाभ किसी और को मिले।
अंडे होंगे तो बच्चे बहुतेरे हो जाएँगे - मूल वस्तु रहने पर उससे बनने वाली वस्तुएँ मिल ही जाती हैं।
अंत भला सो सब भला - कार्य का परिणाम सही हो जाए तो सारी गलतियाँ भुला दी जाती हैं।
अंत भले का भला - भलाई करने वाले का भला ही होता है।
अंधा बाँटे रेवड़ी फिर- फिर अपनों को देय -अपने अधिकार का लाभ अपने लोगों को ही पहुँचाना।
अंधा क्या चाहे दो आँखें - मनचाही वस्तु प्राप्त होना।
अक्ल बड़ी या भैंस -शारीरिक शक्ति की अपेक्षा बुद्धि का अधिक महत्व होता है।
अच्छी मति जो चाहोंए बूढ़े पूछन जाओ - बड़े-बूढ़ों के अनुभव का लाभ उठाना चाहिये।
अटकेगा सो भटकेगा -दुविधा या सोच.विचार में पड़ने से काम नहीं होता।
अधजल गगरी छलकत जाए -ओछा आदमी थोड़ा गुण या धन होने पर इतराने लगता है।

संधि

संधि शब्द का अर्थ है मेल। दो निकटवर्ती वर्णों के आपसी मेल से जो परिवर्तन होता है उसे संधि कहलाता है।

संधि तीन प्रकार में विभाजित है

1.स्वर संधि

2 व्यंजन संधि

3 विसर्ग संधि

स्वर संधि

दो स्वरों के आस .पास आने पर उनमें जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते है।

जैसे विद्या + आलय त्र विद्यालय।

व्यंजन संधि

व्यंजन के साथ स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उस व्यंजन में जो रुपान्तरण होता है , उसे व्यंजन संधि कहते हैं

विसर्ग संधि

विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन का मेल होने पर जो विकार होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं !

औपचारिक पत्र और अनौपचारिक पत्र

हिंदी में पत्र लेखन यह ध्यान रखें-

हिंदी में पत्र लेखन अंग्रेजी भाषा की तरह ही होता है। पत्र लिखते समय आप को यह ध्यान रखना है की जो पत्र आप लिख रहे हैं पढ़ने वाले को कितना समझ में आएगा ! क्योंकि जब कोई पत्र पढ़ता है तो आप वहां पर नहीं होते हैं तो आपका पत्र लेखन ऐसा हो कि आप उ सके सामने नहीं होते हुए भी उसको अनुभव दिलाते हैं कि मैं आपके पास हूं और आपसे वार्तालाप कर रहा हूं !

सरल भाषा का उपयोग हमेंशा अच्छा माना जाता है ! लेकिन जटिल शब्दों का प्रयोग व उलझे हुए वाक्य पाठक को निरर्थक एवं उबाऊ बना देते हैं ! निश्चयात्मकताए आपके पत्र में होनी चाहिए यदि पाठक को पत्र पढ़ने के बाद कोई शंका या दुविधा बनी रहती है तो पत्र लिखने का सारा उद्देश्य ही खत्म हो जाता है ! संक्षिप्तता से अपनी पूरी बात लिखना ही अच्छा पत्र लेखन माना जाता है ! पत्र लेखन को दो वर्गो में विभाजित किया जाता है .

औपचारिक पत्र

अनौपचारिक पत्र

औपचारिक पत्र

औपचारिक पत्रए हिंदी में पत्र लेखन में ध्यान रखें की जिसको आप पत्र लिख रहे हैं उनसे आपका कोई निजी परिचय नहीं है यदि आपका व्यक्तिगत लगाव या परिचय भी हो तो लेखन में वह व्यक्त नहीं होना चाहिए ! औपचारिक पत्र लेखन में मुख्यतः सं देशए सूचनाएवं तथ्यों का ही अधिक महत्व दिया जाता है ! इस प्रकार के पत्र संस्था के अधिकारीएवं कार्यालय के अधिकारी को लिखा जाता है !

अनौपचारिक पत्र

अनौपचारिक पत्र हिंदी में पत्र लेखन में ध्यान रखें कि जिसको आप पत्र लिख रहे हैं उनसे आपका निजी परिचय है और उनसे व्यक्तिगत संबंध भी हैं! इस तरह के पत्र लेखन में व्यक्तिगत सुख-दुख का ब्योराएवं विवरण के साथ व्यक्तिगत संबंध को उल्लेख किया जाता है ! अपने परिवार के लोग मित्रएवं निकट संबंधियों को इस तरह के पत्र लिखे जाते हैं !

पत्र लेखन नमूना

औपचारिक पत्र . पत्र लेखन नमूना

हिन्दी सरकारी पत्र लेखन में निवास प्रमाण पत्र हेतु आवेदन पत्रए आय प्रमाण पत्र हेतु आवेदन पत्रए जन्म प्रमाण पत्र ऑनलाइन आवेदनए और शासकीय पत्र लेखन आदि शामिल है ! अक्सर लोगों का यह प्रश्न होता है कि आवेदन पत्र कैसे लिखे !

पत्र लेखन प्रारूप . ध्यान देना अति आवश्यक है जो आपके पत्र लेखन को आसान बना देता है वह कैसे आप को उदाहरण देकर मैं समझाता हूं !

औपचारिक पत्र लेखन में

शीर्ष भाग में पत्र प्रेषक का पता बाईं ओर लिखा जाता है तथा पत्र प्रेषक अपने नाम के नीचे स्वनिर्देशि के बाद लिखते हैं !

मध्य भाग में संदेश का विवरण होता है !

अंतिम भाग आभार सूचक वाक्य जैसे धन्यवाद आदि का प्रयोग किया जाता है

अनौपचारिक पत्र . पत्र लेखन नमूना

पत्र लेखन प्रारूप . ध्यान देना अति आवश्यक है जो आपके पत्र लेखन को आसान बना देता है वह कैसे आप को उदाहरण देकर मैं समझाता हूं !

अनौपचारिक पत्र लेखन में

- शीर्ष भाग में पता एवं दिनांक, संबोधन और प्रशस्ति आते हैं !
- मध्य भाग में संदेश व कथा का विवरण होता है !
- अंतिम भाग आभार सूचक वाक्य जैसे आप काए प्रणामए धन्यवाद आदि का प्रयोग किया जाता है !

अनौपचारिक पत्र

पिताजी को पत्र .

स्थान का नाम

तिथि

पूजनीय पिताजी

सादर प्रणाम!

कल ही संध्याकालीन भारतीय डाक से आपका पत्र मिला ! आप सभी का कुशल .क्षेम जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई ! यहां पर गौरवएवं मीनाक्षी ठीक हैं !

आपने अपने पत्र में परीक्षा की तैयारी के विषय में पूछा था आपको बता दूं कि हमारी तैयारी पूरी हो चुकी है जो भी बचा है मैं समय रहते पूरा कर लूंगा ! हमें कुछ और पुस्तक खरीदने की आवश्यकता है जो हमारी प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए उत्तम सि. हो सकता है !

मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि हमें 1000/- रु. भेज दीजिए ।मैं उससे पुस्तक खरीद लूँगा।

शेष सब कुशल है ! माता जी और बुआ जी को मैं और मेरे मित्र उनको प्रणाम कहते हैं !

आपका आज्ञाकारी पुत्र

नाम

औपचारिक पत्र

सेवामें

सम्पादक महोदय

दैनिक जागरण

मॉल रोड कानपुर।

विषय. सम्पादक को बिजली संकट के लिए पत्र

महोदय,

मै आपके लोकप्रिय समाचार पत्र दैनिक जागरण के माध्यम से अ पने नगर में बिजली संकट से उत्पन्न कठिनाइओं की और अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।

मै मॉल रोड कानपुर क्षेत्र वाला नागरिक हूँ। आजकल होने वाले बिजली संकट ने यहाँ के निवासियों को परेशान कर रखा है। इससे पहले कभी ऐसे नहीं हुआ था , इस संकट का सामना सबसे अधिक आम लोगों को और छात्रों को करना पड़ रहा है। शाम होते ही सब .कुछ अँधेरे की छाया में सिमट जाता है। पढ़ने वाले छात्र कुछ भी पढ़ पाने में असमर्थ हो जाते है। बिजली के अभाव में 3 .3 दिन तक आता पीस नहीं पाता है। पीने का पानी भरना भी बहुत बड़ी भी समस्या हो गयी है। बिजली के अभाव में पानी को मोटर द्वारा ऊपर की मंजिलों तक नहीं पहुँचाया जा पा रहा है चौकाने वाली बात तह है की क्षेत्र में रहने वाले उद्योगपतियों और अधिकारियों के घर की बिजलीएकमिनट के लिए भी नहीं जाती है।

मैं इस पत्र द्वारा आपके माध्यम से इन भ्रष्ट अधिकारियों की पोल खोलना चाहता हूँ। इस कार्य में आप के सहयोग के लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।

धन्यवाद

निशिकांत

मॉल रोड कानपुर

अनुच्छेद लेखन

अनुच्छेद लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य कुछ बातें

1. यह एक ही अनुच्छेद पैराग्राफ में लिखा जाता है।
2. यह मुख्य विषय को आधार बना कर लिखा जाता है।
3. शब्दों का प्रयोग इस प्रकार हो की बड़े से बड़े वाक्य मेंएकशब्दएकबार ही उपयोग हो।
4. विषय वर्णन इस प्रकार हो कि वो आकर्षक लगेए अशुद्धि रहित हो और वाक्य क्रम में हों।
5. अनुच्छेद अक्सर 90.120 शब्दों में लिखा जाता है।
6. निबंध विस्तार में होता है जबकि अनुच्छेद लेखन का मतलब विस्तार को संक्षेप में लिखना होता है।

अनुच्छेद उदाहरण

कंप्यूटर युग

आज के युग को विज्ञान का युग कहा जाता है। किसी देश का विकास उसके वैज्ञानिक , औद्योगिक व तकीनीकी प्रगति पर निर्भर करता है। आज कंप्यूटर बैंक , रेलवेस्टेशन, हवाई अड्डे, डाकखाने, कारखाने, व्यवसाय हर क्षेत्र में दिन .प्रतिदिन के कार्यों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

कंप्यूटर के अविष्कार ने जीवन को सरलए सुगम और सुविधाजनक बना दिया है। बिल भरनाए रेलवे या हवाई जहाज के टिकट करवानाए परीक्षा परिणाम देखनाए अपने हाल.चलएकव्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को देना आदि अनेक कार्य है जो की कंप्यूटर के मदद से बहुत ही आसान हो गए हैं। कंप्यूटर ने चिकित्सा के क्षेत्र में भी अपना बहुत बड़ा योगदान दिया है। जैसे की इसके बहुत सारे फायदे हैं वैसे ही इसके बहुत सारे दुष्प्रभाव भी हैं। इसका दुष्प्रभाव उसके संबंधों के सीमित होनेए साधन को साध्य माननेए स्वास्थ और सामाजिक जीवन में कमी आने केरूप में देखने को मिल रहा है। मनुष्य को समझना चाहिए की वह इसका दास नहीं है । इसे सिर्फएकसाधन माने और इसका उचित उपयोग तभी करे जब ज़रुरत हो तभी उसका जीवन सफल होगा और वह विकास की तरफ अग्रसर होगा।

निबंध

निबंध शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है नि+ बंध

इसका अर्थ है भली प्रकार से बंधी हुई रचना।

एक अच्छा निबंध लिखने के लिए कुछ आवश्यक बातें ।

1. निबंध लेखन के पूर्व विषय पर विचार कर

अ. निबंध को शीर्षकों पॉइंट्सच्रमें बांट लेना चाहिए।

ब. इन शीर्षकों को उपशीर्षकों में बांट लेना चाहिए।

स. अधिक नहीं तो आरंभए मध्य उपसंहार पर्याप्त है।

2 भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए ।

3 विचारों को क्रमबद्ध रूप से नियोजित किया गया हो।

4. विचारों की पुनरावृत्ति से बचना चाहिए।

भारत में महिला शिक्षा

प्रस्तावना.

भारतीय समाज के सही आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए नारी शिक्षा बेहद ज़रूरी है। महिला एवं पुरुष दोनों ही एक सिक्के के दो पहलू हैं। जिस तरह से साइकिल का संतुलन दोनों पहियों पर निर्भर होता है उसी तरीके से समाज का विकास भी पुरुष और महिला के कन्धों पर आश्रित है। दोनों ही देश को नई ऊँचाईयों तक ले जाने की क्षमता रखते हैं इसलिए दोनों को ही बराबर की शिक्षा का हक़ मिलना जरुरी है। अगर इन दोनों में से किसी भीएककी शिक्षा का स्तर गिरा तो समाज की प्रगति होना नामुमकिन है।

भारत में महिला सुरक्षा के लाभ

भारत की उन्नति के लिए महिलाओं का शिक्षित होना बहुत जरुरी है क्योंकि अपने बच्चों की पहली शिक्षक माँ ही होती है जो उन्हें जीवन की अच्छाईयों और बुराइयों से अवगत कराती है। अगर नारी शिक्षा को नजरंदाज़ किया गया तो देश के भविष्य के लिए यह किसी खतरे से कम नहीं होगा।एकअनपढ़ महिला में वो काबिलियत नहीं होती जिससे वह अपने परिवारए बच्चों का सही ख्याल रख सके। इस कारण आने वाली पीढ़ी कमज़ोर हो जाएगी। हम महिला साक्षरता के सारे लाभ की गिनती तो नहीं कर सकते पर इतना जरुर कह सकते है कीएकशिक्षित महिला अपने परिवार और बच्चों की जिम्मेदारी को अच्छे से निभा सकती है । उन्हें अच्छे बुरे का ज्ञान दे सकती है । सामाजिक तथा आर्थिक कार्य करके देश की प्रगति में अपना योगदान दे सकती है।

एक पुरुष को शिक्षित करके हम सिर्फएकही व्यक्ति तक शिक्षा पहुँचा पाएंगे परएकमहिला को शिक्षित करके हम पूरे देश तक शिक्षा को पहुँचा पाएंगे। महिला साक्षरता की कमी देश को कमज़ोर बनाती है। इसलिए यह बहुत जरुरी है कि महिलाओं को उनकी शिक्षा का हक़ दिया जाए और उन्हें किसी भी तरह से पुरुषों से कम न समझा जाए।

निष्कर्ष

आज के समय में भारत महिला साक्षरता के मामले में लगाता र प्रगति कर रहा है। हिंदुस्तान के इतिहास में भी बहादुर महिलाओं जिक्र किया गया है। मीराबाई दुर्गावती अहिल्याबाई लक्ष्मीबाई जैसी कुछ मशहूर महिलाओं के साथ .साथ वेदों के समय की महिला दर्शनशास्त्री गार्गी विस्वबरा मैत्रयी आदि का भी उदाहरण इतिहास का पन्नो में दर्ज है। ये सब महिलाएं प्रेरणा का स्रोत थी। समाज और देश के लिए दिए गए उनके योगदान को हम कभी नहीं भूल सकते।

भारत की खोज

पंडित जवाहर लाल नेहरु

अहमद नगर का किला

प्रश्न 1 अहमद नगर किले में नेहरु जी अपना शौक पूरा करने के लिए क्या काम करने लगे ?

उत्तर- बागवानी का ।

प्रश्न2 नेहरु जी ने बागवानी छोड़ कर कौनसा काम प्रारंभ किया ?

उत्तर- लेखन

प्रश्न 3 अहमद नगर का किला क्यों प्रसिद्ध था ?

उत्तर- अहमद नगर का किला चाँद बीबी की साहसिक घटना के लिए प्रसिद्ध था ।

प्रश्न 4 किले में नेहरु जी को किस चीज के अवशेष मिले ?

उत्तर- पुरानी इमारतों के ।

प्रश्न 5 नेहरु जी को कलम उठाने के लिए क्यों विवश होना पडा ?

उत्तर- क्योंकि अपनी खुदाई के कम को आगे बढ़ने के लिए जेल अधिकारियों से अनुमति नहीं मिली।

प्रश्न6. चाँद बीबी कौन थी ?

उत्तर- अहमद नगर किले की शासिका ।

तलाश

प्रश्न 1 नेहरु जी भारत को किस दृष्टि से देखते थे ?

उत्तर- आलोचक की दृष्टि से ।

प्रश्न-2 भारत के अतीत के बारे में जानने के लिए नेहरु जी ने न चीजों का सहारा लिया ?

उत्तर- महत्त्वपूर्ण स्मारकों, भग्नावशेषों तथा यात्राओं का ।

प्रश्न 3 हिमालय के हृदय से कौन कौन सि नदियाँ निकलती हैं ?

उत्तर- गंगा, यमुना,सिन्धु और ब्रह्म्मपुत्र ।

प्रश्न 4 शक्ति के पतन और नाश का देश पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर- देश तकनीकी दौड में पिछड़ने लगा तथा मानसिक सजगता को तकनिकी कौश ल में कमी आती गयी।

प्रश्न 5 शक्ति पाकर यूरोप ने क्या किया ?

उत्तर- शक्ति पाकर यूरोप ने पूर्वी देशों पर अधिकार करना शुरू किया ।

प्रश्न 6 अंग्रेजी शासन में भारत के किसानो की समस्याएँ क्या थी ?

उत्तर- गरीबी,कर्ज,स्वार्थ जमींदारी, भरी लगन और कर,पुलिस के अत्याचार ।

प्रश्न 7 नेहरु जी भारत की किस तस्वीर को सहेजकर रखना चाहते थे ?

उत्तर- हरे हरे मैदान,बहती नदियाँ,ठन्डे प्रदेशएहिमालय तथा देश के,नी सुन्दर श्य ।

प्रश्न8 "भारत माता की जय" आपके विचार से इस नारे में किसकी जय की बात कही जाती है ? अपने उत्तर का कारण भी बताइए।

उत्तर- इस नारे में उस अमूर्त मातृभूमि के प्रति प्रेम झलकता है जिसकी मिट्टी में खेलकूदकर हम सभी बड़े हुए हैं। मिट्टी का हमारे जीवन में बड़ा महत्व है। हम जो भोजन खाते हैं वह इसी मिट्टी में उगता है। हमारे घर भी इसी जमीन पर बनते हैं। हमारा पूरा क्रियाकलाप मिट्टी की सतह पर ही होता है। इसलिए अपनी मिट्टी से जुड़ाव होना मनुष्य का एक प्राकृतिक गुण होता है।

सिन्धु घाटी की सभ्यता

प्रश्न 1 सिन्धु घटी सभ्यता के प्रमुख स्थल कौन से हैं ?

उत्तर- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो

प्रश्न 2 मोहनजोदडो क्यों प्रसिद्ध है ?

उत्तर- सिन्धु घाटी सभ्यता के अवशेषों के मिलने के कारण ।

प्रश्न 3 आर्य कौन थे? वे भारत कब आये ?

उत्तर- आर्य भारत की संतान थे तथा वे भारत में सिन्धु युग के हजार वर्ष बाद आये होंगे

प्रश्न 4 आपके मन में अपनी मातृभूमि की कैसी तस्वीर है ?

उत्तर- मेरी मातृभूमि एक विशाल देश है जहाँ दुनिया की आबादी का एक बड़ा हिस्सा रहता है। यहाँ पर हर तरह की भौगोलिक संरचनाएँ है।हर प्रकार की ऋतुएँ आती जाती हैं। यहाँ के अधिकांश लोगों में एक अजीब सा अपनापन है। यहाँ लाखों समस्याएँ हैं , फिर भी यहाँ के लोग खुश रहने के हजारों बहाने तलाश ही लेते हैं।

प्रश्न 5 सिंधु घाटी सभ्यता के अं त के बारे में अनेक विद्वानों के कई मत हैं। आपके अनुसार इस सभ्यता का अंत कैसे हुआ होगा, तर्क सहित लिखिए।

उत्तर- जहाँ पर सिंधु घाटी सभ्यता थी वहाँ के अधिकाँश भूभाग में आज रेगिस्तान है। हड़प्पा के अनाज भंडारों के अवशेषों से यह कहा जा सकता है कि उस काल में वहाँ पर खेती बारी के लायक उपजाऊ जमीन हुआ करती थी। इसलिए जलवायु परिवर्तन ही सिंधु घाटी सभ्यता के अंत का कारण रहा होगा। समय बीतने के साथ रेगिस्तान का प्रसार होने लगा होगा और लोग उस स्थान को छोड़कर उपजाऊ जमीन वाले स्थानों की ओर पलायन कर गए होंगे।

प्रश्न 6 उपनिषदों में बार-बार कहा गया है कि शरीर स्वस्थ हो , मन स्वच्छ हो और तन- मन दोनों अनुशासन में रहें आप अपने दैनिक क्रिया कलापों में इसे कितना लागू कर पाते हैं ? लिखिए।

उत्तर- मैं सुबह तड़के उठ जाता हूँ क्योंकि स्कूल बस सुबह छह बजे आ जाती है। स्कूल जाने से पहले मैं नहा धोकर तैयार हो जाता हूँ। इससे पूरे दिन तन और मन में ताजगी बनी रहती है। मेरी माँ मेरे लिए संतुलित आहार ही बनाती है ताकि मैं स्वस्थ रहूँ। रोज शाम में मैं आउटडोर गेम खेलने जाता हूँ ताकि शरीर की कसरत हो जाए।

प्रश्न 7 प्राचीन समय में विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रभाव के दो उदाहरण बताइए।

उत्तर- प्राचीन समय में अरब देशों और पश्चिम के देशों ने भारत से दशमलव प्रणाली सीखी। मध्ययुग में भारत से उन कपड़ों की माँग अच्छी थी जिन पर हाथ से कशीदाकारी की जाती थी।

प्रश्न 8 वेद का क्या अर्थ हैं ? भारत में प्रथम वेद किसे माना जाता है ?

उत्तर- वेद का अर्थ ज्ञान है तथा भारत का पहला वेद ऋग्वेद है ।

प्रश्न 9 वेदों की रचना कब की मानी जाती है ?

उत्तर- 1500 ई० पूर्व

प्रश्न 10 उपनिषद किस समय की जानकारी देते हैं ?

उत्तर- उपनिषद लगभाग 800 ई ० पूर्व के समाज की ।

प्रश्न 11 भारतीय संस्कृति की निरंतरता का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर- इसमें समय के साथ अनेक परिवर्तन हुए फिर भी आज भी बची हुई है ।

प्रश्न 12 उपनिषदों में पूजा पाठ आदि को क्या बताया गया है ?

उत्तर- सच्चे ज्ञान के बिना व्यर्थ बताया है ।

प्रश्न 13 प्रगति का क्या मार्ग बताया गया है ?

उत्तर- स्वच्छ और स्वस्थ मन मस्तिष्क ।

प्रश्न 14 आर्यों की जीवन पध्यति दूसरों से कैसे अलग थी ?

उत्तर- आर्य व्यक्तिवादी थे ।

प्रश्न 16 गांधी जी के जन आंदोलनों के पीछे कौन सि मनोवृत्ति कम कर रही थी ?

उत्तर- समाज में ऊंच नीच,जाति पाति की भावना न हो ।

प्रश्न 17 भौतिकवाद क्या है ?

उत्तर- वास्तविकताओं पर विश्वास करना जो वास्तव में मौजूद हैं ।

प्रश्न 18 महात्मा बुद्ध कौन थे ?

उत्तर- बौद्ध धर्म के संस्थापक ।

प्रश्न 19 बौद्ध और जैन धर्म में क्या समानता थी ?

उत्तर- दोनों वैदिक धर्म से अलग हुए थे ।

प्रश्न 20 अर्थशास्त्र किसकी रचना है ?

उत्तर- कौटिल्य की

प्रश्न 21 अशोक किस वंश का सम्राट था ?

उत्तर- मौर्य वंश का ।

प्रश्न 22 अशोक के विचार और फरमान कहाँ लिपिब. किए गए ?

उत्तर- शिलाओं और धातुओं में

युगों का दौर

प्रश्न 1 भारत का नेपोलियन किसे कहा जाता है और क्यों ?

उत्तर- समुद्रगुप्त को इसका शासन काल शक्तिशाली था।

प्रश्न 2 कुषाण काल में बौद्ध धर्म किस प्रकार प्रभावित हुआ ?

उत्तर- दो भागों में बाँट गया हीनयान और महायान .

प्रश्न 3 उत्तर भारत दक्षिण भारत जैसा विकसित क्यों नहीं हो पाया ?

उत्तर- उत्तर भारत पर हमले होते रहे जिसके कारण बहुत से लोग दक्षिण भारत में जाकर बस गए , और उत्तर भारत हमलावरों की संस्कृति से भी प्रभावित होता रहा ।

प्रश्न 4 सामाजिक ढांचे और भारतीय दर्शन के बीच दिलचस्प बात क्या है ?

उत्तर- भारतीय सामाजिक ढांचा सामुदायिक था जबकि दर्शन व्यक्तिवादी था ।

प्रश्न 5 भारतीय रंग मंच का मूल उद्गम कहाँ मिलता है ?

उत्तर- ऋग्वेद की ऋचाओं और संवादों में मिलता है ।

प्रश्न 7 भवभूति कौन थे ?

उत्तर- संस्कृत भाषा के नाटककार ।

प्रश्न 8 संस्कृत भाषा को समृद्ध क्यों कहा गया है ?

उत्तर- अनेक आधुनिक भाषाओँ की जननी तथा अलंकृत होने के कारण।

प्रश्न 9 प्राचीन व्यापार की क्या स्तिथि थी ?

उत्तर- दूर तक फैला हुआ था, तथा गुणवत्ता के कारण विदेशी बाजारों में भी इसका नियंत्रण था ।

प्रश्न 10 कालिदास की प्रसिद्धि का क्या कारण है ?

उत्तर- कालिदास संस्कृत रचनाओं में जीवन के प्रति प्रेम व सौन्दर्य था ।

नयी समस्याएँ

प्रश्न 1. बाबर कौन था ? उसके व्यक्तित्व की विशेषताएं लिखिए ।

उत्तर- बाबर मुगल वंश का शासक था। वह कला और ससाहित्य का शौक़ीन था।

प्रश्न 2 राणा प्रताप कौन थे ? उन्होनें जंगलों में फिरना क्यों बेहतर समझा ?

उत्तर- महाराणा प्रताप मेवाड़ के साहसी राजपूत थे । उन्होंने कभी भी अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की। यही कारण था कि वे जंगलों में स्वतंत्र घूमते रहे।

प्रश्न 3.अकबर भारत की सामाजिक स्थिति में कोई बुनियादी अंतर क्यूँ नहीं कर सका ?

उत्तर- संसार के अन्य भागों में क्या हो रहा है इस पर अकबर ने ध्यान नहीं दिया। उसके सामने प्रमुख समस्या इस्लाम के साथ अन्य धर्म के लोगों के रीति- रिवाजों के मेल से राष्ट्रीय एकता कायम करने की थी ।

प्रश्न 4. औरंगजेब कौन था ? उसकी नीतियाँ मुगल वंश के लिए क्यों घातक सिद्ध हुईं?

उत्तर- औरंगजेब अकबर का वंशज था। वह धर्मांध तथा समय के विपरीत चलने वाला था।

प्रश्न 5. जय सिंह कौन था? उसके व्यक्तित्व की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- जय सिंह जयपुर का राजा था। वह अत्यंत चतुर एवं अवसरवादी नेता था।

प्रश्न 6. आरम्भिक दिनों में ईस्ट इंडिया कम्पनी का मुख्य काम क्या था ?

उत्तर- भारत में बने माल को यूरोप ले जा कर बेचना और लाभ कमाना।

प्रश्न 7. महमूद गजनवी कौन था ?उसके आक्रमण का हिन्दुओं के मन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर- महमूद गजनवीएकअफगानिस्तान का तुर्क था। उसने भारत के उत्तरी भाग पर अत्यंत निर्ममतापूर्वक आक्रमण कियाए जिससे बहुत खून- खराबा हुआ। हिंदु बुरी तरह से इधर- उधर बिखर गए और उनके मन में मुसलमानों के प्रति नफ़रत पैदा हो गई।

प्रश्न 8. अमीर खुसरो कौन थे ? उनकी प्रसिद्धि का क्या कारण था ?

उत्तर- ये फारसी के महा न कवि थे। उन्हें संस्कृत का अच्छा ज्ञान था। वे महान संगीतकार थे। उन्होंने वाद्य यंत्र सितार का आविष्कार किया ।

प्रश्न 9. शिवाजी कौन थे ? उनका नाम भारतीय इतिहास में क्यों प्रसि. है ?

उत्तर- मराठों के नायक शिवाजी का जन्म सन 1627 में हुआ था। वे कुशल छापामा र नेता थे। उनकी सेना के घुड़सवार दूर.दूर छापा मारकर शत्रुओं का मुकाबला करते थे।

प्रश्न10. नादिरशाह के हमलों से भारत किस प्रकार प्रभावित हुआ ?

उत्तर- मुगल शासक कमजोर हो गए । मराठों ने अपनी शक्ति बढाई और वे पंजाब तक फैल गए । ऐसा लगने लगा की भारत पर मराठे अपना अधिकार जमा लेंगे।

प्रश्न 11 इस्लाम धर्म भारत में किस प्रकार फैला ?

उत्तर- इस्लाम का भारत में स्वागत हुआ तथा उनकी मस्जिदें बनी व् भारतीयता की परम्परा ने इसे फैलने में मदद की ।

अंतिम दौर.... 1

प्रश्न 1. अंग्रेजों के शासन में भारत की स्थिति कैसी हो गई थी ?

उत्तर- भारत की स्थिति अत्यंत कमजोर हो गयी थी। भारत ब्रिटिश राज का औपनिवेशि क तथा खेतिहर पुछल्ला बन गया था। शिक्षा के प्रचार को नापसंद करने वाले अंग्रेजों को भारत में शिक्षा का प्रचार क्यों करना पड़ा?

प्रश्न 2. शिक्षा को नापसंद करने वाले अंग्रेजों को भी भारत में शिक्षा का प्रचार क्यों करना पड़ा ?

उत्तर- शिक्षा को नापसंद करने वाले अंग्रेजों को भी भारत में शिक्षा का प्राचर इसलिए करना पड़ा क्योंकि उन्हें अपने कार्य के लिए क्लर्क तैयार करने थे।

प्रश्न 3. सती प्रथा क्या है ? इसे रोकने में राजा राम मोहन राय ने क्या किया ?

उत्तर- प्राचीन काल में पुरुष की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी को उसके शव के साथ जिन्दा जला दिया जाता था। इसे सती-प्रथा कहा जाता है। राजा राम मोहन राय ने सती.प्रथा पर प्रतिबंध लगवा दिया था।

प्रश्न 4. कैपिटेशन चार्ज क्या है ? इस चार्ज को कौन देता था ?

उत्तर- भारतीयों को इंग्लैंड में ब्रिटिश सेना केएकहिस्से के प्रशिक्षण का खर्च वहन करना पड्ता था। इस राशि को कैपिटेशन चार्ज कहा जाता है। इस चार्ज को भारतीयों द्वारा वहन किया जाता है।

प्रश्न 5. लक्ष्मीबाई कौन थी ?

उत्तर- लक्ष्मीबाई झाँसी की रानी थी। वह वीरांगना थीं। उन्होंने 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों से मुकाबला किया और उनके छक्के छुड़ाए ।

प्रश्न 6. राम कृष्ण मिशन के संस्थापक कौन थे ?

उत्तर- रामकृष्ण मिशन के संस्थापक स्वामी विवेकानंद थे।

प्रश्न 7.1857 की क्रांति के प्रमुख नेताओं के नाम लिखिए।

उत्तर- 1857 की क्रांति के प्रमुख नेताओं में मंगल पांडे रानी लक्ष्मी बाईएतात्या टोपे आदि थे।

प्रश्न 8.1857 का विद्रोह सफल क्यों न हो सका ?

उत्तर- विद्रोह के लिए जो तिथि निश्चित की गई थी उसका खुलासा समय से पूर्व हो गया और अंग्रेज़ सतर्क हो गए ।

प्रश्न 9. तकनीकी परिवर्तन और शिक्षा के प्रसार का समाज पर क्या असर हुआ ?

उत्तर- समाज की सोई चेतना जाग उठी। अपने देश की स्वतन्त्रता के प्रति लगाव पैदा हो गई।

प्रश्न 10. स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व की विशेषताएं लिखिए।

उत्तर- ये राम कृष्ण परमहंस के शिष्य थे। उन्हे भारत की विरासत पर गर्व था। वे बंगला और अंग्रेजी भाषा के ओजस्वी वक्ता थे।

अंतिम दौर..... 2

प्रश्न 1. प्रथम विश्व यु. के बाद लोगों की दशा कैसी थी ?

उत्तर- समाज के हर वर्ग को अत्यं त मुशकिल भरा जीवन जीना पड़ा। मजदूर वर्ग किसान मध्यवर्ग सभी त्रस्त थे। उनका शोषण किया जा रहा था और गरीबी बढती जा रही थी।

प्रश्न 2. गांधी जी के द्वारा प्रोत्साहित किए जाने का जनता पर क्या असर हुआ?

उत्तर- गांधी जी के द्वारा "डरो मत" कहकर प्रोत्साहित किए जाने पर लोगों के दिलों से ब्रिटिश सरकार का डर जाता रहा।

प्रश्न 3. गांधी जी ने कांग्रेस संगठन में क्या-क्या परिवर्तन किए ?

उत्तर- संविधान में बदलाव ला दिया। उसे लोकतान्त्रिक बनाया तथा किसानों और मजदूरों को कांग्रेस में आने के लिए उत्साहित किया।

प्रश्न 4. भारतीय संस्कृति के बारे में गांधी जी के विचार क्या थे ?

उत्तर- गांधी जी सोचते थे कि भारतीय संस्कृति न हिंदु है। न इस्लाम। ये सबका मिला-जुला रूप है।

प्रश्न 5. गांधी जी की कार्य प्रणाली क्या थी ?

उत्तर- गांधी जी की कार्य-प्रणाली में हिंसात्मक या उग्रता की भावना को स्थान न था। उन्होंने सत्य और अहिंसा को अपना हथियार बनाया।

प्रश्न 6. प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद लोगों की आशा निराशा में क्यों बदल गई ?

उत्तर- भारतीय जनता को अनेक वायदे पूरे करने का आश्वाशन दिया था। लोगों को आशा बंधी थी कि अब उनकी जिन्दगी में खुशहाली आएगी पर युद्ध की समाप्ति के बाद ब्रिटिश सरकार ने दमनकारी क़ानून लागू कर दिया। लोगों की आशा निराशा में बदल गई।

प्रश्न 1. भारत छोड़ो प्रस्ताव रखने का क्या कारण था ?उत्तर- भारत छोड़ो प्रस्ताव ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध था,जिसमें आम जनता ने भी यह अपाल की कि अंग्रेजों को भारत छोड़ देना चाहिये।

प्रश्न 2. भारत छोड़ो प्रस्ताव कब और किसके द्वारा रखा गया ?

उत्तर- भारत छोड़ोष्प्रस्ताव 7 और 8 अगस्त सन 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा रखा गया।

प्रश्न 3. इस आन्दोलन में क्या अपाल की गयी ?

उत्तर- यह एक लम्बा और बड़ा प्रस्ताव था। इसमें अंतरिम सरकार बनाने का आवेदन था। जिसमें भारत के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व हो सके। इसमें मित्र शक्तियों के सहयोग से भारत की सुरक्षा को अपनी साड़ी हथियारबंध और अहिंसक शक्तियों के साथ बाहरी हमले को रोकने का प्रस्ताव भी था।

प्रश्न 4. कांग्रेस कमेटी ने अपनी अपील किसके समक्ष की?

उत्तर- ब्रिटेन और संयुक्त राष्ट्र के समक्ष ।

प्रश्न 5. प्रस्ताव कब पारित हुआ व इसका परिणाम क्या निकला?

उत्तर- प्रस्ताव 8 अगस्त 1942 को पारित हुआ। जनता ने प्रदर्शन किए। सरकार ने गिरफ्तारियाँ की इन्हीं गिरफ्तारियों में जवाहरलाल नेहरु और उनके साथियों को अहमद नगर के किले में गिरफ्ता र कर दिया गया।

दो पृष्ठभूमियाँ भारतीय और अंग्रेजी

प्रश्न 1.सन 1942 में लोगों के प्रदर्शन का क्या उद्देश्य था?

उत्तर- अंग्रेजी शासन सत्ता को समाप्त करने का।

प्रश्न 2. जनता ने सरकार के विरुद्ध कैसा प्रदर्शन किया?

उत्तर- जनता ने हिंसात्मक और शांतिपूर्ण दोनों तरह से प्रदर्शन किया।

प्रश्न 3. इस प्रदर्शन को मूर्खतापूर्ण प्रदर्शन क्यों कहा गया?

उत्तर- सन 1857 के गदर के बाद सन 1942 में ये पहला बड़ा विद्रोह था। इसे मूर्खतापूर्ण इसलिए कहा गया क्योंकि ये योजनाबद्ध नहीं था। यदि यह विरोध सोच-समझकर किया जाता तो शायद इसका परिणाम भी श्रेष्ठतर होता।

प्रश्न 4. ब्रिटिश शासन काल के अंतिम दौर में भारत में कहाँ.कहाँ अकाल पड़ा ?

उत्तर- भारत में बंगाल और पूर्वी तथा दक्षिणी भारत पर अकाल का प्रभाव रहा ।

प्रश्न 5. भारत की सजीव तस्वीर नेहरु जी ने किस प्रकार प्रस्तुत की है ?

उत्तर- जिस प्रकार अकाल और युद्ध के बावजूद प्रकृति अपना रूप अवश्य बदलती है। लड़ाई के मैदान को भी फूल और हरी घास ढक लेती है। उसी प्रकार भारत ने भी कितनी ही मुश्किलों का सामना भले ही किया फिर भी उसकी आने वाली सशक्त पीढ़ियों ने उसके स्वरूप को डूबने न दियाए उसने अपन अस्तित्व कभी नहीं खोया।

उपसंहार

प्रश्न 1. नेहरु जी का भारत के प्रति मुख्य नजरिया क्या था ?

उत्तर- भारत की विभिन्नता में सांस्कृतिक,कता।

प्रश्न 2. नेहरु के शब्दों में एक दुनिया की ओर बढ़ना क्या है ?

उत्तर- सभी देशों की भिन्न- भिन्न संस्कृतियाँ आप स में मिलकर अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति में घुल- मिल जाएँ।

अभ्यास कार्य

कक्षा आठवीं हेतु प्रश्न(प्रथम-पीरियोडिक परीक्षा) पत्र योजना-

क्र.सं.	विषयवस्तु-	प्रश्नों का प्रकार	उप भार	कुल भार	पाठ के नाम
1	अपठित गद्यांश शब्दों में 100-80	अति लघूत्तरात्मक लघूत्तरात्मक	1X2=2 2X2=1	4	-
2	पाठ में आए भाषा की बात से सम्बंधित व्याकरण के प्रश्न	अति लघूत्तरात्मक	1X8=8	8	
पाठ्य पुस्तक से 1-बसंत)व भारत की खोज से (					
बसन्त भाग 1-से					-1लाख की चूड़ियाँ -2बस की यात्रा -3चिट्ठियों की अनूठी दुनिया
3	गद्यांश के आधार पर प्रश्न	अति लघूत्तरात्मक	1X3=3	3	
4	गद्य पाठों के आधार पर प्रश्न	लघूत्तरात्मक	2X4=2	4	
5	काव्यांश के आधार पर प्रश्न	अति लघूत्तरात्मक	1X3=3	3	-1ध्वनि -2दीवानों की हस्ती -3भगवान के डाकिये
6	पद्य पाठों के आधार पर प्रश्न	लघूत्तरात्मक	2X4=2	4	
भारत की खोज से					-1अहमदनगर का किला -2तलाश -3सिन्धु घाटी सभ्यता
7	पूरक पुस्तक) भारत की खोज से प्रश्न (	लघूत्तरात्मक	2X4=2	4	
	रचनात्मकलेखन-				
8	निबंध अनुच्छेद/	शब्द सीमा 100-80	5	5	-
9	पत्र लेखन		5	5	-
कुल				**40**	

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के अनुसार प्रथम पीरियोडिक परीक्षा अगस्त माह के प्रथम सप्ताह में प्रस्तावित है तथा पाठ्यक्रम 31 जुलाई 2018 तक निर्धारित है ।

कक्षा आठवीं हेतु प्रश्न-पत्र योजना (अर्द्ध वार्षिक परीक्षा)

क्र.सं.	विषयवस्तु-	प्रश्नों का प्रकार	उप भार	कुल भार	पाठ के नाम
1	अपठित गद्यांश ब्दों मेंश 100-80	अति लघूत्तरात्मक लघूत्तरात्मक	1X3=3 2X4=2	7	-
2	अपठित काव्यांश शब्दों में 100-80	अति लघूत्तरात्मक लघूत्तरात्मक	1X2=2 2X4=2	6	
3	पाठ में आए भाषा की बात से सम्बंधित व्याकरण के प्रश्न	अति लघूत्तरात्मक	1X12=12	12	
पाठ्य पुस्तक से 1-बसंत)व भारत की खोज से (					
बसंत भाग 1-से					-1लाख की चूड़ियाँ -2बस की यात्रा -3चिट्ठियों की अनूठी दुनिया -4क्या निराश हुआ जाए
4	गद्यांश के आधार पर प्रश्न	अति लघूत्तरात्मक लघूत्तरात्मक	1X1=1 2X4=2	5	
5	गद्य पाठों के आधार पर प्रश्न	लघूत्तरात्मक	2X12=6	12	
6	काव्यांश के आधार पर प्रश्न	अति लघूत्तरात्मक लघूत्तरात्मक	1X1=1 2X4=2	5	-1ध्वनि -2दीवानों की हस्ती -3भगवान के डाकिये -4यह सबसे काठी समय नहीं -5कबीर की साखियाँ
7	पद्य पाठों के आधार पर प्रश्न	लघूत्तरात्मक	2X5=10	10	
8	गद्य व पद्य पाठों पर आधारित मूल्यपरक प्रश्न		1X4=4	4	
भारत की खोज से					-1अहमदनगर का किला -2तलाश -3सिन्धु घाटी सभ्यता -4युगों का दौर
9	पूरक पुस्तक) भारत की खोज से प्रश्न (	लघूत्तरात्मक	2X6=3	6	
रचनात्मकलेखन-					
10	निबंधअनुच्छेद/	शब्द सीमा 100-80	8	8	-
11	पत्र लेखन		5	5	-
कुल				**80**	

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के अनुसार अर्द्ध वार्षिक परीक्षा अक्टूबर माह के प्रथम सप्ताह में प्रस्तावित है तथा पाठ्यक्रम 30 सितम्बर 2018 तक निर्धारित है ।

कक्षा आठवीं हेतु प्रश्न(द्वितीय-पीरियोडिक परीक्षा) पत्र योजना-

क्र.सं.	विषयवस्तु-	प्रश्नों का प्रकार	उप भार	कुल भार	पाठ के नाम
1	अपठित गद्यांश शब्दों में 100-80	अति लघूत्तरात्मक लघूत्तरात्मक	1X2=2 2X2=1	4	-
2	पाठ में आए भाषा की बात से सम्बंधित व्याकरण के प्रश्न	अति लघूत्तरात्मक	1X8=8	8	
पाठ्य पुस्तक से 1-बसंत)व भारत की खोज से (					
बसन्त भाग 1-से					-1कामचोर -2जब सिनेमा ने बोलना सीखा -3जहाँ पहिया है -4अकबरी लोटा
3	गद्यांश के आधार पर प्रश्न	अति लघूत्तरात्मक	1X3=3	3	
4	गद्य पाठों के आधार पर प्रश्न	लघूत्तरात्मक	2X4=2	4	
5	काव्यांश के आधार पर प्रश्न	अति लघूत्तरात्मक	1X3=3	3	-1सुदामा चरित -2सूर के पद
6	पद्य पाठों के आधार पर प्रश्न	लघूत्तरात्मक	2X4=2	4	
भारत की खोज से					-1नयी समस्याएँ -2अंतिम दौर -3तनाव
7	पूरक पुस्तक) भारत की खोज (से प्रश्न	लघूत्तरात्मक	2X4=2	4	
	रचनात्मकलेखन-				
8	निबंधअनुच्छेद/	शब्द सीमा 100-80	5	5	-
9	पत्र लेखन		5	5	-
कुल				**40**	

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के अनुसार द्वितीय पीरियोडिक परीक्षा जनवरी माह के प्रथम सप्ताह में प्रस्तावित है तथा पाठ्यक्रम 31 दिसंबर 2018 तक निर्धारित है |

कक्षा आठवीं हेतु प्रश्न-पत्र योजना (वार्षिक परीक्षा)

क्र.सं.	विषयवस्तु-	प्रश्नों का प्रकार	उप भार	कुल भार	पाठ के नाम
1	अपठित गद्यांश शब्दों में 100-80	अति लघूत्तरात्मक लघूत्तरात्मक	1X3=3 2X4=2	7	-
2	अपठित काव्यांश शब्दों में 100-80	अति लघूत्तरात्मक लघूत्तरात्मक	1X2=2 2X4=2	6	
3	पाठ में आए भाषा की बात से सम्बंधित व्याकरण के प्रश्न	अति लघूत्तरात्मक	1X12=12	12	
पाठ्य पुस्तक से 1-बसंत)व भारत की खोज कथा से (					
बसंत भाग 1-से					-1कामचोर -2जब सिनेमा ने बोलना सीखा -3जहाँ पहिया है -4अकबरी लोटा -5पानी की कहानी -6बाज और सांप -7टोपी
4	गद्यांश के आधार पर प्रश्न	अति लघूत्तरात्मक लघूत्तरात्मक	1X1=1 2X4=2	5	
5	गद्य पाठों के आधार पर प्रश्न	लघूत्तरात्मक	2X12=6	12	
6	काव्यांश के आधार पर प्रश्न	अति लघूत्तरात्मक लघूत्तरात्मक	1X1=1 2X4=2	5	-1सुदामा चरित -2सूर के पद
7	पद्य पाठों के आधार पर प्रश्न	लघूत्तरात्मक	2X5=10	10	
8	गद्य व पद्य पाठों पर आधारित मूल्यपरक प्रश्न		1X4=4	4	
भारत की खोज से					-1नयी समस्याएँ -2अंतिम दौर -3तनाव -4दो पृष्ठभूमियाँ
9	पूरक पुस्तक) भारत की खोज (से प्रश्न	लघूत्तरात्मक	2X6=3	6	
रचनात्मकलेखन-					
10	निबंधअनुच्छेद/ या संवाद लेखन	शब्द सीमा 100-80	8	8	-
11	पत्र लेखन		5	5	-
कुल				**80**	

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के अनुसार सत्रांत परीक्षा मार्च माह में प्रस्तावित है | सत्रांत परीक्षा के निर्धारित 80 अंकों में से प्रथम सत्र के पाठ्यक्रम में से 24 अंक (30 प्रतिशत) के प्रश्न पूछे जाएँगे | इसका विभाजन निम्न प्रकार किया जा सकता है- 12 अंक बसन्त से, 6 अंक व्याकरण से, 6 अंक पूरक पुस्तक बाल राम कथा से

सामायिक परीक्षा

प्रथम सत्र 2018.2019

कक्षा आठवीं **विषय हिंदी** **पूर्णांक...40**

1 प्रश्न निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर व समझकर प्रश्नों के उत्तर- - लिखिए... 4.

अमीना का दिल कचोट रहा है । गाँव के बच्चे अपने .अपने बाप के साथ जा रहे हैं । हामिद का बाप अमीना के सिवा और कौन है उसे कैसे अकेले मेले में जाने दे। उसी भीड़ .भाड़ में बच्चा कहीं खो जाए तो क्या हो ? नहींए अमीना उसे यों न जाने देगी । नन्हीं कृसी जान । तीन कोस चलेगा कैसे ? पैर में छाले पड़ जाएँगे । जूते भी तो नहीं हैं । वह थोड़ी.थोड़ी दूर परुसे गोद ले लेगीए लेकिन यहाँ तो घंटों चीज़ें जमा करते लगेंगे । माँगे ही का तो भरोसा ठहरा । उस दिन फहीमन के कपड़े सिए थे । आठ आने पैसे मिले थे । उस अठ्न्नी को ईमान की तरह बचाती चली आती थी इसी ईद के लिएए लेकिन कल ग्वालिन सिर पर सवार हो गई तो क्या करती ? हामिद के लिए कुछ नहीं है । तो पैसे का दूध तो चाहिए ही । अब तो कुल दो आने पैसे बच रहे हैं । तीन पैसे हामिद की जेब में ,पाँच अमीना के बटुवे में ।

प्रश्न.

1.अमीना की चिंता का कारण क्या था ?

2 हामिद कितने पैसे लेकर ईदगाह जा रहा है ?

3. अमीना को आठ आने पैसे कहाँ से मिले थे ?

2 व्याकरण संबंधी प्रश्नों के उत्तर लिखिए..... 8.

1 सन्धि कितने प्रकार की होती है उनके नाम लिखिए ? 1

2 संज्ञा को उदाहरण सहित परिभाषित कीजिए । 1

3. विशेषण की परिभाषा लिखिए। 1

4 वह सुंदर लड़की है वाक्य में प्रयुक्त विशेषण शब्द का चयन कीजिए । 1

5.सामाजिक शब्द में से मूल शब्द व प्रत्यय अलग कीजिए । 1

6 कर शब्द का अंत में प्रयोग करके दो नए शब्द बनाइए । 1

7-बस.... इस शब्द के दो अर्थ बताकर या स्पष्ट करते हुए एक वाक्य बनाइए ।

8. कारक की परिभाषा लिखिए। 1

3 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर व समझकर प्रश्नों के सही उत्तर लिखिए-

बदलू मनिहार था। चूड़ियाँ बनाना उसका पैतृक पेशा था और वास्तव में वह बहुत ही सुंदर चूड़ियाँ बनाना था ।उसकी बनाई चूड़ियों की खपत भी बहुत थी। उस गाँव में तो सभी स्त्रियाँ उसकी बनाई हुई चूड़ियाँ पहनती नही थीं आस.पास के गाँवों के लोग भी उससे चूड़ियाँ ले ले जाते थे। परंतु वह कभी भी चूड़ियों को पैसों से बेचता न था। उसका अभी तक वस्तु .विनिमय का तरीका था और लोग अनाज के बदले उससे चूड़ियाँ ले जाते थे। बदलू स्वभाव से बहुत सीधा था । मैंने कभी भी उसे किसी से झगड़ते नहीं देखा । हाँ शादी .विवाह के अवसरों पर वह अवश्य ज़िद पकड़ जाता था । जीवन भर चा हे कोई उससे मुफ़्त चूड़ियाँ ले जाए ।

I. उसका पेशा क्या था ?

II. वस्तु.विनिमय का क्या अर्थ है ?

III. गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

4 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए.... 2*2 =4

I. पत्र जैसा संतोष फ़ोन या,स.एम.एस का संदेश क्यों नहीं दे सकता ?

II. लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफर नहीं करते।ष्लोगों ने यह सलाह क्यों दी ?

III. मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था।ष्लेखक पेड़ों को दुश्मन क्यों समझ रहा था ?

प्रश्न 5 काव्यांश के आधार पर प्रश्नोंत्तर लिखिए... 1*3=3

अभी न होगा मेरा अंत
अभी. अभी ही तो आया है
मेरे वन में मृदुल वसंत.
अभी न होगा मेरा अंत।
हरे-हरे ये पात
डालियाँ कलियाँ कोमल गात।
मै ही अपना स्वप्न मृदल कर
फेरुंगा निद्रित कलियों पर
जगा एक प्रत्युष मनोहर।

I. कवि और कविता का नाम लिखिए।

II. वसंत के आने पर पेड़ों में क्या परिवर्तन हो जाता है?

III. कवि कलियों को किसका संदेश देना चाहता है ?

6. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए.

I. कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए क्यों बताया है ?

II. कवि ने अपने आने को उल्लास और जाने को आँसू बनकर बह जाना क्यों कहा है ?

III. पक्षी और बादल द्वारा लाई गई चिठ्ठियों को कौन.कौन पढ़ पाते हैं ?

7.पूरक पाठ्य पुस्तक भारत की खोज के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए.. 2*2=4

I. भारत एक खोज इसके लेखक कौन है तथा इसमें कौन सी यात्रा का वर्णन किया गया है ?

II. अहमद्नगर के किले की जेल में नेहरू जी ने क्या काम शुरू किया था वहाँ की मिट्टी कैसी थी ?

III. प्राचीन सभ्यताओं के नाम लिखिए।

8. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 80-100 शब्दों में निबंध लिखिए 5

I. मोबाइल फोन के लाभ और हानियाँ

II. भारत देश

III. अपनी यात्रा के खट्टे.मीठ्ठे अनुभव

9. पत्र लेखन ..... कक्षा के अनुभाग को बदलने हेतु प्राचार्य जी को प्रार्थनारूपत्र 5.

अथवा

मित्र को अपने जन्मदिन पर आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए।

उत्तर- - माला

कक्षा आठवीं

विषय हिंदी

1 अपठित गद्यांश

1 अमीना का दिल कचोट रहा है । गाँव के बच्चे अपने.अपने बाप के साथ जा रहे हैं । हामिद का बाप अमीना के सिवा और कौन है उसे कैसे अकेले मेले में जाने दे। उसी भीड़.भाड़ में बच्चा कहीं खो जाए तो क्या हो ?

2 आठ आने

3 फहीमन के कपड़े सिए थे ।

2 व्याकरण संबंधी

1 संधि तीन प्रकार स्वरए व्यजंनए विसर्ग संधि

2. किसी व्यक्तिए वस्तुए स्थानए जाति तथा भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं जैसेकृरामए श्यामए पुस्तकए बुढ़ापा आदि ।

3 जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं उसे विशेषण कहते हैं ।

4 गुणवाचक

5. मूल शब्दक समाज़ प्रत्यय.इक

6. बेचकर खाकर

7 बस ! अब मैंने इस बस से यात्रा और नहीं करनी है।

8. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से यह जाना जाए कि क्रिया का उससे क्या संबंध है,उसे कारक कहते हैं ।

3 पठित गद्यांश

1 बदलू मनिहार था। चूड़ियाँ बनाना उसका पैतृक पेशा था ।

2 वस्तु के बदले वस्तु का लेन.देन ।

3. पाठ..लाख की चूड़ियाँ और लेखक कामतानाथ ।

4 प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर- - ...

1-पत्रों में आत्मीयता ,प्रेम तथा गहरा लगाव समाया रहता है ।एस.एम.,स में नहीं । 2. पत्र संभाल कर रख सकते हैं,स.एम.एस नहीं ।

2. इस बस का कोई भरोसा नहीं था ।

3 टक्कराने के भय से

5 पठित काव्यांश के आधार पर प्रश्नोंत्तर

1 कविता . ध्वनि कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

2 चारों तरफ हरियाली छा जाती है ।

3 वसंत का

उत्तर- - 6 क्योंकि ये भगवान के दिए हुए संदेश को लोगों तक पहुँचाते हैं इस लिए कवि ने इन्हें भगवान के डाकिए कहा है ।

उत्तर- - जब कवि लोगों से मिलता है तो ख़ुशी बांटता है और बिछुड़ने पर दुखी होता है इस लिए कवि ने आने को उल्लास और जाने को आंसू बन कर बह जाना कहा है ।

उत्तर- - पेड़ पौंधे नदियाँ और पहाड़ ।

उत्तर- - 7 लेखक जवाहर लाल नेहरु, और यात्रा भारत की ।

उत्तर- - बागवानी का काम, मिटटी उपजाऊ थी ।

उत्तर- - सिन्धु घाटी सभ्यता मोहन जोदड़ो सभ्यता

उत्तर- - .8 अनुच्छेद लेखन.

प्रस्तावना 1 विषय वस्तु 2 निष्कर्ष 1 भाषा 1

9 पत्र लेखन

शुरुआत 1 मध्यस्थ 1 समाप्ति 1 भाषा 1

द्वितीय सामायिक परीक्षा

2018.2019 .

कक्षा आठवीं

विषय हिंदी पूर्णांक 40

1 निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर व समझकर प्रश्नों के उत्तर- - लिखिए 4

आधुनिक जीवनकृशैली और गलत खान .पान के तौर.तरीके के आज हृदय रोग केवल प्रौढ़ों तथा अधेड़ों का रोग नहीं रह गया है । बल्कि नौजवान भी बड़ी संख्या में इस रोग का शिकार हो रहे हैं । हृदय रोग या दिल के दौरे के कारण लाखों लोग प्रतिवर्ष मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं । इसका मुख्य कारण रक्त धमनियों में रक्त की रुकावट होता है और समय रहते इसका पता नहीं चल पाता। रक्त धमनियों में रुकावट का समय रहते पता लगाने की तकनीक के विकास से इस रोग पर अंकुश लगाने का मार्ग प्रशस्त हुआ है ।

1 हृदय रोग का क्या कारण है ? 1

2 हृदय रोग पर अंकुश कैसे लगाया जा सकता है ? 1

3 नौजवान हृदय रोग के शिकार किस कारण बन रहे हैं ? 2

2 निर्देशानुसार कीजिए 8

I. निम्न शब्दों के विलोम शब्द लिखिए श्वेत, शीत 1

II. अतिशयोक्ति अलंकार को परिभाषित कीजिए । 1

III. निम्न शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए ...सूरज 1

IV. निम्नलिखित मुहावरें का अर्थ लिखिएरू..दुम दबाकर भागना 1

V. कामयाबी शब्द में से मूल शब्द व प्रत्यय अलग कीजिए । 1

VI. 'अनु' उपसर्ग की सहायता से नया शब्द लिखिए । 1

VII. अतिशयोक्ति अलंकार का उदाहरण लिखिए। 1

VIII. इस मुहावरें को वाक्य में प्रयोग कीजिएरू..मारा.मारा फिरना । 1

3 निम्नलिखित पठित गद्यांश को पढ़कर व समझकर प्रश्नों के सही उत्तर लिखिए. 3.

सारा घर धूल से अट गया। खाँसते-खाँसते सब बेदम हो गए। सारी धूल जो दरी पर थी जो फ़र्श पर थी सबके सिरों पर जम गई । नाकों और आँखों में घुस गई। बुरा हाल हो गया सबका। हम लोगों को तुरंत आँगन से निकाला गया। वहाँ हम लोगों ने फौरन झाड़ू देने का फैसला किया।

झाड़ू क्योंकि एक थी और तनख्वाह लेने वाले उम्मीदवाद बहुत ,इसलिए क्षण .भर में पुर्जे उड़ गए । जितनी सींकें जिसके हाथ पड़ी वह उनसे ही उल्टे.सीधे हाथ मारने लगा ।

I. सारे घर में धूल भर जाने का क्या कारण था ? 1.

II. बच्चों ने कहाँ झाड़ू लगाने का फैसला किया ? 1.

III. झाड़ू के पुर्जे किस कारण उड़े ? 1.

4 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए

I. जब पहली बोलती फिल्म प्रदर्शित हुई तो उसके पोस्टरों पर कौन से वाक्य छापे गए ?

II. साइकिल आंदोलन से पुडुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में कौन.कौन से बदलाव आए हैं ?

III. बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध कहाँ से किया था ?

प्रश्न 5 पठित काव्यांश के आधार पर प्रश्नोंत्तर लिखिए.....

तेरैं लाल मेरौ माखन खायौ ।
दुपहर दिवस जानि घर सूनो, ढूँढ़ि-ढँढ़ोरि आपही आयौ ।
खोलि किवारि, पैठि मंदिर मैं, दूध, दही सब सखनि खवायौ ।
ऊखल चढ़िए सींके कौ लीन्हौ, अनभावत भुइँ मैं ढरकायौ ।
दिन प्रति हानि होति गोरस की । यह ढोटा कौनैं ढँग लायौ।
सूर स्याम कौं हटकि राखै तैं ही पूत अनोखौ जायौ ।

I. गोपियाँ यशोदा के पास क्यों आई थीं ?

II. श्रीकृष्ण जी कबए किसके घर गए और क्यों ?

III. गोपी ने श्रीकृष्ण की शिकायत किस प्रकार की?

6. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए...2*2=4

I. सुदामा की दीनदशा देखकर श्री कृष्ण की मनोदशा हुई ?

II. बालक श्रीकृष्ण किस लोभ के कारण दूध पीने के लिए तैयार हुए ?

III. श्रीकृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्या.क्या सोच रहे थे ?

7. पूरक पाठ्यपुस्तक भारत एक खोज के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए-

I. सती प्रथा क्या थी? इस प्रथा पर किस समाज़ सुधारक ने रोक लगवाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई ?

II. भारत छोड़ो आंदोलन के बारे में लिखिए ।

III. सन् 1857 की क्रांति के बारे में बताइए ।

8 निम्नलिखित में से किसी एक पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए- 5

I. इंटरनेट लाभ व हानियां

II. वर्षा ऋतु

III. समाचार पत्रों का महत्त्व

9. अपने प्राचार्य को हिंदी विषय की अतिरिक्त कक्षा का आयोजन करवाने के लिए प्रार्थना पत्र ।- 5

अथवा

अपने मित्र को शीतकालीन अवकाश में अपने घर पर बुलवाने के लिए पत्र लिखिए ।

उत्तर माला **कक्षा आठवीं** **विषय हिंदी**

1 अपठित गद्यांश

1 आधुनिक जीवनकृशैली और गलत खान.पान के तौर.तरीके

2 रक्त धमनियों में रुकावट का समय रहते पता लगाने की तकनीक के विकास से इस रोग पर अंकुश लगाने का मार्ग प्रशस्त हुआ है ।

3 आधुनिक जीवनकृशैली और गलत खान .पान के तौर.तरीके के आज हृदय रोग केवल प्रौढ़ों तथा अधेड़ों का रोग नहीं रह गया है । बल्कि नौजवान भी बड़ी संख्या में इस रोग का शिकार हो रहे हैं ।

2 व्याकरण संबंधी

1 श्याम व ग्रीष्म

2 काव्य में जब किसी बात को बढ़ा.चढ़ाकर कहा जाए उसे अतिशोक्ति अलंकार कहा जाता है ।

3 रवि, दिनकर

4 डर के भगना

5 मूल शब्द . कामयाब प्रत्यय ई

6. अनुसार,अनुशरण

7. पानी परात को हाथ छुयो नहिं नैनन के जल सों पग धोए

8 मोहन रुपयों के लिए मारा. मारा फिर रहा है ।

3 पठित गद्यांश

1. बच्चों द्वारा घर की सफ़ाई करना ।

2.आँगन में ।

3. क्योंकि झाड़ू एक थी और तनख्वाह लेने वाले उम्मीदवार बहुत,इसलिए क्षणभर में पुर्जे उड़ गए ।

4 प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर- - ...

1 जब बोलती फिल्म प्रदर्शित हुई तो उसके पोस्टरों पर छपा था ...वेसभी सजीव हैं, साँस ले रहे हैं, शतप्रतिशत बोल रहे हैं, अठहत्तर मुर्दा इंसान जिंदा हो गए, उनको बोलते, बातें करते देखो ।

2. साइकिल आंदोलन से पुडुकोट्टई की महिलाओं में आत्मसम्मान की भावना जागृत हुईए वे .ढ़िवादिता तथा पुरुषों द्वारा थोपे गए दायरे से बाहर निकल सके । साइकिल के उपयोग से महिलाएँ समय बचा कर अपने घरेलू काम के साथ दूसरे गाँव में अपना सामान बेचने लगी ।उनके लिए साइकिल आज़ादी का प्रतीक थी ।

3 बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध पत्नी के संदुक से रात को चोरी करके किया ।

5 पठित काव्यांश के आधार पर प्रश्नोत्तर

1 गोपियाँ याशोदा के पास श्रीकृष्ण की शिकायत करने के लिए आई थीं ।

2. श्रीकृष्ण गोपियों के दोपहर में दूध, दही और मक्खन की चोरी करने गए ।

3. गोपियों ने श्रीकृष्ण की शिकायत तेरा लाल हमारा माक्खन खा जाता है,जिससे हमें गोरस की हानि हो रही है ।

6 प्रश्नोत्तर

1 सुदामा की दीनदशा देखकर दीनदयाल श्रीकृष्ण स्वयं रो पड़े ।

2. श्रीकृष्ण ऐसा चोटी के लम्बी होने के लालच में करते थे ।

3 मेरी चोटी कब लंबी होगी ।

7 पूरक पाठ्यपुस्तक ष्भारतएकखोज के आधार पर..

1 सती प्रथा में महिला अपने पति की मृत्यु पर उसके साथ ही जल कर मर जाती थी ।

2 1942 मे भारतीय द्वारा अंग्रेज़ों को भारत से बाहर निकालने हेतु व्या पक स्तर पर आंदोलन चला । 8अगस्त 1942 ष्भारत छोड़ो आंदोलन के प्रस्ताव पर विचार किया गया ।

3 सन्1857 की क्रांति पहली बार भारतीयों द्वारा आज़ादी के लिए किया गया प्रयास था ।

8 निबंध लेखन.

प्रस्तावना 1 विषय वस्तु 2 निष्कर्ष 1 भाषा 1

9 पत्र लेखन

शुरुआत 1 मध्यस्थ 2 समाप्ति1 भाषा 1

अर्द्ध वार्षिक परीक्षा

2018-2019

कक्षा आठवीं

विषय हिंदी पूर्णांक 80

1 प्रश्न .निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर व समझकर प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 4.

मनुष्य उत्सव प्रिय होते हैं उत्सवों का , मात्र उद्देश्य आनंद प्राप्ति है। यह तो सभी जानते हैं कि मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए आजीवन प्रयत्न करता रहता है आवश्यकता की पूर्ति होने पर सभी को सुख होता है पर उस सुखी और उत्सव के इस आनंद में बड़ा अंतर है आवश्यकता अभाव सूचित करती हैप् उसे यह प्रकट होता है कि इसमें किसी बात की कमी है। मनुष्य जीवन ही ऐसा है कि वह किसी भी अवस्था में यह अनुभव नहीं कर सकता कि आप उसके लिए कोई आवश्यकता नहीं रह गई है एक के बाद दूसरी की चिंता उसे सताती ही रहती है इसलिए किसी एक आवश्यकता की पूर्ति से उसे जो सुख होता है वह अत्यंत क्षणिक होता है क्योंकि तुरंत ही दूसरी आवश्यकता उपस्थित हो जाती है। उत्सव में हम किसी बात की आवश्यकता का अनुभव हैं करते यही नहीं उस दिन हम अपने कामकाज छोड़कर विशुद्धानंद की प्राप्ति करते हैं । यह आनंद जीवन का आनंद है काम का नहीं कर्तव्य बाहर की उपेक्षा कर देते हैं तथा गौरव और सम्मान को भूल जाते हैं। जिस दिन हमने उच्छश्रृंखलता आ जाती है उस रोज हमारी दिनचर्या बिल्कुल नष्ट हो जाती है व्यर्थ घूमकर व्यर्थ खा पीकर हम लोग अपने मन में यह अनुभव करते हैं कि हम लोग सच्चा आनंद पा रहे हैं

1 आवश्यकताएँ पूरी होने पर भी खत्म नहीं होती क्यों ? 1

2 उत्सव मनाते हुए हमारा उद्देश्य क्या होता है ? 1

3 आवश्यकता क्या सूचित करती है ?

4 क्षणिक व उच्छश्रृंखलता में लगा प्रत्यय लिखिए । 2

5 हम सच्चा आनंद कैसे प्राप्त करते है ? 2

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए

मत काटो तुम यह पेड़ है यह लज्जावासन
इस मां वसुंधरा के इस संहार के बाद
अशोक की तरह सचमुच तुम बहुत पछताओगे
बोलो फिर किसकी गोद में सिर छुपाओगे
शीतल छाया फिर कहाँ से पाओगे
कहाँ से पाओगे फिर फल
कहाँ से मिलेगा
शस्य श्यामलता को सींचने वाला जल
रेगिस्तानों में तब्दील हो जाएंगे खेत
बरसेंगे कहाँ से घुमक्कड़ बादल
थके हुए मुसाफिर
पाएँगे कहाँ से श्रमहारी छाया

I. कवि ने किस के संहार की बात कही है? 1.

II. अशोक को क्यों पश्चाताप हुआ था ? 1.

III. गोद में मुंह छुपाने से क्या तात्पर्य है तथा अशोक ने किस की गोद में मुंह छुपाया था ? 2.

IV. वृक्ष काटने से क्या. क्या परिणाम होते हैं ? 2

प्रश्न 3 निर्देशानुसार कीजिए 12.

I. निम्न शब्दों के विलोम शब्द लिखिए अंदर, स्वतंत्र 1

II. अतिशोक्ति अलंकार को परिभाषित कीजिए । 1

III. निम्न शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए ...कमल 1

IV. निन्मलिखित मुहावरें का अर्थ लिखिएरू..आँखे बिछाना 1

V. दुकानदार शब्द में से मूल शब्द व प्रत्यय अलग कीजिए । 1

VI. बे उपसर्ग की सहायता से नया शब्द लिखिए। 1

VII. अतिशोक्ति अलंकार का उदाहरण लिखिए। 1

VIII. इस मुहावरें को वाक्य में प्रयोग कीजिएरू.. नौ दो ग्यारह होना। 1

IX. जातिवाचक संज्ञा के दो उदाहरण लिखिए । 1

X. विद्यालय और जगदीश शब्द की संन्धि.विच्छेद कीजिए । 1

XI. कर्म शब्द का तदभव क्या है ? 1

XII. वचन परिवर्तन कीजिए.... बच्चे और नदी 1

4. निम्नलिखित पठित गद्यांश को पढ़कर व समझकर प्रश्नों के सही उत्तर लिखिए..

5. बस की रफ़्तार अब पन्द्रह.बीस मील की हो गई थी। मुझे उसके किसी हिस्से पर भरोसा नहीं था। ब्रेक फेल हो सकता है । स्टीयरिंग टूट सकता है। दोनों तरफ हरे .भरे पेड़ थे जिन पर पक्षी बैठे थे। मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था। जो भी पेड़ आताए डर लगता कि इससे बस टकराएगी। वह निकल जाता तो दूसरे का इंतज़ार करता। झी ल दिखती तो सोचता कि इसमें बस गोता लगा जाएगी। श्

I. लेखक को किस पर भरोसा नहीं था ? 1

II. झील देखकर लेखक को क्या लगने लगता ? 2

III. किसी पेड़ के आने पर लेखक को कैसा लगता ? 2

5 पढ़े गए पाठों के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए 2*6 =12

I. मशीनी युग ने लोगों के हाथ कैसे काट दिए ?

II. मशीनी युग से बदलू के जीवन में क्या बदलाव आया ?

III. पत्र धरोहर हो सकते हैं लेकिन, स.एम.एस क्यों नहीं ? तर्क सहित अपना उत्तर लिखिए ।

IV. दोषों का पर्दाफ़ाश करना कब बुरारूप लेता है ?

V. आपके सपनों का भारत कैसा होना चाहिए ?

VI. बदलू कौन था और उसका पैतृक पेशा क्या था ?

6. काव्यांश के आधार पर प्रश्नोंत्तर लिखिए.....

भिखमंगों की दुनिया में,
स्वछंद लुटाकर प्यार चले
हम एक निसानी.सी उर पर ले असफलता का भार चले।
अब अपना और पराया क्या ?
आबाद रहें रुकनेवाले!

हम स्वयं बंधे थे और स्वयं
हम अपने बंधन तोड़ चले।

I. कविता तथा कवि का नाम लिखिए । 1
II. कवि दुनिया में प्यार किस प्रकार लुटाकर जा रहा है? 2
III. कवि के मन में लोगों के लिए क्या कामना है ? 2

7. पढ़ी गई कविताओं के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए.. 5*2=10

I. ध्वनि कविता से हमें क्या संदेश मिलता है ?
II. हमारे जीवन में डाकिए की क्या भूमिका है ?
III. चिड़िया चोंच में तिनका दबाकर उड़ने की तैयारी में क्यों है वह तिनके का क्या करती होगी ?
IV. कबीर ने घास की निंदा करने से क्यों मना किया है ?
V. तलवार का महत्त्व होता है म्यान का नहीं ,इस उदाहरण से कबीर क्या कहना चाहते है ?

8.जीवन में आदर्शवादी मूल्यों को अपनाना बहुत आवश्यक है क्या निराश हुआ जाए पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए । 4.

9 पूरक पाठ्यपुस्तक भारत एक खोज के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर-लिखिए. 3 *2=6

I. भारतीय संस्कृति की क्या विशेषता है ?
II. भारत के दो प्रमुख महाकाव्य का नाम लिखिए ।
III. कालीदास कौन थे ? उनकी दो रचनाओं के नाम लिखिए ।
IV. संस्कृत भाषा को जीवंत भाषा क्यों कहा जाता है ?

10 निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए 8

I. पर्यावरण संरक्षण
II. मेरी अविस्मरणीय यात्रा
III. विद्यार्थी जीवन
IV. गणतंत्र दिवस

11 विद्यालय में पानी की व्यवस्था ठीक नहीं है । जिसके कारण छात्रों को असुविधा होती है । विद्यालय में पीने के पानी की सुविधा के लिए प्राचार्य को प्रार्थनारूपत्र लिखिए । 5

अथवा

अपनी बड़ी बहन के विवाह में सम्मिलित होने के लिए किसी दूर के शहर में रहनेवाले अपने मित्र को निमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए।

अर्द्ध वार्षिक परीक्षा

उत्तर माला

सन 2018.19

कक्षाआठवीं

विषय हिंदी

प्र.1 अपठित गद्यांश

1 क्योंकि दूसरी आवश्यकता जग जाती है ।

2 उत्सवों का,कमात्र उद्देश्य आनंद प्राप्ति है।

3 अभाव

4 इक तथा ता

5 जिस दिन हमने उच्छृंखलता आ जाती है उस रोज हमारी दिनचर्या बिल्कुल नष्ट हो जाती है व्यर्थ घूमकर व्यर्थ खा पीकर हम लोग अपने मन में यह अनुभव करते हैं कि हम लोग सच्चा आनंद पा रहे हैं

प्र 2 .अपठित काव्यांश

1 मां वसुन्धरा के

2 लज्जावासन के कारण

3 शर्म के कारण, अशोक ने वसुधा में मुंह छिपाया ।

4 छाया नहीं होगी, बारिश नहीं होगी, धरती रेगिस्तान में बदल जायेगी आदि ।

प्र 3 व्याकरण

1 बाहर,परतंत्र

2 काव्य में जब किसी बात को बढ़ा.चढ़ाकर कहा जाए उसे अतिशोक्ति अलंकार कहा जाता है ।

3 कमल...जलज, पंकज, नीरज

4 मुहावर....आदर सत्कार करना

5 दुकान और दार

6 ..बेशर्म,बेकार

7 पानी परात को हाथ छुयो नहिं नैनन के जल सों पग धोए

8 पुलिस को देखकर चोर नौ दो ग्यारह हो गया ।

9 पुस्तक, पशु

10. विद्याआलय और जगतईश

11. कर्म ...काम

12 बच्चा और नदियाँ

4 पठित गद्यांश

1 बस के किसी भी हिस्से पर

2 झील देखकर लेखक सोचता कि इसमें बस गोता लगा जाएगी।

3 किसी पेड़ के आने पर लेखक को डर लगता कि इससे बस टकराएगी

प्र 5 सटीक उत्तर देने पर पूर्ण अंक दें

1 हाथ से किए जानेवाले उद्योग.धंधे को बंद करके मशीनी युग ने लोगों के हाथ काट दिए ।

2 मशीनी युग से बदलू ने लाख की चूड़ियाँ बनाना बंद कर दिया और हमें शा प्रसन्नचित रहने वाला बदलू मन ही मन दुखी रहने लगा ।

3. पत्र को धरोहर कह सकते हैं क्योंकि उन्हें सहेजकर रखा जा सकता है जब कि ,स.एम.एस भलेरूप में हो लेकिन हम उन्हें लिखितरूप में संभालकर नहीं रख सकते ।

4ण्दोषों का पर्दाफ़ाश करना तब बुरारूप ले लेता है जब गल्त लोगों के दोषों को उभारा जाए तो वे लोग उग्ररूप ले लेते हैं या समाज़ में आतंक फैला देते हैं ।

5 विद्यार्थी स्वयं अपनी कल्पना के आधार पर करें ।

6. बदलू मनिहार था उस का पैतृक पेशा लाख की चूड़ियाँ बनाना था ।

प्र 6 पठित काव्यांश

1 कविता दीवनों की हस्ती और कवि...भगवतीचरण वर्मा

2 कवि दुनिया में प्यार को स्वच्छ्दं के साथ लुटाकर जा रहा है ।

3 कवि के मन में दूसरों को आबाद करने कामना है ।

प्र 7 सटीक उत्तर देने पर पूर्ण अंक दें ।

1 ध्वनि कविता से हमें यह संदेश मिलता है कि जिस प्रकार वसंत ऋतु के आगमन से सारी सृष्टि खिल कर मनमोहक बन जाती है उ सी प्रकार हमें भी अपने अच्छे कामों से समाज़ए राष्ट्र तथा विश्व को सुंदर बनाना चाहिए।

2. विद्यार्थी स्वयं अपनी कल्पना के आधार पर करें ।

3. विद्यार्थी स्वयं अपनी कल्पना के आधार पर करें ।

4. यदि यह तिनका आँख में पड़ जाए तो यही छोटा सा तिनका बड़ा दुखदायक होता है ।

5. हमें उस वस्तु के विषय में जानकारी होनी चाहिए जिसका हमें प्रयोग करना है उसी प्रकार संतो की जाति छोड़कर ज्ञान की बाते पूछनी चाहिए ।

प्र. 8. विद्यार्थी स्वयं अपनी कल्पना के आधार पर करें ।

प्र. 9. भारत की खोज

1 विविधता में,कता

2 रामायण और महाभारत

3 संस्कृत के कवि व नाटककार, मेघदूत व अभिज्ञानशाकुंतलम

4 सभी भाषाओं की जननी व प्राचीनतम भाषा

10 निबंध लेखन.

प्रस्तावना 2 विषय वस्तु 4 निष्कर्ष1 भाषा1

11 पत्र लेखन

शुरुआत 1 मध्यस्थ 2 समाप्ति 1 भाषा1

सत्रांत परीक्षा 2018.19

कक्षा आठवीं

विषय हिंदी

कुल अंक 80 अवधि 3 घंटे

सामान्य निर्देश

क. इस प्रश्नपत्र में चार खण्ड हैं ।

ख. सभी खण्डों के प्रश्नों के उत्तर- - देना अनिवार्य है ।

प्र 1. अपठित गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 7.

आज से करीबएकहज़ार साल पहले की बात है उस ज़माने में आज के पटना शहर को पाटलिपुत्र कहते थे। बहुत बड़ा नगर थाए नगर में बहुत से बाग बगीचे थेए उनमें बडी तादाद में खिलने वाला फूलों के कारण इस नगर को कई लोग कुसुम पुर भी कहते थे । पाटलिपुत्र नगर नन्द मौर्य और गुप्त सम्राटों की राजधानी रही है । दूर दूर तक इस नगर की कीर्ति फैली हुई थी । राजधानी होने से देशभर के प्रतिष्ठित पंडित यहाँ,कत्र होते थे । प्रख्यात नालंदा विश्वविद्याल य भी पटना से ज्यादा दूर नहीं था। देश के ही नहीं, अन्य देशों के विद्यार्थी भी विशेष अध्ययन के लिया नालंदा और पाटलिपुत्र पहुँचते थे। उस समय पाटलिपुत्र नगर ज्योतिष के अध्ययन के लिए मशहूर था ।

1 गद्यांश में वर्णित नगर को कुसुमपुर क्यों कहा जाता था ? 2

2 इस नगर की प्रसिद्धि का क्या कारण था ? 2

3 नालंदा विश्वविद्यालय क्यों प्रसिद्ध था ? 1

4 पटना का प्राचीन नाम क्या था ? 1

5 श्तादादश् और श्प्रख्यातश् शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए । 1

प्र 2. अपठित पद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

सागर के उर पर नाच नाच करती हैं लहरें मधुर गान
जगती के मन को खींचए खींच
निज छवि के रस सींचए सींच
जल कन्याएँ भोली अजान
सागर के उर पर नाच.नाच करती हैं लहरें मधुरगान
प्रातः समीर से हो अधीर
छूकर पलरूपल उल्लसित तीर
कुसुमावली.सी पुलकित महान
सागर के उर पर नाच नाच करती है लहरें मधुर गान
संध्या से पाकर.चिर रंग
करती.सी शत सुर चाप भंग
हिलती नव तरु दल के समान
सागर के उर पर नाच नाच करती है लहरें मधुर गान

क. लहरें कैसी लग रही है और क्या कर रही हैं ? 2

ख लहरें किस प्रकार लोगों का मन अपनी ओर खींच रही हैं ? 2

ग लहरें अधीर होकर क्या काम करती हैं ? 1

घ कुसुमावलि शब्द का संधि विच्छेद करें । 1

ड़. लहरें किसके समान हिल रही हैं ? 1

प्र.3 निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर लिखिए.... 12

I. बे और आ उपसर्ग से दो-दो शब्द बनाइए ।

II. का व इक प्रत्यय से दो.दो शब्द बनाइए ।

III. चन्द्रमा पर्यायवाची शब्द लिखिए ।

IV. शीत और धरती का विलोम शब्द लिखिए ।

V. रेखांकित शब्दों के कारक भेद लिखिए ।

मीना चाकू से फल काटती है ।

VI. "सुख" शब्द से दो शब्द बनाइए ।

VII. मुहावरे का वाक्य में प्रयोग करें..

टोपी पहनाना ।

VIII. अतिशयोक्ति अलंकार का उदाहरण लिखिए ।

IX. "मिठाईवाला" शब्द में से मूल शब्द व प्रत्यय अलग कीजिए ।

X. भाववाचक संज्ञा के दो उदाहरण लिखिए ।

XI. "हस्त" शब्द का तदभव क्या है ?

XII. वचन परिवर्तन कीजिए.... हाथी और लड़का

प्र.4 गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए

आकाश की असीम शून्यता में क्या ऐसा आकर्षण छिपा है। जिसके लिए बाज ने अपने प्राण गँवा दिए? वह खुद तो मर गया लेकिन मेरे दिल का चैन अपने साथ ले गया। न जाने आकाश में क्या खज़ाना रखा है? एकबार तो मै भी वहाँ जाकर उसके रहस्य का पता लगाऊँगा चाहे कुछ देर के लिए ही हो । कम से कम उस आकाश का स्वाद तो चख लूँगा ।

1 गद्यांश की ये पंक्तिया कौन किस से कह रहा हे ? 1

2 बाज ने अपने प्राण किसलिए गँवा दिए थे ? 2

3 साँप के मन पर बाज की मृत्यु का क्या असर पड़ा ? 2

प्र 5 पढ़े गए पाठों के आधार पर प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए 2×6=12

1 गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुँदने क्यों जड़ दिए ?

2 "साईकिल आंदोलन" से पुदुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में कौन.कौन से बदलाव आए हैं ?

3 हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को पानी ने अपना पूर्वज क्यों कहा है ?

4 गजब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है। लेखक को यह सुनकर हैरानी क्यों हुई ?

5 मशीनी युग ने कितने हाथ काट दि ए हैं?इस वाक्य में लेखक ने किस व्यथा की ओर संकेत किया है?

6. सिनेमा ने बोलना सीखा इस वाक्य से आप क्या समझते हैं?

प्र 6 काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

मैया कबहि बढ़ैगी चोटी ?
किती बार मोहि दूध पियत भईए यह अजहूँ है छोटी ।
तू जो कहति बल की बेनी ज्योए ह्वै है लाँबी मोटी ।
काढट गुहत न्हवावत जैहै । नागिन सी भुई लोटी ।
काचौ दूध पियावत पचि पचि, देति न माखन रोटी ।
सूर चिरजीवौं दौउ भैयाए हरी ह्लधर की जोटी ।

1 कवि और कविता का नाम लिखिए। 1

2 कृष्ण माता यशोदा से क्या पूछ रहे हैं? 2

3 माता ने पुत्र कृष्ण को क्या बताया? 2

प्र7. पढ़ी गई कविताओं के आधार पर प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए.. 2×5=10

i. सुदामा की दीन दशा देखकर श्री कृष्णा की क्या मनो दशा हुई अपने शब्दों में लिखिए ।
ii. माखन चुराते और खाते समय श्री कृष्णा थोड़ा सा माखन गिरा क्यों देते थे ?
iii. भगवान के डाकिए कौन हैं और क्यों ?
iv. ध्वनि और दीवानों की हस्ती कविताओं के कवियों के नाम लिखिए ।
v. दीवानों की हस्ती कविता के आधार पर बताइए कि कवि ने अपने आने को "उल्लास" और जाने को आँसू बनकर बह जाना क्यों कहा है ?

प्र 8 पत्र लेखन की कला के लिए क्या-क्या प्रयास हुए है ? 4

प्र 9 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही तीन प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए.. 2×3=6

i. "वेद"शब्द से आप क्या समझते हैं?
ii. जवाहर लाल नेहरू को कौन से किले में कैद करके रखा गया तथा उन्होंने क्या.क्या काम किया?
iii. "गीता" का उपदेश सर्वप्रथम कहाँ और किसे दिया गया?
iv. दयानंद सरस्वती ने क्या संदेश दिया?

प्र 10 निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 80-100 शब्दों का अनुच्छेद लिखिए.. 8

क. मेरी अविस्मरणीय यात्रा
ख. मित्रता
ग. पानी का महत्व

प्र 11 अपने विद्यालय के प्राचार्य को विद्यालय छोड़ने का प्रमाण पत्र मांगते हुए प्रार्थना पत्र लिखिए। 5

अथवा

समय का महत्व बताते हुए छोटी बहन को पत्र लिखिए।

उत्तर- - माला

कक्षा आठवीं

विषय हिंदी

प्र.1 अपठित गद्यांश

1 पाटलिपुत्र नगर में बहुत से बाग बगीचे थे जिनमे बहुत सारे फूल खिलते रहते थेएइस कारण इसे कुसुमपुर भी कहा जाता था ।

2 पाटलिपुत्र नगर नन्द, मौर्या, और गुप्त सम्राट की राजधानी थी , जहाँ विद्वान,कत्र हुआ करते थे यही इसकी प्रसिद्धि का कारण था ।

3 नालंदा विश्वविद्यालय शिक्षा का प्रसि . केंद्र था जहाँ देश के ही नहीं अ न्य देशों के यात्री विशेष अध्ययन के लिए आया करते थे ।

4 पटना का प्राचीन नाम पाटलिपुत्र था ।

5	शब्द	पर्याय
	तादाद	संख्या
	प्रख्यात	प्रसिद्ध

प्र 2 अपठित काव्यांश

1 लहरें जल कन्याएँ लग रही है। जो सागर के वक्ष स्थल पर नाच रही हैं।

2 लहरें अपनी चंचलताएवं अनुपम सौंदर्य के कारण सभी के मन को अपनी ओर खींच लेती हैं।

3 लहरें अधीर होकर बार बार किनारों को छूती हैं।

4 हजारों नए कोमल पत्तों के समान।

प्र 3 व्याकरण

1 बेशक, बेनाम, आकंठ, आजन्म।

2 फ़िल्मकार, मूर्तिकार, दैनिक, नैतिक।

3 चाँद, शशि।

4 उष्ण, आकाश।

5 करण कारक।

6 सुखी, सुखद, सुखदायी, सुखहीन, सुखवीर।

7 कोई भी सार्थक वाक्य।

8 पानी परात को छुये नहीं नैनं के जल सो पग धौए।

9 मूल शब्द मिठाई और प्रत्यय वाला

10 भाववाचक संज्ञा...सुंदरता, ईमानदारी

11. हाथ

12 हाथी, लड़के

4 पठित गद्यांश

1 गद्यांश की यह पंक्तियाँ साँप अपने आप से कह रहा है।

2 बाज ने अपने प्राण आकाश के आकर्षण को पाने के लिए गवां दिए।

3 साँप ने आकाश में छिपे रहस्य को जानने की ठान ली।

प्र 5 सटीक उत्तर देने पर पूर्ण अंक दें

1. जब गवरइया ने दरजी ने यह यह कहा कि दह उस कपड़े की दो टोपियाँ सिल दे ।एकटोपी मज़दूरी केरूप में रख ले। इस प्रकार इतनी मज़दूरी से खुश होकर दरजी ने गवरइया की टोपी पर पाँच फूँदने जड़ दिए।

2. साइकिल आंदोलन से पुडुकोट्टई की महिलाओं में आत्मसम्मान की भावना जागृत हुईए वे .ढ़िवादिता तथा पुरुषों द्वारा थोपे गए दायरे से बाहर निकल सके । साइकिल के उपयोग से महिलाएँ समय बचा कर अपने घरेलू काम के साथ दूसरे गाँव में अपना सामान बेचने लगी ।उनके लिए साइकिल आज़ादी का प्रतीक थी ।

3. बूँद ने हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को अपना पूर्वज कहा क्योंकि जल के कण में इन दोनों का ही मिश्रण होता है ।

4. जब लेखक ने बस की हालत देखी तो उसे यह विश्वास नहीं था कि यह बस अपना सफ़र पूरा कर सकेगी । इसलिए लेखक ने बस के हिस्सेदार से पूछा कि यह बस चलती भी है !तो हिस्सेदार ने जवाब दिया कि यह बस अपने आप चलती है ।यह सुनकर लेखक को हैरानी हुई ।

5. इस पंक्ति के माध्यम से लेखक कहना चाहता है कि हाथ से होने वाले उद्योग . धंधे मशीनों द्वारा किए जाने लगे हैं ।इस कारण आज काफ़ी लोग या तो बेरोज़गार हो गए हैं या अपना पैतृक कार्य छोड़ दिया ।

6 सन् 1931 के पहले देश में जो फ़िल्में बनती थीं उनमें कलाकार अभि नय तो करते थे परंतु उनकी आवाज़ हमें सुनाई नहीं पड़ती थी । 1931 में ऐसी फ़िल्म प्रदर्शित हुई जिसमें कलाकारों की बातें , हँसना-रोना आदि सुनाई देने लगा। यह देखकर ऐसा लगा जैसे सिनेमा ने बोलना सीख लिया।

प्र 5 पठित काव्यांश

1. कवि सूरदास कविता सूरदास के पद

2 कि उनकी चोटी कब बड़ी होगी?

3 कि दूध पीने से उसकी चोटी लम्बी हो जाएगी।

प्र 7 सटीक उत्तर देने पर पूर्ण अंक दें।

1 सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण व्यथित हो वाले और दूसरों पर करुणा करने वाले दीनदयाल स्वयं रो पड़े।

2. श्रीकृष्ण ऐसा इसलिए करते थे कि मक्खन ऊँचाई पर टंगा होता था और श्रीकृष्ण बालक थे। जल्दी- जल्दी में मक्खन चुराते और साथिओं को खिलाते तो थोड़ा-बहुत बिखर जाता था।

3 कवि ने पछी और बादल भगवान के डाकिए माना है क्योंकि ये देशों की सीमा रेखाओं को नहीं मानते। भगवान का भाई-चारे का संदेश सभी को समान रूप से बाँटते हैं ।

4. ध्वनि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला दीवानों की हस्ती भगवतीचरण वर्मा

5. कवि का मानना है कि जब वे अपने भाई .बंधुओं से मिलते है तो सबके चेहरे पर खुशी छा जाती है और जब अचानक जाने की बात आती है तो वहीं खुशी आँसुओं में बदल जाती है ।

प्र. 8. पत्र.लेखन की कला को विकसित करने के लिए विद्यालय पाठ्यक्रम में पत्र लेखन को शामिल किया गया है । विश्व डाक संघ ने 16 वर्ष के कम आयु के बच्चे के लिए पत्र लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया है ताकि ये कला विकसित होती रहे।

प्र. 9. भारत की खोज

1 वेद शब्द की उत्पति विद् धातु से हुई है। जिसका अर्थ है जानना अर्थात् वेद का सीधा अर्थ है अपने समय के ज्ञान का संग्रह करना ।

2. जवाहरलाल नेहरु अहमदनगर के किले में कैद थे और वहाँ बा गवानी तथा लेखन का कार्य करते थे।

3. गीता का उपदेश सर्वप्रथम महाभारत के यु . के समय दिया गया औ र श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिया था।

4. दयानंद सरस्वती ने लोगो को वेदों की ओर लौटो का संदेश दिया।

10 निबंध लेखन.

प्रस्तावना 2 विषय वस्तु 4 निष्कर्ष 1 भाषा 1

11 पत्र लेखन

शुरुआत 1 मध्यस्थ 2 समाप्ति 1 भाषा 1